निर्गमन

मिस्र में याकूब का परिवार

1 याकूब (इस्राएल) ने अपने पुत्रों के साथ मिस्र की यात्रा की थी,
और हर एक पुत्र के साथ उसका अपना परिवार था। इस्राएल के
पुत्रों के नाम है: 2 रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, 3 इस्साकर, जबूलून,
बिन्यामीन, 4 दान, नप्ताली, गाद, आशेर। 5 याकूब के अपने वंश में
सत्तर लोग थे। उसके बारह पुत्रों में एक यूसुफ पहले से ही मिस्र में
था।
6 बाद में यूसुफ उसके भाई और उसकी पीढ़ी के सभी लोग मर
गए। 7 किन्तु इस्राएल के लोगों की बहुत सन्तानें थी, और उनकी
संख्या बढ़ती ही गई। ये लोग शक्तिशाली हो गए और इन्हीं लोगों
से मिस्र भर गया था।

इस्राएल के लोगों को कष्ट

8 तब एक नया राजा मिस्र पर शासन करने लगा। यह व्यक्ति
यूसुफ को नहीं जानता था। 9 इस राजा ने अपने लोगों से कहा,
"इस्राएल के लोगों को देखो, इनकी संख्या अत्याधिक है, और हम
लोगों से अधिक शक्तिशाली है। 10 हम लोगों को निश्चय ही इनके
बिरुद्ध योजना बनानी चाहिए। यदि हम लोग ऐसा नहीं करते तो हो
सकता है, कि कोई युद्ध छिड़े और इस्राएल के लोग हमारे शत्रुओं
का साथ देने लगे। तब वे हम लोगों को हरा सकते हैं और हम लोगों
के हाथों से निकल सकते हैं।"
11 मिस्र के लोग इस्राएल के लोगों का जीवन कठिन बनाना चाहते
थे। इसलिए उन्होंने इस्राएल के लोगों पर दास–स्वामी नियुक्त
किए। उन स्वामियों ने फ़िरौन के लिए पितोम और रामसेस नगरों
को बनाने के लिए इस्राएली लोगों को विवश किया। उन्होंने इन
नगरों में अन्न तथा अन्य चीज़ें इकट्ठी कीं।

12 मिस्री लोगों ने इस्राएल के लोगों को कठिन से कठिन काम
करने को विवश किया। किन्तु जितना अधिक काम करने के लिए
इस्राएली लोगों को विवश किया गया उनकी संख्या उतनी ही बढ़ती
चली गई और मिस्री लोग इस्राएली लोगों से अधिकाधिक भयभीत
होते गए। 13 इसलिए मिस्र के लोगों ने इस्राएली लोगों को और भी
अधिक कठिन काम करने को विवश किया।
14 मिस्री लोगों ने इस्राएली लोगों का जीवन दूभर कर दिया।
उन्होंने इस्राएली लोगों को ईंट—गारा बनाने का बहुत कड़ा काम
करने के लिए विवश किया। उन्होंने उन्हें खेतों में भी बहुत कड़ा
काम करने को विवश किया। वे जो कुछ करते थे उन्हें कठिन
परिश्रम के साथ करने को विवश किया।

यहोवा की अनुगामी धाइयाँ

15 वहाँ शिप्रा और पूआ नाम की दो धाइयाँ थीं। ये धाइयाँ
इस्राएली स्त्रियों के बच्चों का जन्म देने में सहायता करती थी। मिस्र
के राजा ने धाइयों से बातचीत की। 16 राजा ने कहा, "तुम हिब्रू*
स्त्रियों को बच्चा जनने में सहायता करती रहोगी। यदि लड़की पैदा
हो तो उसे जीवित रहने दो किन्तु यदि लड़का पैदा हो तो तुम लोग
उसे मार डालो।"
17 किन्तु धाइयों ने परमेश्वर पर विश्वास? किया। इसलिए उन्होंने
मिस्र के राजा के आदेश का पालन नहीं किया। उन्होंने सभी लड़कों
को जीवित रहने दिया।
18 मिस्र के राजा ने धाइयों को बुलाया और कहा, "तुम लोगों ने
ऐसा क्यों किया? तुम लोगों ने पुत्रों (लड़कों) को क्यों जीवित रहने
दिया?"
19 धाइयों ने फ़िरौन से कहा, "हिब्रू स्त्रियाँ मिस्री स्त्रियों से अधिक
बलवान हैं। उनकी सहायता के लिए हम लोगों के पहुँचने से पहले

---

* **1:16:** हिब्रू इस्राएल के लोग। इस नाम का अर्थ एवर के वंशज भी हो सकता है या फरात नदी के पूर्व के लोग। देखें उत्पत्ति 10:25-31.

ही वे बच्चों को जन्म दे देती हैं।” 20-21 परमेश्वर धाइयों पर कृपालु
था क्योंकि वे परमेश्वर से डरती थीं।
इसलिए परमेश्वर उनके लिए अच्छा रहा और उन्हें अपने परिवार
बनाने दिया और हिब्रू लोग अधिक बच्चे उत्पन्न करते रहे और वे
बहुत शक्तिशाली हो गए। 22 इसलिए फ़िरौन ने अपने सभी लोगों
को यह आदेश दिया, “जब कभी पुत्र पैदा हो तब तुम अवश्य ही
उसे नील नदी में फेंक दो। किन्तु सभी पुत्रियों को जीवित रहने दो।”

2

बालक मूसा

1 लेवी के परिवार का एक व्यक्ति वहाँ था। उसने लेवी के परिवार
की ही एक स्त्री से विवाह किया। 2 वह स्त्री गर्भवती हुई और उसने
एक पुत्र को जन्म दिया। माँ ने देखा कि बच्चा अत्याधिक सुन्दर है
और उसने उसे तीन महीने तक छिपाए रखा। 3 किन्तु तीन महीने
बाद माँ डरी कि बच्चा ढूँढ लिया जाएगा। तब वह मार डाला जाएगा,
क्योंकि वह लड़का है। इसलिए उसने एक टोकरी बनाई और उस
पर तारकोल का लेप इस प्रकार किया कि वह तैर सके। उसने
बच्चे को टोकरी में रख दिया। तब उसने टोकरी को नदी के किनारे
लम्बी घास में रख दिया। 4 बच्चे की बहन वहाँ रूकी और उसकी
रखवाली करती रही। वह देखना चाहती थी कि बच्चे के साथ क्या
घटित होगा।

5 उसी समय फ़िरौन की पुत्री नहाने के लिए नदी को गई। उसकी
सखियाँ नदी के किनारे टहल रही थी। उसने ऊँची घास में टोकरी
देखी। उसने अपनी दासियों में से एक को जाकर उसे लाने को कहा।
6 राजा की पुत्री ने टोकरी को खोला और लड़के को देखा। बच्चा रो
रहा था और उसे उस पर दया आ गई। उसने कहा, यह हिब्रू बच्चों
में से एक है।

7 बच्चे की बहन अभी तक छिपी थी। तब वह खड़ी हुई और
फ़िरौन की पुत्री से बोली, “क्या आप चाहती है कि मैं बच्चे की

देखभाल करने में आपकी सहायता के लिए एक हिब्रू स्त्री जाकर ढूँढ लाऊँ?।”

8 फ़िरौन की पुत्री ने कहा, “धन्यवाद हो।”

इसलिए लड़की गई और बच्चे की अपनी माँ को ढूँढ लाई।

9 फ़िरौन की पुत्री ने कहा, “इस बच्चे को ले जाओ और मेरे लिए इसे पालो। इस बच्चे को अपना दूध पिलाओ मैं तुम्हें वेतन दूँगी।”

सो उस स्त्री ने अपने बच्चे को ले लिया और उसका पालन पोषन
किया। 10 बच्चा बड़ा हुआ और कुछ समय बाद वह स्त्री उस बच्चे
को फ़िरौन की पुत्री के पास लाई। फ़िरौन की पुत्री ने अपने पुत्र के
रूप में उस बच्चे को अपना लिया। फ़िरौन की पुत्री ने उसका नाम
मूसा रखा। क्योंकि उसने उसे पानी से निकाला था।

मूसा अपने लोगों की सहायता करता है

11 मूसा बड़ा हुआ और युवक हो गया। उसने देखा कि उसके
हिब्रू लोग अत्यन्त कठिन काम करने के लिए विवश किए जा रहे
हैं। एक दिन मूसा ने एक मिस्री व्यक्ति द्वारा एक हिब्रू व्यक्ति को
पिटते देखा। 12 इसलिए मूसा ने चारों ओर नजर घुमाई और देखा
कि कोई देख नहीं रहा है। सो मूसा ने मिस्री को मार डाला और उसे
रेत में छिपा दिया।

13 अगले दिन मूसा ने दो हिब्रू व्यक्तियों को परस्पर लड़ते देखा। मूसा ने देखा कि एक व्यक्ति गलती पर था। मूसा ने उस आदमी से कहा, “तुम अपने पड़ोसी को क्यों मार रहे हो?”

14 उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “क्या किसी ने कहा है कि तुम हमारे शासक और न्यायाधीश बनो? नहीं। मुझे बताओ कि क्या तुम मुझे भी उसी प्रकार मार डालोगे जिस प्रकार तुमने कल* मिस्री को मार डाला?”

* **2:14:** कल यह शब्द प्राचीन यूनानी संस्करण से लिया गया है।

तब मूसा डरा। मूसा ने मन ही मन सोचा, “अब हर एक व्यक्ति जानता है कि मैंने क्या किया है?”

15 फ़िरौन ने सुना कि मूसा ने मिस्री की हत्या की है। मूसा ने जो कुछ किया फ़िरौन ने उसके बारे में सुना, इसलिए उसने मूसा को मार डालने का निश्चय किया। किन्तु मूसा फिरौन की पकड़ से निकल भागा।

मिद्यान में मूसा

मूसा मिद्यान देश में गया। उस प्रदेश में मूसा एक कुएँ के समीप
रूका। 16 द्यान में एक याजक था जिसकी सात पुत्रियाँ थीं। एक
दिन उसकी पुत्रियाँ अपने पिता की भेड़ों के लिए पानी लेने उसी
कुएँ पर गई। वे कठौती को पानी से भरने का प्रयत्न कर रही थीं।
17 किन्तु कुछ चरवाहों ने उन लड़कियों को भगा दिया और पानी
नहीं लेने दिया। इसलिए मूसा ने लड़कियों की सहायता की और
उनके जानवरों को पानी दिया।

18 तब वे अपने पिता रुएल के पास लौट गई। उनके पिता ने उनसे पूछा, “आज तुम लोग क्यों जल्दी घर चली आई?”

19 लड़कियों ने उत्तर दिया, “चरवाहों ने हम लोगों को भगाना चाहा। किन्तु एक मिस्री व्यक्ति ने हम लोगों की सहायता की। उसने हम लोगों के लिए पानी निकाला और हम लोगों के जानवरों को दिया।”

20 इसलिए रुएल ने अपनी पुत्रियों से कहा, “यह व्यक्ति कहाँ है? तुम लोगों ने उसे छोड़ा क्यों? उसे यहाँ बुलाओ और हम लोगों के साथ उसे भोजन करने दो।”

21 मूसा उस आदमी के साथ ठहरने से प्रसन्न हुआ। और उस
आदमी ने अपनी पुत्री सिप्पोरा को मूसा की पत्नी के रूप में उसे दे
दिया। 22 सिप्पोरा ने एक पुत्र को जन्म दिया। मूसा ने अपने पुत्र का
नाम गेर्शोम रखा। मूसा ने अपने पुत्र को यह नाम इसलिए दिया कि
वह उस देश में अजनबी था जो उसका अपना नहीं था।

परमेश्वर ने इस्राएल को सहायता देने का निश्चय किया

23 लम्बा समय बीता और मिस्र का राजा मर गया। इस्राएली लोगों
को जब भी कठिन परिश्रम करने के लिए विवश किया जाता था।
वे सहायता के लिए पुकारते थे। और परमेशवर ने उनकी पुकार
सुनी। 24 परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाएँ सुनीं और उस वाचा को याद
किया जो उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ की थी।
25 परमेश्वर ने इस्राएली लोगों के कष्टों को देखा और उसने सोचा
कि वे शीघ्र ही उनकी सहायता करेगा।

3

जलती हुई झाड़ी

1 मूसा के ससुर का नाम यित्रो था। यित्रो मिद्यान का याजक
था। मूसा यित्रो की भेड़ों का चरवाहा था। एक दिन मूसा भेड़ों को
मरुभूमि के पश्चिम की ओर ले गया। मूसा होरेब नाम के उस एक
पहाड़ को गया, जो परमेश्वर का पहाड़ था। 2 मूसा ने उस पहाड़ पर
यहोवा के दूत को एक जलती हुई झाड़ी में देखा। यह इस प्रकार
घटित हुआ।

मूसा ने एक झाड़ी को जलते हुए देखा जो भस्म नहीं हो रही थी।
3 इसलिए मूसा ने कहा कि मैं झाड़ी के निकट जाऊँगा और देखूँगा
कि बिना राख हुए कोई झाड़ी कैसे जलती रह सकती है।

4 यहोवा ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ रहा है। इसलिए
परमेश्वर ने झाड़ी से मूसा को पुकारा। उसने कहा, "मूसा, मूसा।"

और मूसा ने कहा, "हाँ, यहोवा।"

5 तब यहोवा ने कहा, "निकट मत आओ। अपनी जूतियाँ उतार
लो। तुम पवित्र भूमि पर खड़े हो। 6 मैं तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर
हूँ। मैं इब्राहीम का परमेश्वर इसहाक का परमेश्वर तथा याकूब का
परमेश्वर हूँ।"

मूसा ने अपना मूँह ढक लिया क्योंकि वह परमेश्वर को देखने से डरता था।

7 तब यहोवा ने कहा, "मैंने उन कष्टों को देखा है जिन्हें मिस्र में हमारे लोगों ने सहा है और मैंने उनका रोना भी सुना है जब मिस्री लोग उन्हें चोट पहुँचाते हैं। मैं उनकी पीड़ा के बारे में जानता हूँ।
8 मैं अब जाऊँगा और मिस्रियों से अपने लोगों को बचाऊँगा। मैं उन्हें उस देश से निकालूँगा और उन्हें मैं एक अच्छे देश में ले जाऊँगा जहाँ वे कष्टों से मुक्त हो सकेंगे। जो अनेक अच्छी चीजों से भरा पड़ा है।* उस प्रदेश में विभिन्न लोग रहते हैं। कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी हिब्बी और यबूसी।
9 मैंने इस्राएल के लोगों की पुकार सुनी है। मैंने देखा है कि मिस्रियों ने किस तरह उनके लिए जीवन को कठिन कर दिया है।
10 इसलिए अब मैं तुमको फ़िरौन के पास भेज रहा हूँ। जाओ! मेरे लोगों अर्थात् इस्राएल के लोगों को मिस्र से बाहर लाओ।"

11 किन्तु मूसा ने परमेश्वर से कहा, "मैं कोई महत्वपूर्ण आदमी नहीं हूँ। मैं ही वह व्यक्ति क्यों हूँ जो फ़िरौन के पास जाए और इस्राएल के लोगों को मिस्र के बाहर निकाल कर ले चले?"

12 परमेश्वर ने कहा, "क्योंकि मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुमको भेज रहा हूँ, यह प्रमाण होगा: लोगों को मिस्र के बाहर निकाल लाने के बाद तुम आओगे और इस पर्वत पर मेरी उपासना करोगे।"

13 तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, "किन्तु यदि मैं इस्राएल के लोगों के पास जाऊँगा और उनसे कहूँगा, 'तुम लोगों के पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम लोगों के पास भेजा है,' 'तब लोग पूछेंगे, उसका क्या नाम है?' मैं उनसे क्या कहूँगा?"

14 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "उनसे कहो, 'मैं जो हूँ सो हूँ।'† जब तुम इस्राएल के लोगों के पास जाओ, तो उनसे कहो, 'मैं हूँ'

* **3:8:** जो ... पड़ा है शाब्दिक, "वह प्रदेश जिसमें मधु और दूध की नदियाँ बहती हो।"
† **3:14:** मैं जो हूँ सो हूँ हिब्रू शब्द "यहवे (यहोवा) नाम की तरह है।"

जिसने मुझे तुम लोगों के पास भेजा है।" 15 परमेश्वर ने मूसा से यह
भी कहा, "लोगों से तुम जो कहोगे वह यह है कि: 'यहोवा तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर है। मेरा नाम सदा यहोवा रहेगा। इसी रूप में लोग आगे पीढ़ी दर पीढ़ी मुझे जानेंगे।' लोगों से कहो, 'यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।' "

16 "यहोवा ने यह भी कहा, 'जाओ और इस्राएल के बुजुर्गों (नेताओं) को इकट्ठा करो और उनसे कहो, तुम्हारे, पूर्वजों का परमेश्वर यहोवा, मेरे सामने प्रकट हुआ। इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर ने मुझसे बातें कीं।' यहोवा ने कहा है: 'मैंने तुम लोगों के बारे में सोचा है और उस सबके बारे में भी जो तुम लोगों
के साथ मिस्र में घटित हुआ है। 17 मैंने निश्चय किया है कि मिस्र
में तुम लोग जो कष्ट सह रहे हो उससे तुम्हें बारह निकालूँ। मैं तुम लोगों को उस देश में ले चलूँगा जो अनेक लोगों अर्थात् कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी का है। मैं तुम लोगों को ऐसे अच्छे देश को ले जाऊँगा जो बहुत अच्छी चीज़ों से भरा पूरा है।'

18 "बुज़ुर्ग (नेता) तुम्हारी बातें सुनेंगे और तब तुम और बुज़ुर्ग (नेता) मिस्र के राजा के पास जाओगे। तुम उससे कहोगे 'हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा है। हमारा परमेश्वर हम लोगों के पास आया था। उसने हम लोगों से तीन दिन तक मरूभूमि में यात्रा करने के लिए कहा है। वहाँ हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा को निश्चय ही बलियाँ चढ़ायेंगे।'

19 "किन्तु मैं जानता हूँ कि मिस्र का राजा तुम लोगों को जाने नहीं देगा। केवल एक महान शक्ति ही तुम लोगों को जाने देने के लिए
उसे विवश करेगी। 20 इसलिए मैं अपनी महान शक्ति का उपयोग
मिस्र के विरुद्ध करूँगा। मैं उस देश में चमत्कार होने दूँगा। जब
मैं ऐसा करूँगा तो वह तुम लोगों को जाने देगा। 21 और मैं मिस्री

लोगों को इस्राएली लोगों के प्रति कृपालु बनाऊँगा। इसलिए जब तुम लोग विदा होंगे तो वे तुम्हें भेंट देंगे।

22 "हर एक हिब्रू स्त्री अपने मिस्री पड़ोसी से तथा अपने घर में रहने वालों से मांगेगी और वे लोग उसे भेंट देंगे। तुम्हारे लोग भेंट में चाँदी, सोना और सुन्दर वस्त्र पाएंगे। जब तुम लोग मिस्र को छोड़ोगे तुम लोग उन भेंटों को अपने बच्चों को पहनाओगे। इस प्रकार तुम लोग मिस्रियों का धन ले आओगे।"

4

मूसा के लिए प्रमाण

1 तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, "किन्तु इस्राएल के लोग मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे जब मैं उनसे कहूँगा कि तूने मुझे भेजा है। वे कहेंगे, 'यहोवा ने तुमसे बातें नहीं कीं।' "

2 किन्तु परमेश्वर ने मूसा से कहा, "तुमने अपने हाथ में क्या ले रखा है?"

मूसा ने उत्तर दिया, "यह मेरी टहलने की लाठी है।"

3 तब परमेश्वर ने कहा, "अपनी लाठी को जमीन पर फेंको।"

इसलिए मूसा ने अपनी लाठी को जमीन पर फेंका और लाठी
एक साँप बन गया। मूसा डरा और इससे दूर भागा। 4 किन्तु यहोवा
ने मूसा से कहा, "आगे बढ़ो और साँप की पूँछ पकड़ लो।"

इसलिए मूसा आगे बढ़ा और उसने साँप की पूँछ पकड़ लिया।
जब मूसा ने ऐसा किया तो साँप फिर लाठी बन गया। 5 तब परमेश्वर
ने कहा, "अपनी लाठी का इसी प्रकार उपयोग करो और लोग विश्वास करेंगे कि तुमने यहोवा अर्थात् अपने पूर्वजों के परमेश्वर, इब्राहीम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर तथा याकूब के परमेश्वर को देखा है।"

6 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं तुमको दूसरा प्रमाण दूँगा। तुम अपने हाथ को अपने लबादे के अन्दर करो।"

इसलिए मूसा ने अपने लबादे को खोला और हाथ को अन्दर किया। तब मूसा ने अपने हाथ को लबादे से बाहर निकाला और वह बदला हुआ था। उसका हाथ बर्फ की तरह सफेद दागों से ढका था।

7 तब परमेश्वर ने कहा, "अब तुम अपना हाथ फिर लबादे के भीतर रखो।" इसलिए मूसा ने अपना हाथ अपने लबादे के भीतर फिर किया। तब मूसा ने अपना हाथ बाहर निकाला और उसका हाथ बदल गया था। अब उसका हाथ पहले की तरह ठीक हो गया था।

8 तब परमेश्वर ने कहा, "यदि लोग तुम्हारा विश्वास लाठी का उपयोग करने पर न करें, तो वे तुम पर तब विश्वास करेंगे जब तुम
इस चिन्ह को दिखाओगे। 9 यदि वे दोनों चीजों को दिखाने के बाद
भी विश्वास न करें तो तुम नील नदी से कुछ पानी लेना। पानी को ज़मीन पर गिराना शुरु करना और ज्योही यह ज़मीन को छूएगा, खून बन जाएगा।"

10 किन्तु मूसा ने यहोवा से कहा, "किन्तु हे यहोवा, मैं सच कहता हूँ मैं कुशल वक्ता नहीं हूँ। मैं लोगों से कुशलतापूर्वक बात करने के योग्य नहीं हुआ और अब तुझ से बातचीत करने के बाद भी मैं कुशल वक्ता नहीं हूँ। तू जानता हैं कि मैं धीरे—धीरे बोलता हूँ* और उत्तम शब्दों का उपयोग नहीं करता।"

11 तब यहोवा ने उससे कहा, "मनुष्य का मुँह किसने बनाया? और एक व्यक्ति को कौन बोलने और सुनने में असमर्थ बना सकता है? मनुष्य को कौन देखनेवाला और अन्धा बना सकता है? यह मैं हूँ
जो इन सभी चीजों को कर सकता हूँ। मैं यहोवा हूँ। 12 इसलिए
जाओ। जब तुम बोलोगे, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हें बोलने के लिए शब्द दूँगा।"

---

* **4:10:** मैं धीरे … हूँ या "मैं हकलाता हूँ और साफ़ नहीं बोलता।"

13 किन्तु मूसा ने कहा, “मेरे यहोवा, मैं दूसरे व्यक्ति को भेजने के
लिए प्रार्थना करता हूँ मुझे न भेज।”
14 यहोवा मूसा पर क्रुद्ध हुआ। यहोवा ने कहा, “मैं तुमको
सहायता के लिए एक व्यक्ति दूँगा। मैं तुम्हारे भाई हारून का उपयोग
करूँगा। वह कुशल वक्ता है। हारून पहले ही तुम्हारे पास आ रहा
था। वह तुमको देखकर बहुत प्रसन्न होगा। 15 वह तुम्हारे साथ
फ़िरौन के पास जाएगा। मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या कहना है।
तब तुम हारून को बताओगे। हारून फ़िरौन से कहने के लिए उचित
शब्द चुनेगा। 16 हारून ही तुम्हारे लिए लोगों से बात करेगा। तुम
उसके लिए महान राजा के रूप में रहोगे और वह तुम्हारा अधिकृत
वक्ता होगा।† 17 इसलिए जाओं और अपनी लाठी साथ ले जाओ।
अपनी लाठी और दूसरे चमत्कारों का उपयोग लोगों को यह दिखाने
के लिए करो कि मैं तुम्हारे साथ हूँ।”

मूसा मिस्र लौटता है

18 तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौटा। मूसा ने यित्रो से
कहा, “मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे मिस्र में अपने लोगों के
पास जाने दे। मैं यह देखना चाहता हूँ कि क्या वे अभी तक जीवित
हैं।”

यित्रो ने मूसा से कहा, “तुम शान्तिपूर्वक जा सकते हो।”

19 उस समय जब मूसा मिद्यान में ही था, परमेश्वर ने उससे कहा,
“इस समय तुम्हारे लिए मिस्र को जाना सुरक्षित है। जो व्यक्ति तुमको
मारना चाहते थे वे मर चुके हैं।” 20 इसलिए मूसा ने अपनी पत्नी और
अपने पुत्रों को लिया और उन्हें गधे पर बिठाया। तब मूसा ने मिस्र
देश की वापसी यात्रा की। मूसा उस लाठी को अपने साथ ले गया
जिसमें परमेश्वर की शक्ति थी।

† **4:16:** तुम्हारा ... होगा शाब्दिक, “वह तुम्हारी वाणी होगा, और तुम उसके परमेश्वर होगे।”

21 जिस समय मूसा मिस्र की वापसी यात्रा पर था, परमेश्वर उससे
बोला। परमेश्वर ने कहा, "जब तुम फ़िरौन से बात करो तो उन सभी
चमत्कारों को दिखाना। याद रखना जिन्हें दिखाने की शक्ति मैंने
तुम्हें दी है। किन्तु फ़िरौन को मैं बहुत हठी बना दूँगा। वह लोगों
को जाने नहीं देगा। 22 तब तुम फ़िरौन से कहना: 23 यहोवा कहता
है, 'इस्राएल मेरा पहलौठा पुत्र है और मैं तुम से कहता हूँ कि मेरे
पुत्र को जाने दो तथा मेरी उपासना करने दो। यदि तुम इस्राएल को
जाने से मना करते हो तो मैं तुम्हारे पहलौठे पुत्र को मार डालूँगा।' "

मूसा के पुत्र का खतना

24 मूसा मिस्र की अपनी यात्रा करता रहा। यात्रियों के लिए बने
एक स्थान पर वह सोने के लिए रूका। यहोवा इस स्थान पर मूसा
से मिला और उसे मार डालने को कोशिश की। 25 किन्तु सिप्पोरा
ने पत्थर का एक तेज़ चाकू लिया और अपने पुत्र का खतना किया।
उसने चमड़े को लिया और उसके पैर छुए। तब उसने मूसा से कहा,
"तुम मेरे खून बहाने वाले पति हो।" 26 सिप्पोरा ने यह इसलिए कहा
कि उसे अपने पुत्र का खतना करना पड़ा था। इसलिए परमेश्वर ने
मूसा को क्षमा किया और उसे मारा नहीं।

परमेश्वर के सामने मूसा और हारून

27 यहोवा ने हारून से बात की थी। यहोवा ने उससे कहा था,
"मरूभूमि में जाओ और मूसा से मिलो।" इसलिए हारून गया और
परमेश्वर के पहाड़ पर मूसा से मिला। जब हारून ने मूसा को देखा,
उसने उसे चूमा। 28 मूसा ने हारून को यहोवा द्वारा भेजे जाने का
कारण बताया और मूसा ने हारून को उन चमत्कारों और उन संकेतों
को भी समझाया जिन्हें उसे प्रमाण रूप में प्रदर्शित करना था। मूसा
ने हारून को वह सब कुछ बताया जो यहोवा ने कहा था।

29 इस प्रकार मूसा और हारून गए और उन्होंने इस्राएल के लोगों
के सभी बुजुर्गों (नेताओं) को इकट्ठा किया। 30 तब हारून ने लोगों

से कहा। उसने लोगों को वे सारी बातें बताई जो यहोवा ने मूसा से
कहीं थीं। तब मूसा ने सब लोगों को दिखाने के लिए सारे प्रमाणों को
करके दिखाया। 31 लोगों ने विश्वास किया कि परमेश्वर ने मूसा को
भेजा है। उन्होंने झुक कर प्रणाम किया और परमेश्वर की उपासना
की, क्योंकि वे जान गए कि परमेश्वर इस्राएल के लोगों की सहायता
करने आ गया है और उन्होंने परमेश्वर की इसलिए उपासना की
क्योंकि वे जान गए कि यहोवा ने उनके कष्टों को देखा है।

5

मूसा और हारून फ़िरौन के सामने

1 लोगों से बात करने के बाद मूसा और हारून फ़िरौन के पास
गए। उन्होंने कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मेरे लोगों
को मरुभूमि में जाने दें जिससे वे मेरे लिए उत्सव कर सके।' "

2 किन्तु फ़िरौन ने कहा, "यहोवा कौन है? मैं उसका आदेश क्यों
मानूँ? मैं इस्राएलियों को क्यों जाने दूँ? मैं उसे नहीं जानता जिसे
तुम यहोवा कहते हो। इसलिए मैं इस्राएलियों को जाने देने से मना
करता हूँ।"

3 तब हारून और मूसा ने कहा, "हिब्रूओं के परमेश्वर ने हम लोगों
को दर्शन दिया है। इसलिए हम लोग आपसे प्रार्थना करते है कि
आप हम लोगों को तीन दिन तक मरुभूमि में यात्रा करने दें। वहाँ
हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा को एक बलि चढ़ाएंगे। यदि हम
लोग ऐसा नहीं करेंगे तो वह क्रुद्ध हो जाएगा और हमें नष्ट कर देगा।
वह हम लोगों को रोग या तलवार से मार सकता है।"

4 किन्तु फ़िरौन ने उनसे कहा, "मूसा और हारून, तुम लोगों को
परेशान कर रहे हैं। तुम उन्हें काम करने से हटा रहे हो। उन दासों
को काम पर लौटने को कहो। 5 यहाँ बहुत से श्रमिक हैं तुम लोग
उन्हें अपना काम करने से रोक रहे हो।"

फ़िरौन द्वारा लोगों को दण्ड

6 ठीक उसी दिन फ़िरौन ने इस्राएल के लोगों के काम को और
अधिक कड़ा बनाने का आदेश दिया। फ़िरौन ने दास स्वामियों से
कहा, 7 "तुम ने लोगों को सदा भूसा दिया है जिसका उपयोग वे ईंट
बनाने में करते हैं। किन्तु अब उनसे कहो कि वे ईंटें बनाने के लिए
भूसा स्वयं जाकर इकट्ठा करें। 8 किन्तु वे संख्या में अब भी उतनी
ही ई टें बनाएं जितनी वे पहले बनाते थे। वे आलसी हो गए है।
यही कारण है कि वे जाने की माँग कर रहे हैं। उनके पास करने
के लिए काफी काम नहीं है इसलिए वे मुझसे माँग कर रहे हैं कि
मैं उन्हें उनके परमेश्वर को बलि चढ़ाने दूँ। 9 इसलिए इन लोगों से
अधिक कड़ा काम कराओ। इन्हें काम में लगाए रखो। तब उनके
पास इतना समय ही नहीं होगा कि वे मूसा की झूठी बातें सुनें।"

10 इसलिए मिस्री दास स्वामी और हिब्रू कार्य प्रबन्धक इस्राएल
के लोगों के पास गए और उन्होंने कहा, "फ़िरौन ने निर्णय किया है
कि वह तुम लोगों को तुम्हारी ईंटों के लिए तुम्हें भूसा नहीं देगा।
11 तुम लोगों को स्वयं जाना होगा और अपने लिए भूसा स्वयं इकट्ठा
करना होगा। इसलिए जाओ और भूसा जुटाओ। किन्तु तुम लोग
उतनी ही ईंटे बनाओ जितनी पहले बनाते थे।"

12 इस प्रकार हर एक आदमी मिस्र में भूसा खोजने के लिए चारों
ओर गया। 13 दास स्वामी लोगों को अधिक कड़ा काम करने के
लिए विवश करते रहे। वे लोगों को उतनी ही ईंटे बनाने के लिए
विवश करते रहे जितनी वे पहले बनाया करते थे। 14 मिस्री दास
स्वामियों ने हिब्रू कार्य—प्रबन्धक चुन रखे थे और उन्हें लोगों के
काम का उत्तरदायी बना रखा था। मिस्री दास स्वामी इन कार्य—
प्रबन्धकों को पीटते थे और उनसे कहते थे, "तुम उतनी ही ईंटे क्यों
नहीं बनाते जितनी पहले बना रहे थे। जब तुम यह काम पहले कर
सकते थे तो तुम इसे अब भी कर सकते हो।"

15 तब हिब्रू कार्य—प्रबन्धक फ़िरौन के पास गए। उन्होंने
शिकायत की और कहा, "आप अपने सेवकों के साथ ऐसा बरताव
क्यों कर रहे है? 16 आपने हम लोगों को भूसा नहीं दिया। किन्तु हम

लोगों को आदेश दिया गया कि उतनी ही ईंटे बनाएँ जितनी पहले बनती थीं और अब हम लोगों के स्वामी हमे पीटते हैं। ऐसा करने में आपके लोगों की ग़लती है।"

17 फ़िरौन ने उत्तर दिया, "तुम लोग आलसी हो। तुम लोग काम करना नहीं चाहते। यही कारण है कि तुम लोग माँग करते हो कि मैं तुम लोगों को जाने दूँ और यही कारण है कि तुम लोग यह स्थान
छोड़ना चाहते हो और यहोवा को बलि चढ़ाना चाहते हो। 18 अब
काम पर लौट जाओ। हम तुम लोगों को कोई भूसा नहीं देंगे। किन्तु तुम लोग उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाया करते थे।"

19 हिब्रू कार्य—प्रबन्धक समझ गए कि वे परेशानी में पड़ गए हैं। कार्य—प्रबन्धक जानते थे कि वे उतनी ईंटें नहीं बना सकते जितनी बीते समय में बनाते थे।

20 फिरौन से मिलने के बाद जा रहे थे, वे मूसा और हारून के पास
से निकले। मूसा और हारून उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। 21 इसलिए
उन्होंने मूसा और हारून से कहा, "तुम लोगों ने बुरा किया कि तुम ने फ़िरौन से हम लोगों को जाने देने के लिए कहा। यहोवा तुम को दण्ड दे क्योंकि तुम लोगों ने फ़िरौन और उसके प्रशासकों में हम लोगों के प्रति घृणा उत्पन्न की। तुम ने हम लोगों को मारने का एक बहाना उन्हें दिया है।"

मूसा की परमेश्वर से शिकायत

22 तब मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की और कहा, "हे स्वामी, तूने अपने लोगों के लिए यह बुरा काम क्यों किया है? तूने हमको यहाँ
क्यों भेजा है? 23 मैं फ़िरौन के पास गया और जो तूने कहने को
कहा उसे मैंने उससे कहा। किन्तु उस समय से वह लोगों के प्रति अधिक क्रूर हो गया। और तूने उनकी सहायता के लिए कुछ नहीं किया है।"

6

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अब तुम देखोगे कि फ़िरौन का मैं
क्या करता हूँ। मैं अपनी महान शक्ति का उपयोग उसके विरोध में
करूँगा और वह मेरे लोगों को जाने देगा। वह उन्हें छोड़ने के लिए
इतना अधिक आतुर होगा कि वह स्वयं उन्हें जाने के लिए विवश
करेगा।"
2 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, 3 "मैं यहोवा हूँ। मैं इब्राहीम,
इसहाक और याकूब के सामने प्रकट हुआ था। उन्होंने मुझे एल
सद्दायी (सर्वशक्तिमान परमेश्वर) कहा। मैंने उनको यह नहीं बताया
था कि मेरा नाम यहोवा (परमेश्वर) है। 4 मैंने उनके साथ एक
साक्षीपत्र बनाया मैंने उनको कनान प्रदेश देने का वचन दिया। वे
उस प्रदेश में रहते थे, किन्तु वह उनका अपना प्रदेश नहीं था। 5 अब
मैं इस्राएल के लोगों के कष्ट के बारे में जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि
वे मिस्र के दास है और मुझे अपना साक्षीपत्र याद है। 6 इसलिए
इस्राएल के लोगों से कहो कि मैं उनसे कहता हूँ, 'मैं यहोवा हूँ। मैं
तुम लोगों की रक्षा करूँगा। मैं तुम लोगों को स्वतन्त्र करूँगा। तुम
लोग मिस्रियों के दास नहीं रहोगे। मैं अपनी महान शक्ति का उपयोग
करूँगा और मिस्रियों को भयंकर दण्ड दूँगा। तब मैं तुम लोगों को
बचाऊँगा। 7 तुम लोग मेरे लोग होगे और मैं तुम लोगों का परमेश्वर।
मैं यहोवा तुम लोगों का परमेश्वर हूँ और जानोगे कि मैंने तुम लोगों
को मिस्र की दासता से मुक्त किया। 8 मैंने इब्राहीम, इसहाक और
याकूब से बड़ी प्रतिज्ञा की थी। मैंने उन्हें विशेष प्रदेश देने का वचन
दिया था। इसलिए मैं तुम लोगों को उस प्रदेश तक ले जाऊँगा। मैं
वह प्रदेश तुम लोगों को दूँगा। वह तुम लोगों का होगा। मैं यहोवा
हूँ।' "
9 इसलिए मूसा ने यह बात इस्राएल के लोगों को बताई। किन्तु
लोग इतना कठिन श्रम कर रहे थे कि वे मूसा के प्रति धीरज न रख
सके। उन्होंने उसकी बात नहीं सुनी।

10 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 11 “जाओ और फ़िरौन से कहो
कि वह इस्राएल के लोगों को इस देश से निश्चय ही जाने दे।”
12 किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, “इस्राएल के लोग मेरी बात सुनना
भी नहीं चाहते हैं इसलिए निश्चय ही फ़िरौन भी सुनना नहीं चाहेगा।
मैं बहुत खराब वक्ता हूँ।”*

13 किन्तु यहोवा ने मूसा और हारून से बातचीत की। परमेश्वर
ने उन्हें जाने और इस्राएल के लोगों से बातें करने का आदेश दिया
और यह भी आदेश दिया कि वे जाएँ और फ़िरौन से बातें करें।
परमेश्वर ने आदेश दिया कि वे इस्राएल के लोगों को मिस्र के बाहर
ले जाए।

इस्राएल के कुछ परिवार

14 इस्राएल के परिवारों के प्रमुख लोगों के नाम है:

इस्राएल के पहले पुत्र रूबेन के चार पुत्र थे। वे थे हनोक, पल्लु, हेस्रोन और कर्म्मी।
15 शिमोन के पुत्र थे: यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन सोहर और शाउल। (शाउल एक कनानी स्त्री का पुत्र था।)
16 लेवी एक सौ सैंतीस वर्ष जीवित रहा। लेवी के पुत्र थे गेर्शोन, कहात और मरारी।
17 गेर्शोन के दो पुत्र थे—लिबनी और शिमी।
18 कहात एक सौ तैंतीस वर्ष जीवित रहा। कहात के पुत्र थे अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल।
19 मरारी के पुत्र थे महली और मूशी।

ये सभी परिवार इस्राएल के पुत्र लेवी के थे।

* **6:12:** मैं बहुत खराव वक्ता हूँ या “मैं बोली से विदेशी सा लगता हूँ।” शाब्दिक, “मेरे ओंठ खतना रहित है।” यह एक अलंकार पूर्ण प्रयोग है।

20 अम्राम एक सौ सैंतीस वर्ष जीवित रहा। अम्राम ने अपने पिता की बहन योकेबेद से विवाह किया। अम्राम और योकेबेद ने हारून और मूसा को जन्म दिया।

21 यिसहार के पुत्र थे कोरह नेपग और जिक्री।

22 उज्जीएल के पुत्र थे मीशाएल एलसापान और सित्री।

23 हारून ने एलीशेबा से विवाह किया। (एलीशेबा अम्मीनादाब की पुत्री थी और नहशोन की बहन।) हारून और एलीशेबा ने नादाब, अबीहू, एलाजार, और ईतामार को जन्म दिया।

24 कोरह के पुत्र (अर्थात् कोरही थे) अस्सीर एलकाना और अबीआसाप।

25 हारून के पुत्र एलाजार ने पूतीएल की पुत्री से विवाह किया और उन्होंने पीनहास को जन्म दिया।

ये सभी लोग इस्राएल के पुत्र लेवी से थे।

26 इस प्रकार हारून और मूसा इसी परिवारासमूह से थे और ये
ही वे व्यक्ति है जिनसे परमेश्वर ने बातचीत की और कहा, "मेरे लोगों
को समूहों[†] में बाँटकर मिस्र से निकालो।" 27 हारून और मूसा ने ही
मिस्र के राजा फ़िरौन से बातचीत की। उन्होंने फ़िरौन से कहा कि
वह इस्राएल के लोगों को मिस्र से जाने दे।

यहोवा का मूसा को फिर बुलावा

28 मिस्र देश में परमेश्वर ने मूसा से बातचीत की। 29 उसने कहा,
"मैं यहोवा हूँ। मिस्र के राजा से वे सारी बातें कहो जो मैं तुमसे
कहता हूँ।"

30 किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, "मैं अच्छा वक्ता नहीं हूँ। राजा मेरी
बात नहीं सुनेगा।"

† **6:26:** समूहों या "टुकड़ियों।" यह सैनिक परिभाषिक शब्द है और इससे पता चलता है कि इस्राएल सेना के रूप में संगठित था।

7

1 यहोवा ने मूसा से कहा, “मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। फ़िरौन के लिए
तुम एक महान राजा* की तरह होगे और हारून तुम्हारा अधिकृत
वक्ता† होगा। 2 जो आदेश मैं दे रहा हूँ वह सब कुछ हारून से कहो।
तब वह वे बातें जो मैं कह रहा हूँ, फ़िरौन से कहेगा और फ़िरौन
इस्राएल के लोगों को इस देश से जाने देगा। 3 किन्तु मैं फ़िरौन को
हठी बनाऊँगा। वह उन बातों को नहीं मानेगा जो तुम कहोगे। तब मैं
मिस्र में बहुत से चमत्कार करूँगा। किन्तु वह फिर भी नहीं सुनेगा।
4 इसलिए तब मैं मिस्र को बुरी तरह दण्ड दूँगा और मैं अपने लोगों
को उस देश के बाहर ले चलूँगा। 5 तब मिस्र के लोग जानेंगे कि मैं
यहोवा हूँ। मैं उनके विरूद्ध हो जाऊँगा, और वे जानेंगे कि मैं यहोवा
हूँ। तब मैं अपने लोगों को उनके देश से बाहर ले जाऊँगा।”

6 मूसा और हारून ने उन बातों का पालन किया जिन्हें यहोवा ने
कहा था। 7 इस समय मूसा अस्सी वर्ष का था और हारून तिरासी
का।

मूसा की लाठी का साँप बनना

8 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 9 “फ़िरौन तुमसे तुम्हारी
शक्ति को प्रमाणित करने के लिए कहेगा। वह तुम्हें चमत्कार दिखाने
के लिए कहेगा। तुम हारून से उसकी लाठी जमीन पर फेंकने को
कहना। जिस समय फ़िरौन देख रहा होगा तभी लाठी साँप बन
जाएगी।”

10 इसलिए मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए और यहोवा की
आज्ञा का पालन किया। हारून ने अपनी लाठी नीचे फेंकी। फिरौन
और उसके अधिकारियों के देखते—देखते लाठी साँप बन गयी।
11 इसलिए फ़िरौन ने अपने गुणी पुरुषों और जादूगरों को बुलाया।
इन लोगों ने अपने रहस्य चातुर्य का उपयोग किया और वे भी हारून

* 7:1: महान राजा या “परमेश्वर।” † 7:1: वक्ता या “नबी।”

के समान कर सके। 12 उन्होंने अपनी लाठियाँ ज़मीन पर फेंकी और
वे साँप बन गई। किन्तु हारून की लाठी ने उनकी लाठियों को खा
डाला। 13 फ़िरौन ने फिर भी, लोगों का जाना मना कर दिया। यह
वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था। फिरौन ने मूसा और हारून
की बात सुनने से मना कर दिया।

पानी का ख़ून बनना

14 तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "फ़िरौन हठ पकड़े
हुए है। फिरौन लोगों को जाने से मना करता है। 15 सवेरे फ़िरौन
नदी पर जाएगा। उसके साथ नील नदी के किनारे—किनारे जाओ।
उस लाठी को अपने साथ ले लो जो साँप बनी थी। 16 उससे यह
कहो, 'हिब्रू लोगों के परमेश्वर यहोवा ने हमको तुम्हारे पास भेजा
है। यहोवा ने मुझे तुमसे यह कहने को कहा है, मेरे लोगों को मेरी
उपासना करने के लिए मरुभूमि में जाने दो। तुमने भी अब तक
यहोवा की बात पर कान नहीं दिया है। 17 इसलिए यहोवा कहता
है कि, मैं ऐसा करूँगा जिससे तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। जो मैं
अपने हाथ की इस लाठी को लेकर नील नदीं के पानी पर मारुँगा
और नील नदी ख़ून में बदल जाएगी। 18 तब नील नदी की मछलियाँ
मर जाएंगी और नदी से दुर्गन्ध आने लगेगी। और मिस्री लोग नदी
से पानी नहीं पी पाएँगे।' "

19 यहोवा ने मूसा को यह आदेश दिया, "हारून से कहो कि वह
नदियों, नहरों, झीलों तथा तालाबों सभी स्थानों पर जहाँ मिस्र के
लोग पानी एकत्र करते हैं, अपने हाथ की लाठी को बढ़ाए। जब
वह ऐसा करेगा तो सारा जल ख़ून में बदल जाएगा। सारा पानी,
यहाँ तक कि लकड़ी और पत्थर के घड़ों का पानी भी, ख़ून में
बदल जाएगा।"

20 इसलिए मूसा और हारून ने यहोवा का जैसा आदेश था, वैसा
किया। उसने लाठी को उठाया और नील नदी के पानी पर मारा।
उसने यह फ़िरौन और उसके अधिकारियों के सामने किया। फिर

नदी का सारा जल खून में बदल गया। 21 नदी में मछलियाँ मर गई
और नदी से दुर्गन्ध आने लगी। इसलिए मिस्री नदी से पानी नहीं पी
सकते थे। मिस्र में सर्वत्र खून था।

22 जादूगरों ने अपनी जादूगरी दिखाई और उन्होंने भी वैसा ही
किया। इसलिए फ़िरौन ने मूसा और हारून को सुनने से इन्कार कर
दिया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था। 23 फिरौन
मुड़ा और अपने घर चला गया। फ़िरौन ने, मूसा और हारून ने जो
कुछ किया, उसकी उपेक्षा की।

24 मिस्री नदी से पानी नहीं पी सकते थे। इसलिए पीने के पानी
के लिए उन्होंने नदी के चारों और कुएँ खोदे।

मेंढक

25 यहोवा द्वारा नील नदी के बदले जाने के बाद सात दिन बीत
गये।

8

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास जाओ और उससे
कहो को यहोवा यह कहता है, 'मेरे आदमियों को मेरी उपासना के
लिए जाने दो। 2 यदि फ़िरौन उनको जाने से रोकता है तो मैं मिस्र को
मेंढ़कों से भर दूँगा। 3 नील नदी मेढ़कों से भर जाएगी। वे नदी से
निकलेंगे और तुम्हारे घरों में घुसेंगे। वे तुम्हारे सोने के कमरों और
तुम्हारे बिछौनों में होंगे। मेढ़क तुम्हारे अधिकारियों के घरों में, रसोई
में और तुम्हारे पानी के घड़ों में होंगे। 4 मेंढ़क पूरी तरह तुम्हारे ऊपर,
तुम्हारे लोगों के ऊपर और तुम्हारे अधिकारियों के ऊपर होंगे।' "

5 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून से कहो कि वह अपने हाथ
की लाठी को नहरों, नदियों और झीलों के उपर उठाए और मेढ़क
बाहर निकलकर मिस्र देश में भर जाएँगें।"

6 तब हारून ने मिस्र देश में जहाँ भी जल था उसके ऊपर हाथ
उठाया और मेंढ़क पानी से बाहर आने आरम्भ हो गए और पूरे मिस्र
को ढक दिया।

7 जादूगरों ने भी वैसा ही किया। वे भी मिस्र देश में मेंढ़क ले
आए।

8 फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। फिरौन ने कहा, "यहोवा
से कहो कि वे मुझ पर तथा मेरे लोगों पर से मेढ़कों को हटाएं। तब
मैं लोगों को यहोवा के लिए बलि चढ़ाने को जाने दूँगा।"

9 मूसा ने फिरौन से कहा, "मुझे यह बताएँ कि आप कब चाहते
हैं कि मेंढ़क चले जाएँ। मैं आपके लिए, आपके लोगों के लिए तथा
आपके अधिकारियों के लिए प्रार्थना करूँगा। तब मेंढ़क आपको
और आपके घरों को छोड़ देंगे। मेंढ़क केवल नदी में रह जाएँगे।
आप कब चाहते है कि मेंढ़क चले जाएं?।"

10 फिरौन ने कहा, "कल।"

मूसा ने कहा, "जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगी। इस प्रकार आप
जान जाएंगे कि हमारे परमेश्वर यहोवा के समान कोई अन्य देवता
नहीं है। 11 मेंढ़क आपको, आपके घर को, आपके अधिकारियों को
और आपके लोगों को छोड़ देंगे। मेंढ़क केवल नदी में रह जाएंगे।"

12 मूसा और हारून फ़िरौन से विदा हुए। मूसा ने उन मेंढ़को के
लिए जिन्हें फ़िरौन के विरुद्ध यहोवा ने भेजा था, यहोवा को पुकारा।
13 और यहोवा ने वह किया जो मूसा ने कहा था। मेंढ़क घरों में, घर
के आँगनों में और खेतों में मर गए। 14 वे सड़ने लगे और पूरा देश
दुर्गन्ध से भर गया। 15 जब फ़िरौन ने देखा कि वे मेंढ़कों से मुक्त हो
गए है तो वह फिर हठी हो गया। फ़िरौन ने वैसा नहीं किया जैसा
मूसा और हारून ने उससे करने को कहा था। वह ठीक वैसा ही
हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

जूँएं

16 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून से कहो कि वह अपनी
लाठी उठाए और जमीन पर की धूल पर मारे। मिस्र में सर्वत्र धूल
जूँएं बन जाएंगी।"

17 उन्होंने यह किया। हारून ने अपने हाथ की लाठी को उठाया
और जमीन पर धूल में मारा मिस्र में सर्वत्र धूल जूँएं बन गई। जूँएं
जानवरों और आदमियों पर छाई रहीं। 18 जादूगरों ने अपने जादूओं
का उपयोग किया और वैसा ही करना चाहा। किन्तु जादूगर धूल
से जूँए न बना सके। जूएँ जानवरों और आदमियों पर छाई रहीं।

19 इसलिए जादूगरों ने फिरौन से कहा कि परमेश्वर की शक्ति ने
ही यह किया है। किन्तु फ़िरौन ने उनकी सुनने से इन्कार कर दिया।
यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

मक्खियाँ

20 यहोवा ने मूसा से कहा, "सवेरे उठो और फ़िरौन के पास
जाओ। फ़िरौन नदी पर जाएगा। उससे कहो कि यहोवा कह रहा है,
'मेरे लोगों को मेरी उपासना के लिए जाने दो। 21 यदि तुम मेरे लोगों
को नहीं जाने दोगे तो तुम्हारे घरों में मक्खियाँ आएँगी। मक्खियाँ
तुम्हारे और तुम्हारे अधिकारियों के ऊपर छा जाएंगी। मिस्र के
घर मक्खियों से भर जाएंगे। मक्खियाँ पूरी ज़मीन पर छा जाएंगी।
22 किन्तु मैं इस्राएल के लोगों के साथ वैसा ही बरताव नहीं करूँगा
जैसा मिस्री लोगों के साथ करुँगा। जहाँ गेशेन में मेरे लोग रहते हैं
वहाँ कोई मक्खी नहीं होगी। इस प्रकार तुम जानोगे कि मैं यहोवा,
इस देश में हूँ। 23 अतः मैं कल अपने लोगों के साथ तुम्हारे लोगों
से भिन्न बरताव करूँगा। यही मेरा प्रमाण होगा।' "

24 अतः यहोवा ने वही किया, उसने जो कहा झुण्ड की झुण्ड
मक्खियाँ मिस्र में आई। मक्खियाँ फ़िरौन के घर और उसके सभी
अधिकारियों के घर में भरी थीं। मक्खियाँ पूरे मिस्र देश में भरी थी।
मक्खियाँ देश को नष्ट कर रही थीं। 25 इसलिए फ़िरौन ने मूसा और
हारून को बुलाया। फ़िरौन ने कहा, "तुम लोग अपने परमेश्वर यहोवा
को इसी देश में बलियाँ भेंट करो।"

26 किन्तु मूसा ने कहा, "वैसा करना ठीक नहीं होगा। मिस्री
सोचते हैं कि हमारे परमेश्वर यहोवा को जानवरों को मार कर बलि
चढ़ाना एक भयंकर बात है। इसलिए यदि हम लोग यहाँ ऐसा करते
तो मिस्री हमें देखेंगे, वे हम लोगों पर पत्थर फेकेंगे और हमें मार
डालेंगे। 27 हम लोगों को तीन दिन तक मरुभूमि में जाने दो और हमें
अपने यहोवा परमेश्वर को बलि चढ़ाने दो। यही बात है जो यहोवा
ने हम लोगों से करने को कहा है।"
28 इसलिए फ़िरौन ने कहा, "मैं तुम लोगों को जाने दूँगा और
मरूभूमि में तुम लोगों के यहोवा परमेश्वर को बलियाँ भेंट करने
दूँगा। किन्तु तुम लोगों को ज्यादा दूर नहीं जाना होगा। अब तुम
जाओ और मेरे लिए प्रार्थना करो।"
29 मूसा ने कहा, "देखो, मैं जाऊँगा और यहोवा से प्रार्थना करूँगा
कि कल वे तुम से, तुम्हारे लोगों से और तुम्हारे अधिकारियों से
मक्खियों को हटा ले। किन्तु तुम लोग यहोवा को बलियाँ भेंट करने
से मत रोको।"
30 इसलिए मूसा फ़िरौन के पास से गया और यहोवा से प्रार्थना
की 31 और यहोवा ने यह किया जो मूसा ने कहा। यहोवा ने मक्खियों
को फ़िरौन, उसके अधिकारियों और उसके लोगों से हटा लिया।
कोई मक्खी नहीं रह गई। 32 किन्तु फ़िरौन फिर हठी हो गया और
उसने लोगों को नहीं जाने दिया।

9

खेतों के जानवरों को बीमारियाँ

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा फ़िरौन के पास जाओ और उससे
कहो, "हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मेरी उपासना
के लिए मेरे लोगों को जाने दो।' 2 यदि तुम उन्हें रोकते रहे और
उनका जाना मना करते रहे 3 तब यहोवा अपनी शक्ति का उपयोग
तुम्हारे खेत के जानवरों के विरुद्ध करेगा। यहोवा तुम्हारे सभी घोड़ों,
गधों, ऊँटो, गाय, बैल, बकरियों और भेड़ों को भयंकर बीमारियों का

शिकार बना देगा। 4 यहोवा इस्राएल के जानवरों के साथ मिस्र के
जानवरों से भिन्न बरताव करेगा। इस्राएल के लोगों का कोई जानवर
नहीं मरेगा। 5 यहोवा ने इसके घटित होने का समय निश्चित कर दिया
है। कल यहोवा इस देश में इसे घटित होने देगा।"
6 अगली सुबह मिस्र के सभी खेत के जानवर मर गए। किन्तु
इस्राएल के लोगों के जानवरों में से कोई नहीं मरा। 7 फ़िरौन ने
लोगों को यह देखने भेजा कि क्या इस्राएल के लोगों का कोई
जानवर मरा या इस्राएल के लोगों का कोई जानवर नहीं मरा था।
फ़िरौन हठ पकड़े रहा। उसने लोगों को नहीं जाने दिया।

फोड़े फुंसियाँ

8 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "अपनी अंजलियों में भट्टी
की राख भरो। और मूसा तुम फ़िरौन के सामने राख को हवा में
फेंका। 9 यह धूल बन जाएगी और पूरे मिस्र देश में फैल जाएगी।
जैसे ही धूल आदमी या जानवर पर मिस्र में पड़ेगी, चमड़े पर फोड़े
फुंसी (घाव) फूट निकलेंगे।"
10 इसलिए मूसा और हारून ने भट्टी से राख ली। तब वे गए और
फ़िरौन के सामने खड़े हो गए। उन्होंने राख को हवा में फेंका और
लोगों और जानवरों को फोड़े होने लगे। 11 जादूगर मूसा को ऐसा
करने से न रोक सके, क्योंकि जादूगरों को भी फोड़े हो गए थे। सारे
मिस्र में ऐसा ही हुआ। 12 किन्तु यहोवा ने फ़िरौन को हठी बनाए
रखा। इसलिए फ़िरौन ने मूसा और हारून को सुनने से मना कर
दिया। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

ओले

13 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "सवेरे उठो और फ़िरौन के पास
जाओ। उससे कहो कि हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मेरे
लोगों को मेरी उपासना के लिए जाने दो! 14 यदि तुम यह नहीं करोगे
तो मैं तुम्हें, तुम्हारे अधिकारियों और तुम्हारे लोगों के विरुद्ध पूरी
शक्ति का प्रयोग करुँगा। तब तुम जानोगे कि मेरे समान दुनिया में

अन्य कोई परमेश्वर नहीं है। 15 मैं अपनी शक्ति का प्रयोग कर सकता
हूँ तथा मैं ऐसी बीमारी फैला सकता हूँ जो तुम्हें और तुम्हारे लोगों को
धरती से समाप्त कर देगी। 16 किन्तु मैंने तुम्हें यहाँ किसी कारणवश
रखा है। मैंने तुम्हें यहाँ इसलिए रखा है कि तुम मेरी शक्ति को देख
सको। तब सारे संसार के लोग मेरे बारे में जान जाएंगे। 17 तुम अब
भी मेरे लोगों के विरुद्ध हो। तुम उन्हें स्वतन्त्रतापूर्वक नहीं जाने दे
रहे हो। 18 इसलिए कल मैं इसी समय भयंकर ओला बारिश उत्पन्न
करुँगा। जब से मिस्र राष्ट्र बना तब से मिस्र में ऐसी ओला बारिश
पहले कभी नहीं आई होगी। 19 अतः अपने जानवरों को सुरक्षित
जगह में रखना। जो कुछ तुम्हारा खेतों में हो उसे सुरक्षित स्थानों
में अवश्य रख लेना। क्यों? क्योंकि कोई भी व्यक्ति या जानवर जो
मैदानों में होगा, मारा जाएगा। जो कुछ तुम्हारे घरों के भीतर नहीं
रखा होगा उस सब पर ओले गिरेंगे।' "

20 फ़िरौन के कुछ अधिकारियों ने यहोवा के सन्देश पर ध्यान
दिया। उन लोगों ने जल्दी—जल्दी अपने जानवरों और दासों को घरों
में कर लिया। 21 किन्तु अन्य लोगों ने यहोवा के सन्देश की उपेक्षा
की। उन लोगों के वे दास और जानवर नष्ट हो गए तो बाहर मैदानों
में थे।

22 यहोवा ने मूसा से कहा, "अपनी भुजाएं हवा में उठाओ और
मिस्र पर ओले गिरने आरम्भ हो जाएंगे। ओले पूरे मिस्र के सभी
खेतों में लोगों, जानवरों और पेड़—पौधों पर गिरेंगे।"

23 अतः मूसा ने अपनी लाठी को हवा में उठाया और यहोवा ने
गर्जन और बिजलियां भेजी, तथा ज़मीन पर ओले बरसायें। ओले
पूरे मिस्र पर पड़े। 24 ओले पड़ रहे थे और ओलों के साथ बिजली
चमक रह थी। जब से मिस्र राष्ट्र बना था तब से मिस्र को हानि
पहुँचाने वाले ओले वृष्टि में यह सबसे भयंकर थे। 25 आँधी ने मिस्र
के खेतों में जो कुछ था उसे नष्ट कर दिया। ओलों ने आदमियों,
जानवरों और पेड़—पौधों को नष्ट कर दिया। ओले ने खेतों में सारे

पेड़ों को भी तोड़ दिया। 26 गेशेन प्रदेश ही, जहाँ इस्राएल के लोग
रहते थे, ऐसी जगह थी जहाँ ओले नहीं पड़े।
27 फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। फ़िरौन ने उनसे कहा,
"इस बार मैंने पाप किया है। यहोवा सच्चा है और मैं तथा मेरे लोग
दुष्ट हैं। 28 ओले और परमेश्वर की गरजती आवाज़े अत्याधिक हैं।
परमेश्वर से तूफान को रोकने को कहो। मैं तुम लोगों को जाने दूँगा।
तुम लोगों को यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।"
29 मूसा ने फ़िरौन से कहा, "जब मैं नगर को छोड़ूँगा तब मैं प्रार्थना
में अपनी भुजाओं को यहोवा के सामने उठाऊँगा और गर्जन तथा
ओले रूक जाएंगे। तब तुम जानोगे कि पृथ्वी यहोवा ही की है।
30 किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम और तुम्हारे अधिकारी अब भी यहोवा
से नहीं डरते हैं और न ही उसका सम्मान करते हैं।"
31 जूट में दाने पड़ चुके थे। और जौ पहले ही फट चुका था।
इसलिए ये फसले नष्ट हो गई। 32 गेहूँ और कठिया नामक गेहूँ अन्य
अन्नों से बाद में पकते हैं अतः ये फसलें नष्ट नहीं हुई थीं।
33 मूसा ने फिरौन को छोड़ा और नगर के बाहर गया। उसने
यहोवा के सामने अपनी भुजाएं फैलायी और गरज तथा ओले बन्द
हो गए। वर्षा भी धरती पर होनी बन्द हो गई।
34 जब फिरौन ने देखा कि वर्षा, ओले और गर्जन बन्द हो गए तो
उसने फिर गलत काम किया। वह और उसके अधिकारी फिर हठ
पकड़े रहे। 35 फ़िरौन ने इस्राएल के लोगों को स्वतन्त्रतापूर्वक जाने
से इन्कार कर दिया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने मूसा
से कहा था।

10

टिड्डियाँ

1 यहोवा ने मूसा से कहा, "फिरौन के यहाँ जाओ। मैंने उसे और
उसके अधिकारियों को हठी बना दिया है। मैंने यह इसलिए किया

है कि मैं उन्हें अपने शक्तिशाली चमत्कार दिखा सकूँ। 2 मैंने इसे
इसलिए भी किया कि तुम अपने पुत्र—पुत्रियों तथा पौत्र—पौत्रियों
से उन चमत्कारों और अद्‌भुत बातों को बता सको जो मैंने मिस्र में
किया है। तब तुम सभी जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।”

3 इसलिए मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए। उन्होंने उससे
कहा, “हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘तुम मेरे आदेशों का
पालन करने से कब तक इन्कार करोगे? मेरे लोगों को मेरी उपासना
करने के लिए जाने दो! 4 यदि तुम मेरे लोगों को जाने से मना करते
हो तो मैं कल तुम्हारे देश में टिड्डियों को लाऊँगा। 5 टिड्डियाँ पूरी
जमीन को ढक लेगी। टिड्डियों की संख्या इतनी अधिक होगी कि
तुम जमीन नहीं देख सकोगे। जो कोई चीज ओले भरी आँधी से
बच गई है उसे टिड्डियाँ खा जाएंगी। टिड्डियाँ मैदानों में पेड़ों की सारी
पत्तियाँ खा डालेंगी। 6 टिड्डियाँ तुम्हारे सभी घरों, तुम्हारे अधिकारियों
के सभी घरों और मिस्र के सभी घरों में भर जाएंगी। जितनी टिड्डियाँ
तुम्हारे बाप—दादों ने कभी देखीं होंगी उससे भी अधिक टिड्डियाँ
यहाँ होंगी। जब से लोग मिस्र में, रहने लगे तब से जब कभी जितनी
टिड्डियाँ हुईं होंगी उससे अधिक टिड्डियाँ होंगी।’ ” तब मूसा मुड़ा
और उसने फ़िरौन को छोड़ दिया।

7 फ़िरौन के अधिकारियों ने उससे पूछा, “हम लोग कब तक इन
लोगों के जाल में फँसे रहेंगे। लोगों को उनके परमेश्वर यहोवा की
उपासना करने जाने दें। यदि आप उन्हें नहीं जाने देंगे तो आपके
जानने से पहले मिस्र नष्ट हो जाएगा।”

8 अत: फ़िरौन के अधिकारियों ने मूसा और हारून को उसके
पास वापस बुलाने को कहा। फ़िरौन ने उनसे कहा, “जाओ और
अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो। किन्तु मुझे बताओ कि
सचमुच कौन—कौन जा रहा है?”

9 मूसा ने उत्तर दिया, “हमारे युवक और बूढ़े लोग जाएंगे और हम
लोग अपने साथ अपने पुत्रों और पुत्रियों, तथा भेड़ों और पशुओं को

भी ले जाएंगे। हम सभी जाएंगे क्योंकि यह हमारे लिए हम लोगों के यहोवा का त्यौहार है।”

10 फ़िरौन ने उनसे कहा, “इससे पहले कि मैं तुम्हे और तुम्हारे सभी बच्चों को मिस्र छोड़कर जाने दूँ यहोवा को वास्तव में तुम्हारे साथ होना होगा। देखो तुम लोग एक बहुत बुरी योजना बना रहे हो।
11 केवल पुरुष जा सकते हैं और यहोवा की उपासना कर सकते हैं। तुमने प्रारम्भ में यही माँग की थी। किन्तु तुम्हारे सारे लोग नहीं जा सकते।” तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को भेज दिया।

12 यहोवा ने मूसा से कहा, “मिस्र को भूमि के ऊपर अपना हाथ उठाओ और टिड्डियाँ आ जाएंगी। टिड्डियाँ मिस्र की सारी भूमि पर फैल जाएंगी। टिड्डियाँ ओलों से बचे सभी पेड़—पौधों को खा जाएंगी।”

13 मूसा ने अपनी लाठी को मिस्र देश के ऊपर उठाया और यहोवा ने पूर्व से प्रवल आँधी उठाई। आँधी उस पूरे दिन और रात चलती रही। जब सवेरा हुआ, आँधी ने मिस्र देश में टिड्डियों को ला दिया
था। 14 टिड्डियाँ मिस्र देश में उड़कर आई और भूमि पर बैठ गई। मिस्र में कभी जितनी टिड्डियाँ हुई थी उनसे अधिक टिड्डियाँ हुई और
उतनी संख्या में वहाँ टिड्डियाँ फिर कभी नहीं होंगी। 15 टिड्डियों ने
जमीन को ढक लिया और पूरे देश में अँधेरे छा गया। टिड्डियों ने उन सभी पौधों और पेड़ों के हर फल को, जो ओले से नष्ट नहीं हुआ था खा डाला। मिस्र में कहीं भी किसी पेड़ या पौधे पर कोई पत्ती नहीं रह गई।

16 फ़िरौन ने मूसा और हारून को जल्दी बुलवाया। फ़िरौन ने कहा, “मैंने तुम्हारे और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया
है। 17 इस समय मेरे पाप को अब क्षमा करो। अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करो कि इस ‘मृत्यु’ (टिड्डियों) को मुझ से दूर करे।”

18 मूसा फ़िरौन को छोड़ कर चला गया और उसने यहोवा से
प्रार्थना की। 19 इसलिए यहोवा ने हवा का रूख बदल दिया। यहोवा

ने पश्चिम से तेज़ आँधी उठाई और उसने टिड्डियों को दूर लाल सागर
में उड़ा दिया। एक भी टिड्डी मिस्र में नहीं बची। 20 किन्तु यहोवा ने
फ़िरौन को फिर हठी बनाया और फ़िरौन ने इस्राएल के लोगों को
जाने नहीं दिया।

अंधकार

21 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अपनी बाहों को आकाश में
ऊपर उठाओ और अंधकार मिस्र को ढक लेगा। यह अधंकार
इतना सघन होगा कि तुम मानो उसे महसूस कर सकोगे।"

22 अतः मूसा ने हवा में बाहें उठाई और घोर अन्धकार ने मिस्र
को ढक लिया। मिस्र में तीन दिन तक अधंकार रहा। 23 कोई भी
किसी अन्य को नहीं देख सकता था और तीन दिन तक कोई अपनी
जगह से नहीं उठ सका। किन्तु उन सभी जगहों पर जहाँ इस्राएल
के लोग रहते थे, प्रकाश था।

24 फ़िरौन ने मूसा को फिर बुलाया। फ़िरौन ने कहा, "जाओ और
यहोवा की उपासना करो! तुम अपने साथ अपने बच्चों को ले जा
सकते हो। केवल अपनी भेड़ें और पशु यहाँ छोड़ देना।"

25 मूसा ने कहा, "हम लोग केवल अपनी भेड़ें और पशु ही अपने
साथ नहीं ले जाएंगे बल्कि जब हम लोग जाएंगे तुम हम लोगों को
भेंट और बलि भी दोगे और हम लोग इन बलियों का अपने परमेश्वर
यहोवा की उपासना के रूप में प्रयोग करेंगे। 26 हम लोग अपने
जानवर अपने साथ अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना के लिए ले
जाएंगे। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा। अभी तक हम नहीं
जानते कि यहोवा की उपासना के लिए किन चीज़ों की सचमुच
आवश्यकता पड़ेगी। यह हम लोग तब जान सकेंगे जब हम लोग
वहाँ पहुँचेंगे जहाँ हम जा रहे हैं। अतः ये सभी चीज़ें अवश्य ही हम
अपने साथ ले जाएंगे।"

27 यहोवा ने फ़िरौन को फिर हठी बनाया। इसलिए फ़िरौन ने
उनको जाने से मना कर दिया। 28 तब फ़िरौन ने मूसा से कहा, "मुझ

से दूर हो जाओ। मैं नहीं चाहता कि तुम यहाँ फिर आओ! इसके
बाद यदि तुम मुझसे मिलने आओगे तो मारे जाओगे!"
29 तब मूसा ने फिरौन से कहा, "तुम जो कहते हो, सही है। मैं
तुमसे मिलने फिर कभी नहीं आऊँगा!"

11

पहलौठों की मृत्यु

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "फिरौन और मिस्र के विरुद्ध मैं
एक और विपत्ति लाऊँगा। इसके बाद वह तुम लोगों को मिस्र से
भेज देगा। वस्तुतः वह तुम लोगों को यह देश छोड़ने को विवश
करेगा। 2 तुम इस्राएल के लोगों को यह सन्देश अवश्य देना: 'तुम
सभी स्त्री और पुरुष अपने पड़ोसियों से चाँदी और सोने की बनी
चीजें माँगना। 3 यहोवा मिस्रियों को तुम लोगों पर कृपालु बनाएगा।
मिस्री लोग, यहाँ तक कि फ़िरौन के अधिकारी भी पहले से मूसा
को महान पुरुष समझते हैं।' "
4 मूसा ने लोगों से कहा, "यहोवा कहता है, 'आज आधी रात
के समय, मैं मिस्र से होकर गुजरूँगा, 5 और मिस्र का हर एक
पहलौठे पुत्र मिस्र के शासक फ़िरौन के पहलौठे पुत्र से लेकर चक्की
चलाने वाली दासी तक का पहलौठा पुत्र मर जाएगा। पहलौठे नर
जानवर भी मरेंगे। 6 मिस्र की समूची धरती पर रोना—पीटना मचेगा।
यह रोना—पीटना किसी भी गुजरे समय के रोने—पीटने से अधिक
बुरा होगा और यह भविष्य के किसी भी रोने—पीटने के समय से
अधिक बुरा होगा। 7 किन्तु इस्राएल के किसी व्यक्ति को कोई चोट
नहीं पहुँचेगी। यहाँ तक कि उन पर कोई कुत्ता तक नहीं भौंकेगा।
इस्राएल के लोगों के किसी व्यक्ति या किसी जानवर को कोई चोट
नहीं पहुँचेगी। इस प्रकार तुम लोग जानोगे कि मैंने मिस्रियों के साथ
इस्राएल वालों से भिन्न व्यवहार किया है। 8 तब ये सभी तुम लोगों

के दास मिस्री झुक कर मुझे प्रणाम करेंगे और मेरी उपासना करेंगे।
वे कहेंगे, “जाओ, और अपने सभी लोगों को अपने साथ ले जाओ।”
तब मैं फ़िरौन को क्रोध में छोड़ दूँगा।’ ”

9 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “फ़िरौन ने तुम्हारी बात नहीं सुनी।
क्यों? इसलिए कि मैं अपनी महान शक्ति मिस्र में दिखा सकूँ।”
10 यही कारण था कि मूसा और हारून ने फ़िरौन के सामने ये बड़े—
बड़े चमत्कार दिखाए। और यही कारण है कि यहोवा ने फ़िरौन
को इतना हठी बनाया कि उसने इस्राएल के लोगों को अपना देश
छोड़ने नहीं दिया।

12

फसह पर्व के निर्देश

1 मूसा और हारून जब मिस्र में ही थे, यहोवा ने उनसे कहा, 2 “यह
महीना तुम लोगों के लिए वर्ष का पहला महीना होगा। 3 इस्राएल
की पूरी जाति के लिए यह आदेश है: इस महीने के दसवें दिन हर
एक व्यक्ति अपने परिवार के लोगों के लिए एक मेमना अवश्य
प्राप्त करेगा। 4 यदि पूरा मेमना खा सकने वाले पर्याप्त आदमी अपने
परिवारों में न हों तो उस भोजन में सम्मिलित होने के लिए अपने कुछ
पड़ोसियों को निमन्त्रित करना चाहिए। खाने के लिए हर एक को
पर्याप्त मेमना होना चाहिए। 5 एक वर्ष का यह नर मेमना दोषरहित
होना चाहिए। यह जानवर या तो एक भेड़ का बच्चा हो सकता है
या बकरे का बच्चा। 6 तुम्हें इस जानवर को महीने के चौदहवें दिन
तक सावधानी के साथ रखना चाहिए। उस दिन इस्राएल जाति के
सभी लोग सन्ध्या काल में इन जानवरों को मारेंगे। 7 इन जानवरों
का खून तुम्हें इकट्ठा करना चाहिए। कुछ खून उन घरों के दरवाजों
की चौखटों के ऊपरी सिरे तथा दोनों पटों पर लगाना चाहिए जिन
घरों में लोग यह भोजन करें।

8 “इस रात को तुम मेमने को अवश्य भून लेना और उसका माँस
खा जाना। तुम्हें कड़वी जड़ी—बूटियों और अखमीरी रोटियाँ भी

खानी चाहिए। 9 तुम्हें मेमने को पानी में उबालना नहीं चाहिए। तुम्हें
पूरे मेमने को आग पर भूनना चाहिए। इस दशा में भी मेमने का सिर,
उसके पैर तथा उसका भीतरी भाग ठीक बना रहना चाहिए। 10 उसी
रात को तुम्हें सारा माँस अवश्य खा लेना चाहिए। यदि थोड़ा माँस
सबेरे तक बच जाये तो उसे आग में अवश्य ही जला देना चाहिए।
11 "जब तुम भोजन करो तो ऐसे वस्त्रों को पहनो जैसे तुम लोग
यात्रा पर जा रहे हो तुम लोगों के लबादे तुम्हारी पेटियों में कसे
होने चाहिए। तुम लोग अपने जूते पहने रहना और अपनी यात्रा की
छड़ी को अपने हाथों में रखना। तुम लोगों को शीघ्रता से भोजन कर
लेना चाहिए। क्यों? क्योंकि यह यहोवा का फसह है वह समय जब
यहोवा ने अपने लोगों की रक्षा की और उन्हें शीघ्रता से मिस्र के
बाहर ले गया।
12 "आज रात मैं मिस्र से होकर गुजरूँगा और मिस्र में प्रत्येक
पहलौठे पुत्र को मार डालूँगा। मैं सभी पहलौठे जानवरों और मनुष्यों
को मार डालूँगा। मैं मिस्र के सभी देवताओं को दण्ड दूँगा और दिखा
दूँगा कि मैं यहोवा हूँ। 13 किन्तु तुम लोगों के घरों पर लगा हुआ
खून एक विशेष चिन्ह होगा। जब मैं खून देखूँगा, तो तुम लोगों के
घरों को छोड़ता हुआ गुजर जाऊँगा।* मैं मिस्र के लोगों के लिए
हानिकारक चीज़ें उत्पन्न करूँगा। किन्तु उन बुरी बीमारियों में से
कोई भी तुम लोगों को हानि नहीं पहुँचाएगी।
14 "सो तुम लोग आज की इस रात को सदा याद रखोगे, तुम
लोगों के लिए यह एक विशेष पवित्र पर्व होगा। तुम्हारे वंशज सदा
इस पवित्र पर्व को यहोवा की भक्ति किया करेंगे। 15 इस पवित्र पर्व
पर तुम लोग अख़मीरी आटे की रोटियाँ सात दिनों तक खाओगे।
इस पवित्र पर्व के आने पर तुम लोग पहले दिन अपने घरों से सारे
ख़मीर को निकाल बाहर करोगे। इस पवित्र पर्व के पूरे सात दिन
तक किसी को भी ख़मीर नहीं खाना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति

* **12:13:** गुजर जाऊँगा या "रक्षा करुँगा।"

ख़मीर खाए तो उसे तुम इस्राएल के अन्य व्यक्तियों से निश्चय ही
अलग कर देना। 16 इस पवित्र पर्व के प्रथम और अन्तिम दिनों में
धर्म सभा होगी। इन दिनों तुम्हें कोई भी काम नहीं करना होगा। इन
दिनों केवल एक काम जो किया जा सकता, वह है अपना भोजन
तैयार करना। 17 तुम लोगों को अवश्य अख़मीरी रोटी का पवित्र
पर्व याद रखना होगा। क्यों? क्योंकि इस दिन ही मैंने तुम्हारे लोगों
के सभी वर्गो को मिस्र से निकाला। अतः तुम लोगों के सभी वंशजों
को यह दिन याद रखना ही होगा। यह नियम ऐसा है जो सदा रहेगा।
18 इसलिए प्रथम महीने निसन के चौदहवें दिन की सन्ध्या से तुम
लोग अख़मीरी रोटी खाना आरम्भ करोगे। उसी महीने के इक्कीसवें
दिन की सन्ध्या तक तुम ऐसी रोटी खाओगे। 19 सात दिन तक तुम
लोगों के घरों में कोई ख़मीर नहीं होना चाहिए। कोई भी व्यक्ति चाहे
वह इस्राएल का नागरिक हो या विदेशी, जो इस समय ख़मीर खाएगा
अन्य इस्राएलियों से अवश्य अलग कर दिया जाएगा। 20 इस पवित्र
पर्व में तुम लोगों को ख़मीर नहीं खाना चाहिए। तुम जहाँ भी रहो
अख़मीरी रोटी ही खाना।”

21 इसलिए मूसा ने सभी बुजुर्गों (नेताओं) को एक स्थान पर
बुलाया। मूसा ने उनसे कहा, “अपने परिवारों के लिए मेमने प्राप्त
करो। फसह पर्व के लिए मेमने को मारो। 22 जूफा† के गुच्छों को लो
और खून से भरे प्यालों में उन्हें डुबाओ। खून से चौखटों के दोनों पटों
और सिरों को रंग दो। कोई भी व्यक्ति सवेरा होने से पहले अपना
घर न छोड़े। 23 उस समय जब यहोवा पहलौठे सन्तानों को मारने के
लिए मिस्र से होकर जाएगा तो वह चौखट के दोनों पटों और सिरों
पर खून देखेगा, तब यहोवा उस घर की रक्षा करेगा। यहोवा नाश
करने वाले को तुम्हारे घरों के भीतर आने और तुम लोगों को चोट
नहीं पहुँचाने देगा। 24 तुम लोग इस आदेश को अवश्य याद रखना।
यह नियम तुम लोगों तथा तुम लोगों के वंशजों के निमित्त सदा के

† **12:22:** जूफा लगभग 3 फीट ऊँचे तनेवाला पौधा। इसकी पत्तियाँ और शाखाएं केशों की तरह होती हैं, जिससे उनका उपयोग कूची की तरह हो सके।

लिए है। 25 तुम लोगों को यह कार्य तब भी याद रखना होगा जब
तुम लोग उस देश में पहुँचोगे जो यहोवा तुम लोगों को देगा। 26 जब
तुम लोगों के बच्चे तुम से पूछेंगे, 'हम लोग यह त्योहार क्यों मनाते
हैं?' 27 तो तुम लोग कहोगे, 'यह फसह पर्व यहोवा की भक्ति के लिए
है। क्यों? क्योंकि जब हम लोग मिस्र में थे तब यहोवा इस्राएल के
घरों से होकर गुजरा था। यहोवा ने मिस्रियों को मार डाला, किन्तु
उसने हम लोगों के घरों में लोगों को बचाया।' "

इसलिए लोग अब यहोवा को झुककर प्रणाम करते है तथा
उपासना करते हैं। 28 यहोवा ने यह आदेश मूसा और हारून को
दिया था। इसलिए इस्राएल के लोगों ने वही किया जो यहोवा का
आदेश था।

29 आधी रात को यहोवा ने मिस्र के सभी पहलौठे पुत्रों, फ़िरौन
के पहलौठे पुत्र (जो मिस्र का शासक था) से लेकर बन्दीगृह में बैठे
कैदी के पुत्र तक सभी को मार डाला। पहलौठे जानवर भी मर गए।
30 मिस्र में उस रात को हर घर में कोई न कोई मरा। फ़िरौन, उसके
अधिकारी और मिस्र के सभी लोग ज़ोर से रोने चिल्लाने लगे।

इस्राएलियों द्वारा मिस्र को छोड़ना

31 इसलिए उस रात फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया।
फ़िरौन ने उनसे कहा, "तैयार हो जाओ और हमारे लोगों को छोड़
कर चले जाओ। तुम और तुम्हारे लोग वैसा ही कर सकते हैं जैसा
तुमने कहा है। जाओ और अपने यहोवा की उपासना करो। 32 और
तुम लोग जैसा तुमने कहा है कि तुम चाहते हो, अपनी भेड़ें और
मवेशी अपने साथ ले जा सकते हो, जाओ! और मुझे भी आशीष
दो!" 33 मिस्र के लोगों ने भी उनसे शीघ्रता से जाने के लिए कहा।
क्यों? क्योंकि उन्होंने कहा, "यदि तुम लोग नहीं जाते हो हम सभी
मर जाएंगे।"

34 इस्राएल के लोगों के पास इतना समय न रहा कि वे अपनी
रोटी में खमीर डालें। उन्होंने गुँधे आटे की परातों को अपने कपड़ों

में लपेटा और अपने कंधों पर रख कर ले गए। 35 तब इस्राएल
के लोगों ने वही किया जो मूसा ने करने को कहा। वे अपने मिस्री
पड़ोसियों के पास गए और उनसे वस्त्र तथा चाँदी और सोने की
बनी चीज़ें माँगी। 36 यहोवा ने मिस्रियों को इस्राएल के लोगों के प्रति
दयालु बना दिया। इसलिए उन्होंने अपना धन इस्राएल के लोगों को
दे दिया।

37 इस्राएल के लोग रमसिज से सुक्काम गए। वे लगभग छ: लाख‡
पुरुष थे। इसमें बच्चे सम्मिलित नहीं है। 38 उनके साथ अनेक भेड़ें,
गाय—बकरियाँ और अन्य पशुधन था। उनके साथ ऐसे अन्य लोग
भी यात्रा कर रहे थे। जो इस्राएली नहीं थे, किन्तु वे इस्राएल के लोगों
के साथ गए। 39 किन्तु लोगों को रोटी में खमीर डालने का समय
न मिला। और उन्होंने अपनी यात्रा के लिए कोई विशेष भोजन नहीं
बनाया। इसलिए उन्हें बिना खमीर के ही रोटियाँ बनानी पड़ीं।

40 इस्राएल के लोग मिस्र§ में चार सौ तीस वर्ष तक रहे। 41 चार
सौ तीस वर्ष बाद, ठीक उसी दिन, यहोवा की सारी सेना** ने मिस्र
से प्रस्थान किया। 42 वह विशेष रात है जब लोग याद करते हैं कि
यहोवा ने क्या किया। इस्राएल के सभी लोग उस रात को सदा याद
रखेंगे।

43 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "फसह पर्व के नियम ये
है: कोई विदेशी फसह पर्व में से नहीं खाएगा। 44 किन्तु यदि कोई
व्यक्ति दास को खरीदेगा और यदि उसका खतना करेगा तो वह
दास उस में से खा सकेगा। 45 किन्तु यदि कोई व्यक्ति केवल तुम
लोगों के देश में रहता है या किसी व्यक्ति को तुमम्हारे लिए मजदूरी
पर रखा गया है तो उस व्यक्ति को उस में से नहीं खाना चाहिए।
वह केवल इस्राएल के लोगों के लिए है।

‡ **12:37:** छ: लाख या "छ: सौ परिवारों के समूह" हिब्रू शब्द "सहस्र" उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ "परिवार के समूह" होता है। § **12:40:** मिस्र प्राचीन ग्रीक और समरीती अनुवादों में "मिस्र और कनान" है। इससे पता चलता है कि वे लगभग इब्राहीम के समय से वर्षो की गणना कर रहे थे, यूसुफ के समय से नहीं। देखें उत्पत्ति 15:12-16 और गलतियों 3:17. ** **12:41:** यहोवा की सारी सेना अर्थात् इस्राएल के लोग।

46 “प्रत्येक परिवार को घर के भीतर ही भोजन करना चाहिए।
कोई भी भोजन घर के बाहर नहीं ले जाना चाहिए। मेमने की किसी
हड्डी को न तोड़े। 47 पूरी इस्राएली जाति इस उत्सव को अवश्य
मनाए। 48 यदि कोई ऐसा व्यक्ति तुम लोगों के साथ रहता है जो
इस्राएल की जाति का सदस्य नहीं है किन्तु वह फसह पर्व में
सम्मिलित होना चाहता है तो उसका खतना अवश्य होना चाहिए।
तब वह इस्राएल के नागरिक के समान होगा, और वह भोजन में
भाग ले सकेगा। किन्तु यदि उस व्यक्ति का खतना नहीं हुआ हो तो
वह इस फसह पर्व के भोजन को नहीं खा सकता। 49 ये ही नियम हर
एक पर लागू होंगे। नियमों के लागू होने में इस बात को कोई महत्व
नहीं होगा कि वह व्यक्ति तुम्हारे देश का नागरिक है या विदेशी है।”

50 इसलिए इस्राएल के सभी लोगों ने उन आदेशों का पालन किया
जिन्हें यहोवा ने मूसा और हारून को दिया था। 51 इस प्रकार यहोवा
उसी दिन इस्राएल के सभी लोगों को मिस्र से बाहर ले गया। लोगों
ने समूहों में प्रस्थान किया।

13

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 2 “प्रत्येक पहलौठा इस्राएली
लड़का मुझे समर्पित होगा। हर एक स्त्री का पहलौठा नर बच्चा
मेरा ही होगा। तुम लोग हर एक नर पहलौठा जानवर को भी मुझे
समर्पित करना।”

3 मूसा ने लोगों से कहा, “इस दिन को याद रखो। तुम लोग मिस्र
में दास थे। किन्तु इस दिन यहोवा ने अपनी महान शक्ति का उपयोग
किया और तुम लोगों को स्वतन्त्र किया। तुम लोग खमीर के साथ
रोटी मत खाना। 4 आज के दिन आबीब के महीने में तुम लोग मिस्र
से प्रस्थान कर रहे हो। 5 यहोवा ने तुम लोगों के पूर्वजों से विशेष
प्रतिज्ञा की थी। यहोवा ने तुम लोगों को कनानी, हित्ती, एमोरी, हिब्बी
और यबूसी लोगों को धरती देने की प्रतिज्ञा की थी। यहोवा जब
तुम लोगों को उस सम्पन्न और सुन्दर देश में पहुँचा दे तब तुम लोग

इस दिन को अवश्य याद रखना। तुम लोग हर वर्ष के पहले महीने
में इस दिन को उपासना का विशेष दिन रखना।

6 “सात दिन तक तुम लोग वही रोटी खाना जिसमें ख़मीर न हो।
सातवें दिन एक बड़ी दावत होगी। यह दावत यहोवा के सम्मान
का सूचक होगी। 7 अत: सात दिन तक लोगों को ख़मीर के साथ
बनी रोटी खानी नहीं चाहिए। तुम्हारे प्रदेश में किसी भी जगह ख़मीर
की कोई रोटी नहीं होनी चाहिए। 8 इस दिन तुम को अपने बच्चों से
कहना चाहिए, ‘हम लोग यह दावत इसलिए कर रहे हैं कि यहोवा
ने मुझ को मिस्र से बाहर निकाला।’

9 “यह पवित्र दिन तुम लोगों को याद रखने में सहायता करेगा
अर्थात् तुम लोगों के हाथ पर बंधे धागे* का काम करेगा। यह पवित्र
दिन यहोवा के उपदेशों को याद करने में तुमको सहायता करेगा।
तुम्हें यह याद दिलाने में सहायता करेगा कि यहोवा ने तुम लोगों को
मिस्र से बाहर निकालने के लिए अपनी महान शक्ति का उपयोग
किया। 10 इसलिए हर वर्ष इस दिन को ठीक समय पर याद रखो।

11 “यहोवा तुम लोगों को उस देश में ले चलेगा जिसे तुम लोगों
को देने के लिए उसने प्रतिज्ञा की है। इस समय वहाँ कनानी लोग
रहते हैं। किन्तु यहोवा ने तुम से पहले तुम्हारे पूर्वजों से यह प्रतिज्ञा
की थी कि वह यह प्रदेश तुम लोगों को देगा। परमेश्वर जब यह प्रदेश
तुम को देगा उसके बाद 12 तुम लोग अपने हर एक पहलौठे पुत्र को
उसे समर्पित करना याद रखना और हर एक पहलौठा नर जानवर
यहोवा को अवश्य समर्पित होना चाहिए। 13 हर एक पहलौठा गधा
यहोवा से वापस खरीदा जा सकता है। तुम लोग उसके बदले मेमने
को अर्पित कर सकते हो और गधे को वापस ले सकते हो। यदि
तुम यहोवा से गधे को खरीदना नहीं चाहते तो इसे मार डालो। यह

* **13:9:** बंधे धागे शाब्दिक, “तुम्हारे हाथों पर एक चिन्ह, तुम्हारे ललाट पर एक प्रतीक।” यह उस विशेष चीज़ का संकेत कर सकता है जिसे यहूदी व्यक्ति अपनी भुजाओं और ललाट पर परमेश्वर के नियमों को याद दिलाने के लिए बाँधता है।

एक बलि होगी तुम उसकी गर्दन अवश्य तोड़ दो। हर एक पहलौठा
लड़का यहोवा से पुनः अवश्य खरीद लिया जाना चाहिए।
14 “भविष्य में तुम्हारे बच्चे पूछेंगे कि तुम यह क्यों करते हो? वे
कहेंगे, ‘इस सबका क्या मतलब है?’ और तुम उत्तर दोगे, ‘यहोवा
ने हम लोगों को मिस्र से बचाने के लिए महान शक्ति का उपयोग
किया। हम लोग वहाँ दास थे। किन्तु यहोवा ने हम लोगों को बाहर
निकाला और वह यहाँ लाया। 15 मिस्र में फ़िरौन हठी था। उसने
हम लोगों को प्रस्थान नहीं करने दिया। किन्तु यहोवा ने उस देश
के सभी पहलौठे नर सन्तानों को मार डाला। (यहोवा ने पहलौठे
नर जानवरों और पहलौठे पुत्रों को मार डाला।) इसलिए हम लोग
हर एक पहलौठे नर जानवर को यहोवा को समर्पित करते हैं। और
यही कारण है कि हम प्रत्येक पहलौठे पुत्रों को फिर यहोवा से
खरीदते हैं।’ 16 यह तुम्हारी हाथ पर बँधे धागे की तरह है और यह
तुम्हारी आँखों के सामने बँधे चिन्ह की तरह है। यह इसे याद करने
में सहायक है कि यहोवा अपनी महान शक्ति से हम लोगों को मिस्र
से बाहर लाया।”

मिस्र से बाहर यात्रा

17 फ़िरौन ने लोगों को मिस्र छोड़ने के लिए विवश किया। यहोवा
ने लोगों को समुद्र के तट की सड़क को नहीं पकड़ने दिया। वह
सड़क पलिश्ती तक का सबसे छोटा रास्ता है, किन्तु यहोवा ने
कहा, “यदि लोग उस रास्ते से जाएंगे तो उन्हें लड़ना पड़ेगा। तब वे
अपना मन बदल सकते हैं और मिस्र को लौट सकते है।” 18 इसलिए
यहोवा उन्हें अन्य रास्ते से ले गया। वह लाल सागर की तटीय
मरुभूमि से उन्हें ले गया। किन्तु इस्राएल के लोग तब युद्ध के लिए
वस्त्र पहने थे जब उन्होंने मिस्र छोड़ा।

यूसुफ़ की अस्थियों का घर ले जाया जाना

19 मूसा यूसुफ़ की अस्थियों को अपने साथ ले गया। (मरने के
पहले यूसुफ़ ने इस्राएल की सन्तानों से प्रतिज्ञा कराई कि वे वह

करेंगे। मरने के पहले यूसुफ़ ने कहा, "जब परमेश्वर तुम लोगों को बचाए, मेरी अस्थियों को मिस्र के बाहर अपने साथ ले जाना याद रखना।")

यहोवा का अपने लोगों को ले जाया जाना

20 इस्राएल के लोगों ने सुक्कोत नगर छोड़ा और एताम में डेरा
डाला। एताम मरुभूमि के छोर पर था। 21 यहोवा ने रास्ता दिखाया।
दिन में यहोवा ने एक बड़े बादल का उपयोग लोगों को ले चलने के किया। और रात में यहोवा ने रास्ता दिखाने के लिए एक ऊँचे अग्नि स्तम्भ का उपयोग किया। यह आग उन्हें प्रकाश देती थी अतः वे
रात को भी यात्रा कर सकते थे। 22 एक ऊँचे स्तम्भ के रूप में बादल
सदा उनके साथ दिन में रहा और रात को अग्नि स्तम्भ सदा उनके साथ रहा।

14

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 2 "लोगों से पीहाहीरोत तक पीछे
मुड़कर यात्रा करने को कहो। रात में मिगदोल और समुद्र के बीच
उनसे ठहरने को कहो। यह बाल सपोन के करीब है। 3 फ़िरौन
सोचेगा कि इस्राएल के लोग मरुभूमि में भटक गए है और वह
सोचेगा कि लोगों को कोई स्थान नहीं मिलेगा जहाँ वे जाए। 4 मैं
फ़िरौन की हिम्मत बढ़ाऊँगा ताकि वह तुम लोगों का पीछा करे। किन्तु फ़िरौन और उसकी सेना को हराऊँगा। इससे मुझे गौरव प्राप्त होगा। तब मिस्र के लोग जानेंगे कि मैं ही यहोवा हूँ।" इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर का आदेश माना अर्थात् उन्होंने वही किया जो उसने कहा।

फ़िरौन द्वारा इस्राएलियों का पीछा किया जाना

5 तब फ़िरौन को यह सूचना मिली कि इस्राएल के लोग भाग गए
हैं तो उसने और उसके अधिकारियों ने उन्हें वहाँ से चले जाने देने का जो वचन दिया था, उसके प्रति अपना मन बदल दिया। फ़िरौन

ने कहा, “हमने इस्राएल के लोगों को क्यों जाने दिया? हमने उन्हें भागने क्यों दिया? अब हमारे दास हमारे हाथों से निकल चुके हैं।”

6 इसलिए फ़िरौन ने अपने युद्ध रथ को तैयार किया और अपनी
सेना को साथ लिया। 7 फ़िरौन ने अपने लोगों में से छः सौ सबसे
अच्छे आदमियों तथा अपने सभी रथों को लिया। हर एक रथ में
एक अधिकारी बैठा था। 8 इस्राएल के लोग विजय के उत्साह में
अपने शस्त्रों को ऊपर उठाए जा रहे थे किन्तु यहोवा ने मिस्र के
राजा फिरौन को साहसी बनाया। और फ़िरौन ने इस्राएल के लोगों
का पीछा करना शुरु कर दिया।

9 मिस्री सेना के पास बहुत से घोड़े, सैनिक और रथ थे। उन्होंने इस्राएल के लोगों का पीछा किया और उस समय जब वे लाल सागर के तट पर पीहाहीरोत में, बालसपोन के पूर्व में डेरा डाले थे, वे उनके समीप आ गए।

10 इस्राएल के लोगों ने फिरौन और उसकी सेना को अपनी ओर
आते देखा तो लोग बुरी तरह डर गए। उन्होंने सहायता के लिए
यहोवा को पुकारा। 11 उन्होंने मूसा से कहा, “तुम हम लोगों को
मिस्र से बाहर क्यों लाए? तुम हम लोगों को इस मरुभूमि में मरने
के लिए क्यों ले आए? हम लोग शान्तिपूर्वक मिस्र में मरते, मिस्र में
बहुत सी कब्रें थी। 12 हम लोगों ने कहा था कि ऐसा होगा। मिस्र
में हम लोगों ने कहा था, ‘कृपया हम लोगों को कष्ट न दो। हम
लोगों को यहीं ठहरने और मिस्रियों की सेवा करने दो।’ यहाँ आकर
मरुभूमि में मरने से अच्छा यह होता कि हम लोग वहीं मिस्रियों के
दास बनकर रहते।”

13 किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, “डरो नही! भागो नहीं! रूक जाओ!
ज़रा ठहरो और देखो कि आज तुम लोगों को यहोवा कैसे बचाता
है। आज के बाद तुम लोग इन मिस्रियों को कभी नहीं देखोगे! 14 तुम
लोगों को शान्त रहने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करना है। यहोवा
तुम लोगों के लिए लड़ता रहेगा।”

15 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम्हें मुझको पुकारना नहीं पड़ेगा;
इस्राएल के लोगों को आगे चलने का आदेश दो। 16 अपने हाथ
की लाठी को लाल सागर के ऊपर उठाओ और लाल सागर फट
जाएगा। तब लोग सूखी भूमि से समुद्र को पार कर सकेंगे। 17 मैंने
मिस्रियों को साहसी बनाया है। इस प्रकार वे तुम्हारा पीछा करेंगे।
किन्तु मैं दिखाऊँगा कि मैं फ़िरौन, उसके सभी घुड़सवारों और रथों
से अधिक शक्तिशाली हूँ। 18 तब मिस्री समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ।
जब मैं फ़िरौन, उसके घुड़सवारों और रथों को हराऊँगा वे तब मुझे
सम्मान देंगे।"

यहोवा का मिस्री सेना को हराना

19 उस समय यहोवा का दूत लोगों के पीछे गया। (यहोवा का
दूत प्रायः लोगों के आगे था और उन्हें ले जा रहा था)। इसलिए
बादल का स्तम्भ लोगों के आगे से हट गया और उनके पीछे आ
गया। 20 इस प्रकार बादल मिस्रियों और इस्राएलियों के बीच खड़ा
हुआ। इस्राएल के लोगों के लिए प्रकाश था किन्तु मिस्रियों के लिए
अँधेरा। इसलिए मिस्री उस रात इस्राएलियों के अधिक निकट न
आ सके।

21 मूसा ने अपनी बाहें लाल सागर के ऊपर उठाई। और यहोवा
ने पूर्व से तेज आँधी चला दी। आँधी रात भर चलती रही। समुद्र
फटा और पुरवायी हवा ने जमीन को सुखा दिया। 22 इस्राएल के
लोग सूखी जमीन पर चलकर समुद्र के पार गए। उनकी दायीं और
बाईं ओर पानी दीवार की तरह खड़ा था। 23 तब फ़िरौन के सभी
रथों और घुड़सवारों ने समुद्र में उनका पीछा किया। 24 बहुत सवेरे
ही यहोवा ने लम्बे बादल और आग के स्तम्भ पर से मिस्र की सेना
को देखा और यहोवा ने उन पर हमला किया और उन्हें हरा दिया।
25 रथों के पहिए धंस गए। रथों का नियन्त्रण कठिन हो गया। मिस्री
चिल्लाए, "हम लोग यहाँ से निकल चलें। यहोवा हम लोगों के विरुद्ध
लड़ रहा है। यहोवा इस्राएल के लोगों के लिए लड़ रहा है।"

26 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “अपने हाथ को समुद्र के ऊपर
उठाओ। फिर पानी गिरेगा तथा मिस्री रथों और घुड़सवारों को डूबो
देगा।”
27 इसलिए ठीक दिन निकलने से पहले मूसा ने अपना हाथ समुद्र
के ऊपर उठाया और पानी अपने उचित तल पर वापस पहुँच गया।
मिस्री भागने का प्रयत्न कर रहे थे। किन्तु यहोवा ने मिस्रियों को
समुद्र में बहा कर डूबो दिया। 28 पानी अपने उचित तल तक लौटा
और उसने रथों तथा घुड़सवारों को ढक लिया। फ़िरौन की पूरी
सेना जो इस्राएली लोगों का पीछा कर रही थी, डूबकर नष्ट हो गई।
उनमें से कोई भी न बचा!
29 किन्तु इस्राएल के लोगों ने सूखी जमीन पर चलकर समुद्र पार
किया। उनकी दायीं और बायीं ओर पानी दीवार की तरह खड़ा
था। 30 इसलिए उस दिन यहोवा ने इस्राएल के लोगों को मिस्रियों से
बचाया और इस्राएल के लोगों ने मिस्रियों के शवों को लाल सागर
के किनारे देखा। 31 इस्राएल के लोगों ने यहोवा की महान शक्ति
को देखा जब उसने मिस्रियों को हराया। अत: लोगों ने यहोवा का
भय माना और सम्मान किया और उन्होंने यहोवा और उसके सेवक
मूसा पर विश्वास किया।

15

मूसा का गीत

1 तब मूसा और इस्राएल के लोग यहोवा के लिए यह गीत गाने
लगे:

“मैं यहोवा के लिए गाऊँगा क्योंकि
उसने महान काम किये है।
उसने घोड़ों और सवारों को समुद्र में फेंका है।
2 यहोवा ही मेरी शक्ति है।
वह हमें बचाता है

और मैं गाता हूँ गीत उसकी प्रशंसा के।*
मेरा परमेश्वर यहोवा है
और मैं उसकी स्तुति करता हूँ।
मेरे पूर्वजों का परमेश्वर यहोवा है
और मैं उसका आदर करता हूँ।
3 यहोवा महान योद्धा है।
उसका नाम यहोवा है।
4 उसने फ़िरौन के रथ
और सैनिकों को समुद्र में फेंक दिया।
फ़िरौन के उत्तम अधिकारी
लाल सागर में डूब गए।
5 गहरे पानी ने उन्हें ढका।
वे चट्टानों की तरह गहरे पानी में डूबे।

6 "तेरी दायीं भुजा अद्भुत शक्तिशाली है।
यहोवा, तेरी दायीं भुजा ने शत्रु को चकनाचूर कर दिया।
7 तूने अपनी महामहिम में नष्ट किया
उन्हें जो व्यक्ति तेरे विरुद्ध खड़े हुए।
तेरे क्रोध ने उन्हें उस प्रकार नष्ट किया
जैसे आग तिनके को जलाती है।
8 तूने जिस तेज आँधी को चलाया,
उसने जल को ऊँचा उठाया।
वह तेज़ बहता जल ठोस दीवार बना।
समुद्र ठोस बन गया अपने गहरे से गहरे भाग तक।

9 "शत्रु ने कहा,
'मैं उनका पीछा करूँगा और उनको पकड़ूँगा।
मैं उनका सारा धन लूँगा।

---

* **15:2:** यहोवा … प्रशंसा के शाब्दिक, "यहोवा मेरी शक्ति और स्तुति और वह मेरी मुक्ति बनता है।"

मैं अपनी तलवार चलाऊँगा और उनसे हर चीज़ लूँगा।
मैं अपने हाथों का उपयोग करूँगा और अपने लिए सब कुछ लूँगा।'
10 किन्तु तू उन पर टूट पड़ा
और उन्हें समुद्र से ढक दिया तूने
वे सीसे की तरह डूबे गहरे समुद्र में।

11 "क्या कोई देवता यहोवा के समान है? नहीं!
तेरे समान कोई देवता नहीं,
तू है अद्‌भुत अपनी पवित्रता में!
तुझमें है विस्मयजनक शक्ति
तू अद्‌भुत चमत्कार करता है!
12 तू अपना दाँया हाथ उठा कर
संसार को नष्ट कर सकता था!
13 परन्तु तू कृपा कर उन लोगों को ले चला
जिन्हें तूने बचाया है।
तू अपनी शक्ति से इन लोगों को अपने पवित्र
और सुहावने देश को ले जाता है।

14 "अन्य राष्ट्र इस कथा को सुनेंगे
और वे भयभीत होंगे।
पलिश्ती लोग भय से काँपेंगे।
15 तब एदोम के मुखिया भय से काँपेंगे
मोआब के शक्तिशाली नेता भय से काँपेंगे,
कनान के व्यक्ति अपना साहस खो देंगे।
16 वे लोग आतंक और भय से आक्रान्त होंगे जब
वे तेरी शक्ति देखेंगे।
वे चट्टान के समान शान्त रहेंगे जब तक
तुम्हारे लोग गुज़रेंगे जब तक तेरे द्वारा लाए गए लोग गुज़रेंगे।

17 यहोवा अपने लोगों को स्वयं ले जाएगा
अपने पर्वत पर उस स्थान तक जिसे तूने अपने सिंहासन के
लिए बनाया है।
हे स्वामी, तू अपना मन्दिर अपने हाथों बनायेगा।

18 "यहोवा सदा सर्वदा शासन करता रहेगा।"

19 हाँ, ये सचमुच हुआ! फ़िरौन के घोड़े, सवार और रथ समुद्र में
चले गए और यहोवा ने उन्हें समुद्र के पानी से ढक दिया। किन्तु
इस्राएल के लोग सूखी ज़मीन पर चलकर समुद्र के पार चले गए।
20 तब हारून की बहन नबिया मरियम ने एक डफली ली। मरियम
और स्त्रियों ने नाचना, गाना आरम्भ किया। मरियम की टेक थी,

21 "यहोवा के लिए गाओ क्योंकि
उसने महान काम किए हैं।
फेंका उसने घोड़े को और उसके सवार को
सागर के बीच में।"

22 मूसा इस्राएल के लोगों को लाल सागर से दूर ले जाता रहा,
लोग शूर मरुभूमि में पहुँचे। वे तीन दिन तक मरुभूमि में यात्रा करते
रहे। लोग तनिक भी पानी न पा सके। 23 तीन दिन के बाद लोगों ने
मारा की यात्रा की। मारा में पानी था, किन्तु पानी इतना कड़वा था
कि लोग पी नहीं सकते थे। (यही कारण था कि इस स्थान का नाम
मारा पड़ा।)
24 लोगों ने मूसा से शिकायत शुरु की। लोगों ने कहा, "अब हम
लोग क्या पीएं?"
25 मूसा ने यहोवा को पुकारा। इसलिए यहोवा ने उसे एक पेड़
दिखाया। मूसा ने पेड़ को पानी में डाला। जब उसने ऐसा किया,
पानी अच्छा पीने योग्य हो गया। उस स्थान पर यहोवा ने लोगों की
परीक्षा ली और उन्हें एक नियम दिया।

यहोवा ने लोगों के विश्वास की जाँच की। 26 यहोवा ने कहा, "तुम लोगों को अपने परमेश्वर यहोवा का आदेश अवश्य मानना चाहिए। तुम लोगों को वह करना चाहिए जिसे वह ठीक कहता है। यदि तुम लोग यहोवा के आदेशों और नियमों का पालन करोगे तो तुम लोग मिस्रियों की तरह बीमार नहीं होगे। मैं तुम्हारा यहोवा तुम लोगों को कोई ऐसी बीमारी नहीं दूँगा जैसी मैंने मिस्रियों को दी। मैं यहोवा हूँ। मैं ही वह हूँ जो तुम्हें स्वस्थ बनाता है।"

27 तब लोगों ने एलीम तक की यात्रा की। एलीम में पानी के बारह सोते थे। और वहाँ सत्तर खजूर के पेड़ थे। इसलिए लोगों ने वहाँ पानी के निकट डेरा डाला।

16

1 तब लोगों ने एलीम से यात्रा की और सीनै मरुभूमि में पहुँचे। यह स्थान एलीम और सीनै के बीच था। वे इस स्थान पर दूसरे
महीने के पन्द्रहवें दिन* मिस्र छोड़ने के बाद पहुँचे। 2 तब इस्राएल
के लोगों ने फिर शिकायत करनी शुरु की। उन्होंने मूसा और हारुन
से मरुभूमि में शिकायत की। 3 लोगों ने मूसा और हारुन से कहा,
"यह हमारे लिए अच्छा होता कि यहोवा ने हम लोगों को मिस्र में मार डाला होता। मिस्र में हम लोगों के पास खाने को बहुत था। हम लोगों के पास वह सारा भोजन था जिसकी हमें आवश्यकता थी। किन्तु अब तुम हमें मरुभूमि में ले आये हो। हम सभी यहाँ भूख से मर जाएंगे।"

4 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं आकाश से भोजन गिराऊँगा। वह भोजन तुम लोगों के खाने के लिए होगा। हर एक दिन लोग बाहर जायें और उस दिन खाने के जरूरत के लिए भोजन इकट्ठा करें। मैं यह इसलिए करूँगा कि मैं देखूँ कि क्या लोग वही करेंगे जो
मैं करने को कहूँगा। 5 हर एक दिन लोग प्रत्येक दिन के लिए पर्याप्त

---

* **16:1:** दूसरे महीन के पन्द्रहवें दिन अर्थात् पन्द्रहवाँ इययर। इस्राएल के लोग एक महीने तक यात्रा करते रहे थे।

भोजन इकट्ठा करें। किन्तु शुक्रवार को जब भोजन तैयार करने लगे
तो देखें कि वे दो दिन के लिए पर्याप्त भोजन रखते हैं।"†

6 इसलिए मूसा और हारून ने इस्राएल के लोगों से कहा, "आज
की रात तुम लोग यहोवा की शक्ति देखोगे। तुम लोग जानोगे कि
एक मात्र वह ही ऐसा है जिसने तुम लोगों को मिस्र देश से बचा कर
बाहर निकाला। 7 कल सवेरे तुम लोग यहोवा की महिमा देखोगे।
तुम लोगों ने यहोवा से शिकायत की। उसने तुम लोगों की सुनी।
तुम लोग हम लोगों से शिकायत पर शिकायत कर रहे हो। संभव है
कि हम लोग अब कुछ आराम कर सकें।"

8 और मूसा ने कहा, "तुम लोगों ने शिकायत की और यहोवा ने
तुम लोगों कि शिकायतें सुन ली है। इसलिए रात को यहोवा तुम
लोगों को माँस देगा और हर सवेरे तुम लोग वह सारा भोजन पाओगे,
जिसकी तुम को ज़रुरत है। तुम लोग मुझसे और हारून से शिकायत
करते रहे हो। याद रखो तुम लोग मेरे और हारून के विरुद्ध शिकायत
नहीं कर रहे हो। तुम लोग यहोवा के विरुद्ध शिकायत कर रहे हो।"

9 तब मूसा ने हारून से कहा, "इस्राएल के लोगों को सम्बोधित
करो। उनसे कहो, 'यहोवा के सामने इकट्ठे हों क्योंकि उसने तुम्हारी
शिकायतें सुनी हैं।' "

10 हारून ने इस्राएल के सभी लोगों को सम्बोधित किया। वे सभी
एक स्थान पर इकट्ठे थे। जब हारून बातें कर रहा था तभी लोग मुड़े
और उन्होंने मरूभूमि की ओर देखा और उन्होंने यहोवा की महिमा
को बादल में प्रकट होते देखा।

11 यहोवा ने मूसा से कहा, 12 "मैंने इस्राएल के लोगों की शिकायत
सुनी है। इसलिए उनसे मेरी बातें कहो। मैं कहता हूँ, 'आज साँझ को
तुम माँस खाओगे और कल सवेरे तुम लोग भरपेट रोटियाँ खाओगे,

† **16:5:** शुक्रवार ... है यह इसलिए हुआ ताकि लोग सब्त (शनिवार) को विश्राम न करें।

तब तुम लोग जानोगे कि तुम लोग अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास
कर सकते हो।' "
13 उस रात बटेरें (पक्षियाँ) डेरे के चारों ओर आईं। लोगों ने इन
बटेरों को माँस के लिए पकड़ा। सवेरे डेरे के पास ओस पड़ी होती
थी। 14 सूरज के निकलने पर ओस पिघल जाती थी किन्तु ओस के
पिघलने पर पाले की तह की तरह ज़मीन पर कुछ रह जाता था।
15 इस्राएल के लोगों ने इसे देखा और परस्पर कहा, "वह क्या है?"‡
उन्होंने यह प्रश्न इसलिए पूछा कि वे नहीं जानते थे कि वह क्या
चीज है। इसलिए मूसा ने उनसे कहा, "यह भोजन है जिसे यहोवा
तुम्हें खाने को दे रहा है। 16 यहोवा कहता है, 'हर व्यक्ति उतना इकट्ठा
करे जितना उसे आवश्यक है। तुम लोगों में से हर एक लगभग दो
क्वार्ट§ अपने परिवार के हर व्यक्ति के लिए इकट्ठा करें।' "
17 इसलिए इस्राएल के लोगों ने ऐसा ही किया। हर व्यक्ति ने इस
भोजन को इकट्ठा किया। कुछ व्यक्तियों ने अन्य लोगों से अधिक
इकट्ठा किया। 18 उन लोगों ने अपने परिवार के हर एक व्यक्ति को
भोजन दिया। जब भोजन नापा गया तो हर एक व्यक्ति के लिए सदा
पर्याप्त रहा, किन्तु कभी भी आवश्यकता से अधिक नहीं हुआ। हर
व्यक्ति ने ठीक अपने लिए तथा अपने परिवार के खाने के लिए
पर्याप्त इकट्ठा किया।
19 मूसा ने उनसे कहा, "अगले दिन खाने के लिए वह भोजन मत
बचाओ।" 20 किन्तु लोगों ने मूसा की बात न मानी। कुछ लोगों ने
अपना भोजन बचाया जिससे वे उसे अगले दिन खा सकें। किन्तु
जो भोजन बचाया गया था उसमें कीड़े पड़ गए और वह दुर्गन्ध देने
लगा। मूसा उन लोगों पर क्रुद्ध हुआ जिन्होंने यह किया था।
21 हर सवेरे लोग भोजन इकट्ठा करते थे। हर एक व्यक्ति उतना
इकट्ठा करता था जितना वह खा सके। किन्तु जब धूप तेज होती
थी भोजन गल जाता था और वह समाप्त हो जाता था।

‡ **16:15:** "वह क्या है?" हिब्रू में यह "मन्ना" की तरह उच्चारित होता है। § **16:16:** दो क्वार्ट मूल में एक ओमेर।

22 शुक्रवार को लोगों ने दुगना भोजन इकट्ठा किया। उन्होंने चार
क्वार्ट हर व्यक्ति के लिए इकट्ठ किया। इसलिए लोगों के सभी
मुखिया आए और उन्होंने यह बात मूसा से कही।

23 मूसा ने उनसे कहा, "यह वैसा ही है जैसा यहोवा ने बताया
था। क्यों? क्योंकि कल यहोवा के आराम का पवित्र दिन सब्त है।
तुम लोग आज के लिए जितना भोजन तुम्हें चाहिए पका सकते हो।
किन्तु शेष भोजन कल सवेरे के लिए बचाना।"

24 इसलिए लोगों ने अगले दिन के लिए बाकी भोजन बचाया
और कोई भोजन खराब नहीं हुआ और इनमें कहीं कोई कीड़े नहीं
पड़े।

25 शनिवार को मूसा ने लोगों से कहा, "आज यहोवा को समर्पित
आराम का पवित्र दिन सब्त है। इसलिए तुम लोगों में से कल
कोई भी खेत में बाहर नहीं होगा। कल का इकट्ठा भोजन खाओ।
26 तुम लोगों को छः दिन भोजन इकट्ठा करना चाहिए। किन्तु सातवाँ
दिन आराम का दिन है इसलिए जमीन पर कोई विशेष भोजन नहीं
होगा।"

27 शनिवार को कुछ लोग थोड़ा भोजन एकत्र करने गए, किन्तु वे
वहाँ ज़रा सा भी भोजन नहीं पा सके। 28 तब यहोवा ने मूसा से कहा,
"तुम्हारे लोग मेरे आदेश का पालन करने और उपदेशों पर चलने से
कब तक मना करेंगे? 29 देखो यहोवा ने शनिवार को तुम्हारे आराम
का दिन बनाया है। इसलिए शुक्रवार को यहोवा दो दिन के लिए
पर्याप्त भोजन तुम्हें देगा। इसलिए सब्त को हर एक को बैठना और
आराम करना चाहिए। वहीं ठहरे रहो जहाँ हो।" 30 इसलिए लोगों
ने सब्त को आराम किया।

31 इस्राएली लोगों ने इस विशेष भोजन को "मन्ना" कहना आरम्भ
किया। मन्ना छोटे सफ़ेद धनिया के बीजों के समान था और इसका
स्वाद शहद के साथ बने पापड़ की तरह था। 32 तब मूसा ने कहा,
"यहोवा ने आदेश दिया कि, 'इस भोजन का आठ प्याले भर अपने
वंशजों के लिए बचाना। तब वे उस भोजन को देख सकेंगे जिसे मैंने

तुम लोगों को मरुभूमि में तब दिया था जब मैंने तुम लोगों को मिस्र
से निकाला था।' "
33 इसलिए मूसा ने हारून से कहा, "एक घड़ा लो और इसे आठ
प्याले मन्ना से भरो और इस मन्ना को यहोवा के सामने रखने के
लिए और अपने वंशजों के लिए बचाओ।" 34 (इसलिए हारून ने
वैसा ही किया जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। हारून ने
आगे चलकर मन्ना के घड़े को साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने रखा।)
35 लोगों ने चालीस वर्ष तक मन्ना खाया। वे मन्ना तब तक खाते रहे
जब तक उस प्रदेश में नहीं आ गए जहाँ उन्हें बसना था। वे उसे
तब तक खाते रहे जब तक वे कनान के निकट नहीं आ गए। 36 (वे
मन्ना के लिए जिस तोल का उपयोग करते थे, वह ओमेर था। एक
ओमेर** लगभग आठ प्यालों के बराबर था।)

17

1 इस्राएल के सभी लोगों ने सीन की मरुभूमि से एक साथ यात्रा
की। वे यहोवा जैसा आदेश देता रहा, एक स्थान से दूसरे स्थान की
यात्रा करते रहे। लोगों ने रपीदीम की यात्रा की और वहाँ उन्होंने
डेरा डाला। वहाँ लोगों के पीने के लिए पानी न था। 2 इसलिए वे
मूसा के विरुद्ध हो गए और उससे बहस करने लगे। लोगों ने कहा,
"हमें पीने के लिए पानी दो।"

किन्तु मूसा ने उनसे कहा, "तुम लोग मेरे विरुद्ध क्यों हो रहे हो?
तुम लोग यहोवा की परीक्षा क्यों ले रहे हो? क्या तुम लोग समझते
हो कि यहोवा हमारे साथ नहीं है?"

3 किन्तु लोग बहुत प्यासे थे। इसलिए उन्होंने मूसा से शिकायत
जारी रखी। लोगों ने कहा, "हम लोगों को तुम मिस्र से बाहर क्यों
लाए? क्या तुम इसलिए लाए कि पानी के बिना हमको, हमारे बच्चों
को और हमारी गाय, बकरियों को प्यासा मार डालो?"

** **16:36:** ओमेर एक ओमेर एपा का 1/10 भाग था।

4 इसलिए मूसा ने यहोवा को पुकारा, “मैं इन लोगों के साथ क्या
करूँ? ये मुझे मार डालने को तैयार है।”

5 यहोवा ने मूसा से कहा, “इस्राएल के लोगों के पास जाओ और
उनके कुछ बुज़ुर्गों (नेताओं) को अपने साथ लो। अपनी लाठी अपने
साथ ले जाओ। यह वही लाठी है जिसे तुमने तब उपयोग में लिया
था जब नील नदी पर इससे चोट की थी। 6 होरेब (सीनै) पहाड़ पर
मैं तुम्हारे सामने एक चट्टान पर खड़ा होऊँगा। लाठी को चट्टान पर
मारो और इससे पानी बाहर आ जाएगा। तब लोग पी सकते हैं।”

मूसा ने वही बातें कीं और इस्राएल के बुज़ुर्गों (नेताओं) ने इसे
देखा। 7 मूसा ने इस स्थान का नाम मरीबा और मस्सा रखा। क्योंकि
यह वह स्थान था जहाँ इस्राएल के लोग उसके विरुद्ध हुए और
उन्होंने यहोवा की परीक्षा ली थी। लोग यह जानना चाहते थे कि
यहोवा उनके साथ है या नहीं।

8 अमालेकी लोग रपीदीम आए और इस्राएल के लोगों के विरुद्ध
लड़े। 9 इसलिए मूसा ने यहोशू से कहा, “कुछ लोगों को चुनों और
अगले दिन अमालेकियों से जाकर लड़ो। मैं पर्वत की चोटी पर
खड़ा होकर तुम्हें देखूँगा। मैं परमेश्वर द्वारा दी गई छड़ी को पकड़े
रहूँगा।”

10 यहोशू ने मूसा की आज्ञा मानी और अगले दिन अमालेकियों से
लड़ने गया। उसी समय मूसा, हारून और हूर पहाड़ी की चोटी पर
गए। 11 जब कभी मूसा अपने हाथ को हवा में उठाता तो इस्राएल
के लोग युद्ध जीत लेते। किन्तु जब मूसा अपने हाथ को नीचे करता
तो इस्राएल के लोग युद्ध में हारने लगते।

12 कुछ समय बाद मूसा की बाहें थक गई। मूसा के साथ के
लोग ऐसा उपाय करना चाहते थे, जिससे मूसा की बाहें हव में रह
सकें। इसलिए उन्होंने एक बड़ी चट्टान मूसा के नीचे बैठने के लिए
रखी तथा हारून और हूर ने मूसा की बाहों को हवा में पकड़े रखा।
हारून मूसा की एक ओर था तथा हूर दूसरी ओर। वे उसके हाथों

को वैसे ही ऊपर तब तक पकड़े रहे जब तक सूरज नहीं डूबा।
13 इसलिए यहोशू और उसके सैनिकों ने अमालेकियों को इस युद्ध
में हरा दिया।

14 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "इस युद्ध के बारे में लिखो। इस
युद्ध की घटनाओं को एक पुस्तक में लिखो जिससे लोग याद करेंगे
कि यहाँ क्या हुआ था और यहोशू से कहो कि मैं अमालेकी लोगों
को धरती से पूर्णरूप से नष्ट कर दूँगा।"

15 तब मूसा ने एक वेदी बनायी। मूसा ने वेदी का नाम "यहोवा
निस्सी" रखा। 16 मूसा ने कहा, "मैंने यहोवा के सिंहासन की ओर
अपने हाथ फैलाए। इसलिए यहोवा अमालेकी लोगों से लड़ा जैसा
उसने सदा किया है।"

18

मूसा को उसके ससुर की सलाह

1 मूसा का ससुर यित्रो मिद्यान में याजक था। परमेश्वर ने मूसा और
इस्राएल के लोगों की अनेक प्रकार से जो सहायता की उसके बारे
में यित्रो ने सुना। यित्रो ने इस्राएल के लोगों को यहोवा द्वारा मिस्र से
बाहर ले जाए जाने के बारे में सुना। 2 इसलिए यित्रो मूसा के पास
गया जब वह परमेश्वर के पर्वत के पास डेरा डाले था। वह मूसा
की पत्नी सिप्पोरा को अपने साथ लाया। (सिप्पोरा मूसा के साथ
नहीं थी क्योंकि मूसा ने उसे उसके घर भेज दिया था।) 3 यित्रो मूसा
के दोनो पुत्रों को भी साथ लाया। पहले पुत्र का नाम गेर्शोम रखा
क्योंकि जब वह पैदा हुआ, मूसा ने कहा, "मैं विदेश में अजनबी हूँ।"
4 दूसरे पुत्र का नाम एलीएजेर रखा क्योंकि जब वह उत्पन्न हुआ तो
मूसा ने कहा, "मेरे पिता के परमेश्वर ने मेरी सहायता की और मिस्र
के राजा की तलवार से मुझे बचाया है।" 5 इसलिए यित्रो मूसा के
पास तब गया जब वह परमेश्वर के पर्वत (सीनै पर्वत) के निकट

मरुभूमि में डेरा डाले था। मूसा की पत्नी और उसके दो पुत्र यित्रो
के साथ थे।
6 यित्रो ने मूसा को एक सन्देश भेजा। यित्रो ने कहा, "मैं तुम्हारा
ससुर यित्रो हूँ और मैं तुम्हारी पत्नी और उसके दोनों पुत्रों को तुम्हारे
पास ला रहा हूँ।"
7 इसलिए मूसा अपने ससुर से मिलने गया। मूसा उसके सामने
झुका और उसे चूमा। दोनों लोगों ने एक दूसरे का कुशल क्षेम पूछा।
तब वे मूसा के डेरे में और अधिक बातें करने गए। 8 मूसा ने अपने
ससुर यित्रो को हर एक बात बताई जो यहोवा ने इस्राएल के लोगों
के लिए की थी। मूसा ने वे चीज़ें भी बताई जो यहोवा ने फ़िरौन और
मिस्र के लोगों के लिए की थीं। मूसा ने रास्ते की सभी समस्याओं
के बारे में बताया और मूसा ने अपने ससुर को बताया कि किस
तरह यहोवा ने इस्राएली लोगों को बचाया, जब—जब वे कष्ट में थे।
9 यित्रो उस समय बहुत प्रसन्न हुआ जब उसने यहोवा द्वारा
इस्राएल के लिए की गई सभी अच्छी बातों को सुना। यित्रो इसलिए
प्रसन्न था कि यहोवा ने इस्राएल के लोगों को मिस्रियों से स्वतन्त्र
कर दिया था। 10 यित्रो ने कहा,

"यहोवा की स्तुति करो!
उसने तुम्हें मिस्र के लोगों से स्वतन्त्र कराया।
यहोवा ने तुम्हें फ़िरौन से बचाया है।
11 अब मैं जानता हूँ कि यहोवा सभी देवताओं से महान है,
उन्होंने सोचा कि सबकुछ उनके काबू में है लेकिन देखो, परमेश्वर
ने क्या किया!"

12 तब यित्रो ने परमेश्वर के सम्मान में बलि तथा भेंटे दीं। तब
हारून तथा इस्राएल के सभी बुजुर्ग (नेता) मूसा के ससुर यित्रो के
साथ भोजन करने आए। यह उन्होंने परमेश्वर की उपासना की विशेष
विधि के रूप में किया।

13 अगले दिन मूसा लोगों का न्याय करने वाला था। वहाँ लोगों
की संख्या बहुत अधिक थी। इस कारण लोगों को मूसा के सामने
सारे दिन खड़ा रहना पड़ा।
14 यित्रो ने मूसा को न्याय करते देखा। उसने पूछा, "तुम ही यह
क्यों कर रहे हो? एक मात्र न्यायाधीश तुम्हीं क्यों हो? और लोग
केवल तुम्हारे पास ही सारे दिन क्यों आते हैं?"
15 तब मूसा ने अपने ससुर से कहा, "लोग मेरे पास आते हैं और
अपनी समस्याओं के बारे में मुझ से परमेश्वर का निर्णय पूछते हैं।
16 यदि उन लोगों का कोई विवाद होता है तो वे मेरे पास आते हैं। मैं
निर्णय करता हूँ कि कौन ठीक है। इस प्रकार मैं परमेश्वर के नियमों
और उपदेशों की शिक्षा लोगों को देता हूँ।"
17 किन्तु मूसा के ससुर ने उससे कहा, "जिस प्रकार तुम यह कर
रहे हो, ठीक नहीं है। 18 तुम्हारे अकेले के लिए यह काम अत्याधिक
है। इससे तुम थक जाते हो और इससे लोग भी थक जाते हैं। तुम
यह काम स्वयं अकेले नहीं कर सकते। 19 मैं तुम्हें कुछ सुझाव
दूँगा। मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना चाहिए। मेरी प्रार्थना है
कि परमेश्वर तुम्हारा साथ देगा। जो तुम्हें करना चाहिए वह यह है।
तुम्हें परमेश्वर के सामने लोगों का प्रतिनिधित्व करते रहना चाहिए,
और तुम्हें उनके इन विवादों और समस्याओं को परमेश्वर के सामने
रखना चाहिए। 20 तुम्हें परमेश्वर के नियमों और उपदेशों की शिक्षा
लोगों को देनी चाहिए। लोगों को चेतावनी दो कि वे नियम न तोड़े।
लोगों को जीने की ठीक राह बताओ। उन्हें बताओ कि वे क्या करें।
21 किन्तु तुम्हें लोगों में से अच्छे लोगों को चुनना चाहिए।

"तुम्हें अपने विश्वासपात्र आदमियों का चुनाव करना चाहिए
अर्थात् उन आदमियों का जो परमेश्वर का सम्मान करते हो। उन
आदमियों को चुनो जो धन के लिए अपना निर्णय न बदलें। इन
आदमियों को लोगों का प्रशासक बनाओ। हज़ार, सौ, पचास और
दस लोगों पर भी प्रशासक होने चाहिए। 22 इन्हीं प्रशासकों को

लोगों का न्याय करने दो। यदि कोई बहुत ही गंभीर मामला हो तो
वे प्रशासक निर्णय के लिए तुम्हारे पास आ सकते हैं। किन्तु अन्य
मामलों का निर्णय वे स्वयं ही कर सकते हैं। इस प्रकार यह तुम्हारे
लिए अधिक सरल होगा। इसके अतिरिक्त, ये तुम्हारे काम में हाथ
बटा सकेंगे। 23 यदि तुम यहोवा की इच्छानुसार ऐसा करते हो तब
तुम अपना कार्य करते रहने योग्य हो सकोगे। और इसके साथ ही
साथ सभी लोग अपनी समस्याओं के हल हो जाने से शान्तिपूर्वक
घर जा सकेंगे।”

24 इसलिए मूसा ने वैसा ही किया जैसा यित्रो ने कहा था। 25 मूसा
ने इस्राएल के लोगों में से योग्य पुरुषों को चुना। मूसा ने उन्हें लोगों
का अगुआ बनाया। वहाँ हज़ार, सौ, पचास और दस लोगों के ऊपर
प्रशासक थे। 26 ये प्रशासक लोगों के न्यायाधीश थे। लोग अपनी
समस्याएँ इन प्रशासको के पास सदा ला सकते थे। और मूसा को
केवल गंभीर मामले ही निपटाने पड़ते थे।

27 कुछ समय बाद मूसा ने अपने ससुर यित्रो से विदा ली और
यित्रो अपने घर लौट गया।

19

इस्राएल के साथ परमेश्वर का साक्षीपत्र

1 मिस्र से अपनी यात्रा करने के तीसरे महीने में इस्राएल के लोग
सीनै मरुभूमि में पहुँचे। 2 लोगों ने रपीदीम को छोड़ दिया था और
वे सीनै मरुभूमि में आ पहुँचे थे। इस्राएल के लोगों ने मरुभूमि में
पर्वत* के निकट डेरा डाला। 3 तब मूसा पर्वत के ऊपर परमेश्वर के
पास गया। जब मूसा पर्वत पर था तभी पर्वत से परमेश्वर ने उससे
कहा, “ये बातें इस्राएल के लोगों अर्थात् याकूब के बड़े परिवार
से कहो, 4 ‘तुम लोगों ने देखा कि मैं अपने शत्रुओं के साथ क्या
कर सकता हूँ। तुम लोगों ने देखा कि मैंने मिस्र के लोगों के साथ

* **19:2:** पर्वत अर्थात् होरेब पर्वत जिसे सीनै पर्वत भी कहा जाता हैं।

क्या किया। तुम ने देखा कि मैंने तुम को मिस्र से बाहर एक उकाब
की तरह पंखों पर बैठाकर निकाला। और यहाँ अपने समीप लाया।
5 इसलिए अब मैं कहता हूँ तुम लोग मेरा आदेश मानो। मेरे साक्षीपत्र
का पालन करो। यदि तुम मेरे आदेश मानोगे तो तुम मेरे विशेष लोग
बनोगे। समस्त संसार मेरा है। 6 तुम एक विशेष लोग और याजकों
का राज्य बनोगे।' मूसा, जो बातें मैंने बताई है उन्हें इस्राएल के लोगों
से अवश्य कह देना।"

7 इसलिए मूसा पर्वत से नीचे आया और लोगों के बुज़ुर्गों (नेताओं)
को एक साथ बुलाया। मूसा ने बुज़ुर्गों से वह बातें कहीं जिन्हें कहने
का आदेश यहोवा ने उसे दिया था। 8 फिर सभी लोग एक साथ
बोले, "हम लोग यहोवा की कही हर बात मानेंगे।"

तब मूसा परमेश्वर के पास पर्वत पर लौट आया। मूसा ने कहा
कि लोग उसके आदेश का पालन करेंगे। 9 और यहोवा ने मूसा से
कहा, "मैं घने बादल में तुम्हारे पास आऊँगा। मैं तुमसे बात करूँगा।
सभी लोग मुझे तुमसे बातें करते हुए सुनेंगे। मैं यह इसलिए करूँगा
जिससे लोग उन बातों में सदा विश्वास करेंगे जो तुमने उनसे कहीं।"

तब मूसा ने परमेश्वर को वे सभी बातें बताई जो लोगों ने कही
थीं।

10 यहोवा ने मूसा से कहा, "आज और कल तुम लोगों को विशेष
सभा के लिए अवश्य तैयार करो। लोगों को अपने वस्त्र धो लेने
चहिए। 11 और तीसरे दिन मेरे लिए तैयार रहना चाहिए। तीसरे दिन मैं
(यहोवा) सीनै पर्वत पर नीचे आऊँगा और सभी लोग मुझ (यहोवा)
को देखेंगे। 12-13 किन्तु उन लोगों से अवश्य कह देना कि वे पर्वत
से दूर ही रूकें। एक रेखा खींचना और उसे लोगों को पार न करने
देना। यदि कोई व्यक्ति या जानवर पर्वत को छूएगा तो उसे अवश्य
मार दिया जाएगा। वह पत्थरों से मारा जाएगा या बाणों से बेधा
जाएगा। किन्तु किसी व्यक्ति को उसे छूने नहीं दिया जाएगा। लोगों

को तुरही बजने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। उसी समय उन्हें पर्वत पर जाने दिया जाएगा।"

14 सो मूसा पर्वत से नीचे उतरा। वह लोगों के समीप गया और विशेष बैठक के लिए उन्हें तैयार किया। लोगों ने अपने वस्त्र से धोए।

15 तब मूसा ने लोगों से कहा, "परमेश्वर से मिलने के लिए तीन दिन में तैयार हो जाओ। उस समय तक कोई भी पुरुष स्त्री से सम्पर्क न करे।"

16 तीसरे दिन पर्वत पर बिजली की चमक और मेघ की गरज हुई।
एक घना बादल पर्वत पर उतरा और तुरही की तेज ध्वनि हुई। डेरे
के सभी लोग डर गए। 17 तब मूसा लोगों को पर्वत की तलहटी
पर परमेश्वर से मिलने के लिए डेरे के बाहर ले गया। 18 सीनै पर्वत
धुएँ से ढका था। पर्वत से धुआँ इस प्रकार उठा जैसे किसी भट्टी
से उठता है। यह इसलिए हुआ कि यहोवा आग में पर्वत पर उतरे
और साथ ही सारा पर्वत भी काँपने लगा। 19 तुरही की ध्वनि तीव्र
से तीव्रतर होती चली गई। जब भी मूसा ने परमेश्वर से बात की, मेघ
की गरज में परमेश्वर ने उसे उत्तर दिया।

20 इस प्रकार यहोवा सीनै पर्वत पर उतरा। यहोवा स्वर्ग से पर्वत की चोटी पर उतरा। तब यहोवा ने मूसा को अपने साथ पर्वत की चोटी पर आने को कहा। इसलिए मूसा पर्वत पर चढ़ा।

21 यहोवा ने मूसा से कहा, "जाओ और लोगों को चेतावनी दो
कि वे मेरे पास न आएं न ही मुझे देखें। यदि वे ऐसा करेंगे तो वे मर
जाएंगे और इस तरह बहुत सी मौतें हो जाएंगी। 22 उन याजकों से
भी कहो जो मेरे पास आएंगे कि वे इस विशेष, मिलन के लिए स्वयं
को तैयार करें। यदि वे ऐसा नहीं करते तो मैं उन्हें दण्ड दूँगा।"

23 मूसा ने यहोवा से कहा, "किन्तु लोग पर्वत पर नहीं आ सकते। तूने स्वयं ही हम से एक रेखा खींचकर पर्वत को पवित्र समझने और उसे पार न करने के लिए कहा था।"

24 यहोवा ने उससे कहा, "लोगों के पास जाओ और हारून को
लाओ। उसे अपने साथ वापस लाओ। किन्तु याजकों और लोगों
को मत आने दो। यदि वे मेरे पास आएंगे तो मैं उन्हें दण्ड दूँगा।"
25 इसलिए मूसा लोगों के पास गया और उनसे ये बातें कहीं।

20

दस आदेश

1 तब परमेश्वर ने ये बातें कहीं,

2 "मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं तुम्हें मिस्र देश से बाहर
लाया। मैंने तुम्हें दासता से मुक्त किया। इसलिए तुम्हें निश्चय ही
इन आदेशों का पालन करना चाहिए।
3 "तुम्हे मेरे अतिरिक्त किसी अन्य देवता को, नहीं मानना
चाहिए।
4 "तुम्हें कोई भी मूर्ति नहीं बनानी चाहिए। किसी भी उस चीज़
की आकृति मत बनाओ जो ऊपर आकाश में या नीचे धरती
पर अथवा धरती के नीचे पानी में हो। 5 किसी भी प्रकार की
मूर्ति की पूजा मत करो, उसके आगे मत झुको। क्यों? क्योंकि मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मेरे लोग जो दूसरे देवताओं की पूजा
करते है मैं उनसे घृणा करता हूँ। यदि कोई व्यक्ति मेरे विरुद्ध
पाप करता है तो मैं उसका शत्रु हो जाता हूँ। मैं उस व्यक्ति की
सन्तानों की तीसरी और चौथी पीढ़ी तक को दण्ड दूँगा। 6 किन्तु
मैं उन व्यक्तियों पर बहुत कृपालू रहूँगा जो मुझसे प्रेम करेंगे और
मेरे आदेशों को मानेंगे। मैं उनके परिवारों के प्रति सहस्रों पीढ़ी
तक कृपालु रहूँगा।
7 "तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के नाम का उपयोग तुम्हें गलत ढंग
से नहीं करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति यहोवा के नाम का
उपयोग गलत ढंग से करता है तो वह अपराधी है और यहोवा
उसे निरपराध नहीं मानेगा।

8 “सब्त को एक विशेष दिन के रूप में मानने का ध्यान रखना।
9 सप्ताह में तुम छः दिन अपना कार्य कर सकते हो। 10 किन्तु
सातवाँ दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की प्रतिष्ठा में आराम का दिन
है। इसलिए उस दिन कोई व्यक्ति चाहे तुम, या तुम्हारे पुत्र और
पुत्रियाँ, तुम्हारे दास और दासियाँ, पशु तथा तुम्हारे नगर में रहने
वाले सभी विदेशी काम नहीं करेंगे।” 11 क्यों? क्योंकि यहोवा
ने छ: दिन काम किया और आकाश, धरती, सागर और उनकी
हर चीज़ें बनाई। और सातवें दिन परमेश्वर ने आराम किया। इस
प्रकार यहोवा ने शनिवार को वरदान दिया कि उसे आराम के
पवित्र दिन के रूप में मनाया जाएगा। यहोवा ने उसे बहुत ही
विशेष दिन के रूप में स्थापित किया।

12 “अपने माता और अपने पिता का आदर करो। यह इसलिए
करो कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा जिस धरती को तुम्हें दे रहा है,
उसमें तुम दीर्घ जीवन बिता सको”

13 “तुम्हें किसी व्यक्ति की हत्या नहीं करनी चाहिए”

14 “तुम्हें व्यभिचार नहीं करना चाहिए”

15 “तुम्हें चोरी नहीं करनी चाहिए”

16 “तुम्हें अपने पड़ोसियों के विरुद्ध झूठी गवाही नहीं देनी
चाहिए।”

17 “दूसरे लोगों की चीज़ों को लेने की इच्छा तुम्हें नहीं करनी
चाहिए। तुम्हें अपने पड़ोसी का घर, उसकी पत्नी, उसके सेवक
और सेविकाओं, उसकी गायों, उसके गधों को लेने की इच्छा
नहीं करनी चाहिए। तुम्हें किसी की भी चीज़ को लेने की इच्छा
नहीं करनी चाहिए।”

लोगों का परमेश्वर से डरना

18 घाटी में लोगों ने इस पूरे समय गर्जन सुनी और पर्वत पर
बिजली की चमक देखी। उन्होंने तुरही की ध्वनि सुनी और पर्वत
से उठते धूएँ को देखा। लोग डरे और भय से काँप उठे। वे पर्वत से
दूर खड़े रहे और देखते रहे। 19 तब लोगों ने मूसा से कहा, “यदि तुम

हम लोगों से कुछ कहना चाहोगे तो हम लोग सुनेंगे। किन्तु परमेश्वर
को हम लोगों से बात न करने दो। यदि यह होगा तो हम लोग मर
जाएंगे।”

20 तब मूसा ने लोगों से कहा, “डरो मत! यहोवा यह प्रमाणित
करने आया है कि वह तुमसे प्रेम करता है।”

21 लोग उस समय उठकर पर्वत से दूर चले आए जबकि मूसा
उस गहरे बादल में गया जहाँ यहोवा था। 22 तब यहोवा ने मूसा से
इस्राएलियों को बताने के लिए ये बातें कहीं: “तुम लोगों ने देखा
कि मैंने तुमसे आकाश से बातें की। 23 इसलिए तुम लोग मेरे विरोध
में सोने या चाँदी की मूर्तियाँ न बनाना। तुम्हें इन झूठे देवताओं की
मूर्तियाँ कदापि नहीं बनानी है”

24 “मेरे लिए एक विशेष वेदी बनाओ। इस वेदी को बनाने के
लिए धूलि का उपयोग करो। इस वेदी पर बलि के रूप में होमबलि
तथा मेलबलि चढ़ाओ। इस काम के लिए अपनी भेड़ों और गाय,
बकरियों का उपयोग करो। उन सभी स्थानों पर यही करो जहाँ मैं
अपने को याद करने के लिए कह रहा हूँ। तब मैं आऊँगा और तुम्हें
आशीर्वाद दूँगा। 25 यदि तुम लोग वेदी को बनाने के लिए चट्टानों
का उपयोग करो तो तुम लोग उन चट्टानों का उपयोग न करो जिन्हें
तुम लोगों ने अपने किसी लोहे के औज़ारों से चिकना किया है।
यदि तुम लोग चट्टानों पर किसी औज़ारो का उपयोग करोगे तो मैं
वेदी को स्वीकार नहीं करूँगा। 26 तुम लोग वेदी तक पहुँचाने वाली
सीढ़ियाँ भी न बनाना। यदि सीढ़ियाँ होंगी तो जब लोग ऊपर वेदी
को देखेंगे तो वे तुम्हारे वस्त्रों के भीतर नीचे से तुम्हारी नग्नता को
भी देख सकेंगे।”

21

अन्य नियम एवं आदेश

1 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, “ये वे अन्य नियम है, जिन्हें तुम
लोगों को बताओगे,
2 “यदि तुम एक हिब्रू दास खरीदते हो तो उसे तुम्हारी सेवा केवल
छः वर्ष करनी होगी। छः वर्ष बाद वह स्वतन्त्र हो जाएगा। उसे कुछ
भी नहीं देना पड़ेगा। 3 तुम्हारा दास होने के पहले यदि उसका विवाह
नहीं हुआ है तो वह पत्नी के बिना ही स्वतन्त्र होकर चला जाएगा।
किन्तु यदि दास होने के समय वह व्यक्ति विवाहित होगा तो स्वतन्त्र
होने के समय वह अपनी पत्नी को अपने साथ ले जाएगा। 4 यदि
दास विवाहित नहीं होगा तो उसका स्वामी उसे पत्नी दे सकेगा।
यदि वह पत्नी, पुत्र या पुत्रियों को जन्म देगी तो वह स्त्री तथा बच्चे
उस दास के स्वामी के होंगे। अपने सेवाकाल के पूरा होने पर केवल
वह दास ही स्वतन्त्र किया जाएगा”
5 “किन्तु यह हो सकता है कि दास यह निश्चय करे कि वह अपने
स्वामी के साथ रहना चाहता है। तब उसे कहना पड़ेगा, ‘मैं अपने
स्वामी से प्रेम करता हूँ। मैं अपनी पत्नी और अपने बच्चों से प्रेम
करता हूँ। मैं स्वतन्त्र नहीं होऊँगा मैं यहीं रहूँगा।’ 6 यदि ऐसा हो तो
दास का स्वामी उसे परमेश्वर के सामने लाएगा। दास का स्वामी
उसे किसी दरवाज़े तक या उसकी चौखट तक ले जाएगा और दास
का स्वामी एक तेज़ औज़ार से दास के कान में एक छेद करेगा।
तब दास उस स्वामी की सेवा जीवन भर करेगा।
7 “कोई भी व्यक्ति अपनी पुत्री को दासी के रूप में बेचने का
निश्चय कर सकता है। यदि ऐसा हो तो उसे स्वतन्त्र करने के लिए
वे ही नियम नहीं है जो पुरुष दासों को स्वतन्त्र करने के लिए है।
8 यदि स्वामी उस स्त्री से सन्तुष्ट नहीं है तो वह उसके पिता को
उसे वापस बेच सकता है। किन्तु यदि दासी का स्वामी उस स्त्री से
विवाह करने का वचन दे तो वह दूसरे व्यक्ति को उसे बेचने का
अधिकार खो देता है। 9 यदि दासी का स्वामी उस दासी से अपने
पुत्र का विवाह करने का वचन दे तो उससे दासी जैसा व्यवहार
नहीं किया जाएगा। उसके साथ पुत्री जैसा व्यवहार करना होगा”

10 “यदि दासी का स्वामी किसी दूसरी स्त्री से भी विवाह करे तो
उसे चाहिए कि वह पहली पत्नी को कम भोजन या वस्त्र न दे और
उसे चाहिए कि उन चीजों को लगातार वह उसे देता रहे जिन्हें पाने
का उसे अधिकार विवाह से मिला है। 11 उस व्यक्ति को ये तीन
चीजें उसके लिए करनी चाहिए। यदि वह इन्हें नहीं करता तो स्त्री
स्वतन्त्र की जाएगी और इसके लिए उसे कुछ देना भी नहीं पड़ेगा।
उसे उस व्यक्ति को कोई धन नहीं देना होगा”

12 “यदि कोई व्यक्ति किसी को चोट पहुँचाए और उसे मार डाले
तो उस व्यक्ति को भी मार दिया जाय। 13 किन्तु यदि ऐसा संयोग
होता है कि कोई बिना पूर्व योजना के किसी व्यक्ति को मार दे, तो
ऐसा परमेश्वर की इच्छा से ही हुआ होगा। मैं कुछ विशेष स्थानों
को चुनूँगा जहाँ लोग सुरक्षा के लिए दौड़कर जा सकते हैं। इस
प्रकार वह व्यक्ति दौड़कर इनमें से किसी भी स्थान पर जा सकता
है। 14 किन्तु कोई व्यक्ति यदि किसी व्यक्ति के प्रति क्रोध या घृणा
रखने के कारण उसे मारने की योजना बनाए तो हत्यारे को दण्ड
अवश्य मिलना चाहिए। उसे मेरी वेदी से दूर ले जाओ और उसे मार
डालो”

15 “कोई व्यक्ति जो अपने माता—पिता को चोट पहुँचायें वह
अवश्य ही मार दिया जाये।

16 “यदि कोई व्यक्ति किसी को दास के रूप में बेचने या अपना
दास बनाने के लिए चुराए तो उसे अवश्य मार दिया जाए।

17 “कोई व्यक्ति, जो अपने माता—पिता को शाप दे तो उसे
अवश्य मार दिया जाए।

18 “दो व्यक्ति बहस कर सकते है और एक दूसरे को पत्थर या
मुक्के से मार सकते हैं। उस व्यक्ति को तुम्हें कैसे दण्ड देना चाहिए?
यदि चोट खाया हुआ व्यक्ति मर न जाए तो चोट पहुँचाने वाला
व्यक्ति मारा न जाए। 19 किन्तु यदि चोट खाए व्यक्ति को कुछ
समय तक चारपाई पकड़नी पड़े तो चोट पहुँचाने वाले व्यक्ति को
उसे हर्जाना देना चाहिए। चोट पहुँचाने वाला व्यक्ति उसके समय

की हानि को धन से पूरा करे। वह व्यक्ति तब तक उसे हर्जाना दे
जब तक वह पूरी तरह ठीक न हो जाए”

20 “कभी कभी लोग अपने दास और दासियों को पीटते हैं। यदि
पिटाई के बाद दास मर जाए तो हत्यारे को अवश्य दण्ड दिया जाए।
21 किन्तु दास यदि मरता नहीं और कुछ दिनों बाद वह स्वस्थ हो
जाता है तो उस व्यक्ति को दण्ड नहीं दिया जाएगा। क्यों? क्योंकि
दास के स्वामी ने दास के लिए धन दिया और दास उसका है।

22 “दो व्यक्ति आपस में लड़ सकते हैं और किसी गर्भवती स्त्री
को चोट पहुँचा सकते हैं। यदि वह स्त्री अपने बच्चे को समय से पहले
जन्म देती है, और माँ बुरी तरह घायल नहीं है तो चोट पहुँचानेवाला
व्यक्ति उसे अवश्य धन दे। उस स्त्री का पति यह निश्चित करेगा कि
वह व्यक्ति कितना धन दे। न्यायाधीश उस व्यक्ति को यह निश्चय
करने में सहायता करेंगे कि वह धन कितना होगा। 23 किन्तु यदि
स्त्री बुरी तरह घायल हो तो वह व्यक्ति जिसने उसे चोट पहुँचाई
है अवश्य दण्डित किया जाए। यदि एक व्यक्ति मार दिया जाता है
तो हत्यारा अवश्य मार दिया जाए। तुम एक जीवन के बदले दूसरा
जीवन लो। 24 तुम आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के
बदले हाथ, पैर के बदले पैर लो। 25 जले के बदले जलाओ, खरोंच
के बदले खरोंच करो और घाव के बदले घाव।

26 “यदि कोई व्यक्ति किसी दास की आँख को चोट पहुँचाए
और दास उस आँख से अन्धा हो जाए तो वह दास स्वतन्त्र हो
जाने दिया जाएगा। उसकी आँख उसकी स्वतन्त्रता का मूल्य है।
यह नियम दास या दासी दोनों के लिए समान है। 27 यदि दास का
स्वामी दास के मुँह पर मारे और दास का कोई दाँत टूट जाए तो
दास को स्वतन्त्र कर दिया जाएगा। दास का दाँत उसकी स्वतन्त्रता
का मूल्य है। यह दास और दासी दोनों के लिए समान है।

28 “यदि किसी व्यक्ति का कोई बैल किसी स्त्री को या पुरुष
को मार देता है तो तुम पत्थरों का उपयोग करो और बैल को मार
डालो। तुम्हें उस बैल को खाना नहीं चाहिए। किन्तु बैल का स्वामी

अपराधी नहीं है। 29 किन्तु यदि बैल ने पहले लोगों को चोट पहुँचाई
हो और स्वामी को चेतावनी दी गई हो तो वह स्वामी अपराधी है।
क्यों? क्योंकि इसने बैल को बाँधा या बन्द नहीं रखा। यदि बैल
स्वतन्त्र छोड़ा गया हो और किसी को वह मारे तो स्वामी अपराधी
है। तुम पत्थरों से बैल और उसके स्वामी को भी मार दो। 30 किन्तु
मृतक का परिवार यदि चाहे तो बदले में धन लेकर बैल के मालिक
को छोड़ सकता है। किन्तु वह उतना धन दे जितना न्यायाधीश
निश्चित करे।

31 "यही नियम उस समय भी लागू होगा जब बैल किसी व्यक्ति
के पुत्र या पुत्री को मारता है। 32 किन्तु बैल यदि दास को मार दे तो
बैल का स्वामी दास के स्वामी को एक नये दास का मूल्य चाँदी के
तीस सिक्के* दे और बैल भी पत्थरों से मार डाला जाए। यह नियम
दास और दासी के लिए समान होगा।

33 "कोई व्यक्ति कोई गका या कुँआ खोदे और उसे ढके नहीं
और यदि किसी व्यक्ति का जानवर आए और उसमें गिर जाए तो
गके का स्वामी दोषी है। 34 गके का स्वामी जानवर के लिए धन
देगा। किन्तु जानवर के लिए धन देने के बाद उसे उस मरे जानवर
को लेने दिया जाएगा।

35 "यदि किसी का बैल किसी दूसरे व्यक्ति के बैल को मार डाले
तो वे दोनों उस जीवित बैल को बेच दें। दोनों व्यक्ति बेचने से प्राप्त
आधा—आधा धन और मरे बैल का आधा—आधा भाग ले लें।
36 किन्तु यदि उस व्यक्ति के बैल ने पहले भी किसी दूसरे जानवर
को चोट पहुँचाई हो तो उस बैल का स्वामी अपने बैल के लिए
उत्तरदायी है। यदि उसका बैल दूसरे बैल को मार डालता है तो यह
अपराधी है क्योंकि उसने बैल को स्वतन्त्र छोड़ा। वह व्यक्ति बैल
के बदले बैल अवश्य दे। वह मारे गए बैल के बदले अपना बैल दे।

* **21:32:** चाँदी के तीस सिक्के नये दास के लिए मूल्य।

22

1 “जो व्यक्ति किसी बैल या भेड़ को चुराता है उसे तुम कैसा दण्ड
दोगे? यदि वह व्यक्ति जानवर को मार डाले या बेच दे तो वह उसे
लौटा तो नहीं सकता। इसलिए वह एक चुराए बैल के बदले पाँच
बैल दे। या वह एक चुराई गई भेड़ के बदले चार भेड़ दे। वह चोरी
के लिए कुछ धन भी दे। 2-4 किन्तु यदि उसके पास अपना कुछ भी
नहीं है तो चोरी के लिए उसे दास के रूप में बेचा जाएगा। किन्तु
यदि उसके पास चोरी का जानवर पाया जाए तो वह व्यक्ति जानवर
के स्वामी को हर एक चुराए गए जानवर के बदले दो जानवर देगा।
इस बात का कोई अन्तर नहीं पड़ेगा कि जानवर बैल, गधा या भेड़
हो।

“यदि कोई चोर रात को घर में सेंध लगाने का प्रयत्न करते समय मारा जाए तो उसे मारने का अपराधी कोई नहीं होगा। किन्तु यदि यह दिन में हो तो उसका हत्यारा व्यक्ति अपराध का दोषी होगा। चोर को निश्चय ही क्षतिपूर्ति करनी होगी।

5 “यदि कोई व्यक्ति अपने खेत या अँगूर के बाग में आग लगाए और वह उस आग को फैलने दे और वह उसके पड़ोसी के खेत या अँगूर के बाग को जला दे तो वह अपने पड़ोसी की हानि की पूर्ति में देने के लिए अपनी सबसे अच्छी फसल का उपयोग करेगा।y

6 “कोई व्यक्ति अपने खेत की झाड़ियों को जलाने के लिए आग लगाए। किन्तु यदि आग बढ़े और उसके पड़ोसी की फसल या पड़ोसी के खेत में उगे अन्न को जला दे तो आग लगाने वाला व्यक्ति जली हुई चीज़ों के बदले भुगतान करेगा।

7 “कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से उसके घर में कुछ धन या कुछ
अन्य चीज़ें रखने को कहे और यदि वह धन या वे चीज़ें पड़ोसी
के घर से चोरी चली जाए तो तुम क्या करोगे? तुम्हें चोर का पता
लगाने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि तुमने चोर को पकड़ लिया
तो वह चीज़ों के मूल्य का दुगुना देगा। 8 किन्तु यदि तुम चोर का
पता न लगा सके तब परमेश्वर निर्णय करेगा कि पड़ोसी अपराधी

है या नहीं। घर का स्वामी परमेश्वर के सामने जाए और परमेश्वर ही निर्णय करेगा कि उसने चुराया है या नहीं।

9 “यदि दो व्यक्ति किसी खोए बैल, गधा, भेड़, वस्त्र, यदि किसी अन्य खोई हुई चीज़ के बारे में सहमत न हों तो तुम क्या करोगे? एक व्यक्ति कहता है, ‘यह मेरी है।’ और दूसरा कहता है, ‘नहीं, यह मेरी है।’ दोनों व्यक्ति परमेश्वर के सामने जाएँ। परमेश्वर निर्णय करेगा कि अपराधी कौन है। जिस व्यक्ति को परमेश्वर अपराधी पाएगा वह उस चीज़ के मूल्य से दुगुना भुगतान करे।

10 “कोई अपने पड़ोसी से कुछ समय के लिए अपने जानवर की
देखभाल के लिए कहे। वह जानवर बैल, भेड़, गधा या कोई अन्य
पशु हो और यदि वह जानवर मर जाए, उसे चोट आ जाए या कोई
उसे तब हाँक ले जाए जब कोई न देख रहा हो तो तुम क्या करोगे?
11 वह पड़ोसी स्पष्ट करे कि उसने जानवर को नहीं चुराया है। यदि
यह सत्य हो तब पड़ोसी यहोवा की शपथ उठाए कि उसने वह नहीं
चुराया है। जानवर का मालिक इस शपथ को अवश्य स्वीकार करे।
पड़ोसी को जानवर के लिए मालिक को भुगतान नहीं करना होगा।
12 किन्तु यदि पड़ोसी ने जानवर को चुराया हो तो वह मालिक को
जानवर के लिए भुगतान अवश्य करे। 13 यदि जंगली जानवरों ने
जानवर को मारा हो तो प्रमाण के लिए उसके शरीर को पड़ोसी
लाए। पड़ोसी मारे गए जानवर के लिए मालिक को भुगतान नहीं
करेगा।

14 “यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से किसी जानवर को उधार
ले तो उसके लिए वह व्यक्ति ही उत्तरदायी है। यदि उस जानवर
को चोट पहुँचे या वह मर जाए तो पड़ोसी मालिक को उस जानवर
के लिए भुगतान करे। पड़ोसी इसलिए उत्तरदायी है क्योंकि उसका
मालिक स्वयं वहाँ नहीं था। 15 किन्तु यदि मालिक जानवर के साथ
वहाँ हो तब पड़ोसी को भुगतान नहीं करना होगा। या यदि पड़ोसी
काम लेने के लिए धन का भुगतान कर रहा हो तो जानवर के मरने

या चोट खाने पर उसे कुछ भी नहीं देना होगा। जानवर के उपयोग
के लिए दिया गया भुगतान ही पर्याप्त होगा।
16 "यदि कोई पुरुष किसी अविवाहित कुँवारी कन्या से यौन
सम्बन्ध करे तो वह उससे निश्चय ही विवाह करे। और वह उस
लड़की के पिता को पूरा दहेज* दे। 17 यदि पिता अपनी पुत्री को
उसे विवाह के लिए देने से इन्कार करता है तो भी उस व्यक्ति को
धन देना पड़ेगा। वह उसे दहेज का पूरा धन दे।
18 "तुम किसी स्त्री को जादू टोना मत करने देना। यदि वह ऐसा
करे तो तुम उसे जीवित मत रहने देना।
19 "तुम किसी व्यक्ति को किसी जानवर के साथ यौन सम्बन्ध
न रखने देना। यदि ऐसा हो तो वह व्यक्ति अवश्य मार डाला जाए।
20 "यदि कोई किसी मिथ्या देवता को बलि चढ़ाए तो उस व्यक्ति
को अवश्य नष्ट कर दिया जाए। केवल परमेश्वर यहोवा ही ऐसा है
जिसे तुमको बलि चढ़ानी चाहिए।
21 "याद रखो इससे पहले तुम लोग मिस्र देश में विदेशी थे। अतः
तुम लोग उस व्यक्ति को न ठगो, न ही चोट पहुँचाओ जो तुम्हारे
देश में विदेशी हो।
22 "निश्चय ही तुम लोग ऐसी स्त्रियों का कभी बुरा नहीं करोगे
जिनके पति मर चुके हों या उन बच्चों का जिनके माता—पिता न हों।
23 यदि तुम लोग उन विधवाओं या अनाथ बच्चों का कुछ बुरा करोगे
तो वे मेरे आगे रोएंगे और मैं उनके कष्टों को सुनूँगा 24 और मुझे बहुत
क्रोध आएगा। मैं तुम्हें तलवार से मार डालूँगा। तब तुम्हारी पत्नियाँ
विधवा हो जाएंगी और तुम्हारे बच्चे अनाथ हो जाएंगे।
25 "यदि मेरे लोगों में से कोई गरीब हो और तुम उसे कर्ज़ दो तो
उस धन के लिए तुम्हें ब्याज़ नहीं लेना चाहिए। और जल्दी चुकाने
के लिए भी तुम उसे मजबूर नहीं करोगे। 26 कोई व्यक्ति उधार लिए

---

* **22:16:** दहेज वह धन जो एक व्यक्ति दुल्हन के पिता को इसलिए देना था ताकि वह उस युवती से विवाह कर सके।

हुए धन के भुगतान के लिए अपना लबादा गिरवी रख सकता है।
किन्तु तुम सूरज डूबने के पहले उसका वह वस्त्र अवश्य लौटा
देना। 27 यदि वह व्यक्ति अपना लबादा नहीं पाता तो उसके पास
शरीर ढकने को कुछ भी नहीं रहेगा। जब वह सोएगा तो उसे सर्दी
लगेगी। यदि वह मुझे रोकर पुकारेगा तो मैं उसकी सुनूँगा। मैं उसकी
बात सुनूँगा क्योंकि मैं कृपालु हूँ।

28 "तुम्हें परमेश्वर या अपने लोगों के मुखियाओ को शाप नहीं
देना चाहिए।

29 "फ़सल कटने के समय तुम्हें अपना प्रथम अन्न और प्रथम फल
का रस मुझे देना चाहिए। इसे टालो मत।

"मुझे अपने पहलौठे पुत्रों को दो। 30 अपनी पहलौठी गायों तथा
भेड़ों को भी मुझे देना। पहलौठे को उसकी माँ के साथ सात दिन
रहने देना। उसके बाद आठवें दिन उसे मुझको देना।

31 "तुम लोग मेरे विशेष लोग हो। इसलिए ऐसे किसी जानवर
का माँस मत खाना जिसे किसी जंगली जानवर ने मारा हो। उस मरे
जानवर को कुत्तों को खाने दो।"

23

1 "लोगों के विरुद्ध झूठ मत बोलो। यदि तुम न्यायालय में गवाह
हो तो बुरे व्यक्ति की सहायता के लिए झूठ मत बोलो।

2 "उस भीड़ का अनुसरण मत करो, जो गलत कर रही हो। जो
जनसमूह बुरा कर रहा हो उसका अनुसरण करते हुए न्यायालय में
उसका समर्थन मत करो।

3 "न्यायालय में किसी गरीब का इसलिए पक्ष मत लो कि वह
गरीब है। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। यदि वह सही है तब ही
उसका समर्थन करो।

4 "यदि तुम्हें कोई खोया हुआ बैल या गधा मिले तो तुम्हें उसे
उसके मालिक को लौटा देना चाहिए। चाहे वह तुम्हारा शत्रु ही क्यों
न हो।

5 “यदि तुम देखो कि कोई जानवर इसलिए नहीं चल पा रहा है कि उसे अत्याधिक बोझ ढोना पड़ रहा है तो तुम्हें उसे रोकना चाहिए और उस जानवर की सहायता करनी चाहिए। तुम्हें उस जानवर की सहायता तब भी करनी चाहिए जब वह जानवर तुम्हारे शत्रुओं में से भी किसी का हो।

6 “तुम्हें, लोगों को गरीबों के प्रति अन्यायी नहीं होने देना चाहिए। उनके साथ भी अन्य लोगों के समान ही न्याय होना चाहिए।

7 “तुम किसी को किसी बात के लिए अपराधी कहते समय बहुत सावधान रहो। किसी व्यक्ति पर झूठे दोष न लगाओ। किसी निर्दोष व्यक्ति को उस अपराध के दण्ड के द्वारा मत मरने दो जो उसने नहीं किया। कोई व्यक्ति जो निर्दोष की हत्या करें, दुष्ट है। और मैं उस दुष्ट व्यक्ति को क्षमा माफ़ नहीं करूँगा।

8 “यदि कोई व्यक्ति गलत होने पर अपने से सहमत होने के लिए रिश्वत देने का प्रयत्न करे तो उसे मत लो। ऐसी रिश्वत न्यायाधीशों को अन्धा कर देगी जिससे वे सत्य को नहीं देख सकेंगे। रिश्वत अच्छे लोगों को झूठ बोलना सिखाएगी।

9 “तुम किसी विदेशी के साथ कभी बुरा बरताव न करो। याद रखो जब तुम मिस्र देश में रहते थे तब तुम विदेशी थे।”

विशेष पर्व

10 “छः वर्ष तक बीज बोओ, अपनी फ़सलों को काटो और खेत
को तैयार करो। 11 किन्तु सातवें वर्ष अपनी भूमि का उपयोग न
करो। सातवाँ वर्ष भूमि के विश्राम का विशेष समय होगा। अपने खेतों मे कुछ भी न बोओ। यदि कोई फ़सल वहाँ उगती है तो उसे गरीब लोगों को ले लेने दो। जो भी खाने की चीज़ें बच जाएं उन्हें जंगली जानवरों को खा लेने दो। यही बात तुम्हें अपने अंगूर और जैतून के बागों के सम्बन्ध में भी करनी चाहिए।

12 “छः दिन तक काम करो। तब सातवें दिन विश्राम करो। इससे तुम्हारे दासों और तुम्हारे दूसरे मजदूरों को भी विश्राम का समय मिलेगा। और तुम्हारे बैल और गधे भी आराम कर सकेंगे।”

13 “संकल्प करो कि तुम इन नियमों का पालन करोगे। मिथ्या देवताओं की पूजा मत करो। तुम्हें उनका नाम भी नहीं लेना चाहिए।

14 “प्रति वर्ष तुम्हारे तीन विशेष पवित्र पर्व होंगे। इन दिनों तुम
लोग मेरी उपासना के लिए मेरी विशेष जगह पर आओगे। 15 पहला
पवित्र पर्व अख़मीरी रोटी का पर्व होगा। यह वैसा ही होगा, जैसा मैंने आदेश दिया है। इस दिन तुम लोग ऐसी रोटी खाओगे जिसमें खमीर न हो। यह सात दिन तक चलेगा। तुम लोग यह आबीब के महीने में करोगे। क्योंकि यही वह समय है जब तुम लोग मिस्र से आए थे। इन दिनों कोई भी व्यक्ति मेरे सामने खाली हाथ नहीं आएगा।

16 “दूसरा पवित्र पर्व कटनी का पर्व होगा। यह पवित्र पर्व ग्रीष्म के आरम्भ में, तब होगा जब तुम अपने खेतों में उगायी गई फसल को काटोगे।

“तीसरा पवित्र पर्व बटोरने का पर्व होगा। यह पतझड़ में होगा।* यह उस समय होगा जब तुम अपनी सारी फसलें खेतों से इकट्ठा करते हो।

17 “इस प्रकार प्रति वर्ष तीन बार सभी पुरुष यहोवा परमेश्वर के सामने उपस्थित होंगे।

18 “जब तुम किसी जानवर को मारो और इसका ख़ून बलि के रूप में भेंट चढ़ाओ तब ऐसी रोटी भेंट नहीं करो जिसमें खमीर हो। और जब तुम इस बलि के माँस को खाओ तब तुम्हें एक ही दिन में वह सारा माँस खा लेना चाहिए। अगले दिन के लिए कुछ भी माँस न बचाओ।

* **23:16:** पतझड़ में होगा शाब्दिक, “वर्ष के अन्त में।” इसका अर्थ फसल उगाने के मौसम की समाप्ति है।

19 “फसल काटने के समय जब तुम अपनी फ़सलें इकट्ठी करो
तब अपनी काटी हुई फ़सल की पहली उपज अपने यहोवा परमेश्वर
के भवन में लाओ।
“तुम्हें छोटी बकरी के उस माँस को नहीं खाना चाहिए जो उस
बकरी की माँ के दूध में पका हो।”

परमेश्वर इस्राएलियों को उनकी भूमि लेने में सहायता करेगा

20 परमेश्वर ने कहा, “मैं तुम्हारे सामने एक दूत भेज रहा हूँ। यह
दूत तुम्हें उस स्थान तक ले जाएगा जिसे मैंने तुम्हारे लिए तैयार
किया है। यह दूत तुम्हारी रक्षा करेगा। 21 दूत की आज्ञा मानो और
उसका अनुसरण करो। उसके विरुद्ध विद्रोह न करो। वह दूत उन
अपराधों को क्षमा नहीं करेगा जो तुम उसके प्रति करोगे। उसमें मेरी
शक्ति निहित है। 22 वह जो कुछ कहे उसे मानो। तुम्हें हर एक वह
कार्य करना चाहिए जो मैं तुम्हें कहता हूँ। यदि तुम यह करोगे तो मैं
तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हारे सभी शत्रुओं के विरुद्ध होऊँगा और
मैं उस हर व्यक्ति का शत्रु होऊँगा जो तुम्हारे विरुद्ध होगा।”
23 परमेश्वर ने कहा, “मेरा दूत तुम्हें इस देश से होकर ले जाएगा।
वह तुम्हें कई भिन्न लोगों—एमोरी, हित्ती, परिज्जी, कनानी, हिब्बी
और यबूसी के विरुद्ध कर देगा। किन्तु मैं उन सभी लोगों को नष्ट
कर दूँगा।
24 “उनके देवताओं को मत पूजो। उन देवताओं को झूककर
कभी प्रणाम मत करो। तुम उस ढंग से कभी न रहो जिस ढंग से
वे रहते हैं। तुम्हें उनकी मूर्तियों को निश्चय ही नष्ट कर देना चाहिए
और तुम्हें उनके प्रस्तर पिण्ड़ों को तोड़ देना चाहिए जो उन्हें उनके
देवताओं को याद दिलाने में सहायता करती है। 25 तुम्हें अपने
परमेश्वर यहोवा की सेवा करनी चाहिए। यदि तुम यह करोगे तो
मैं तुम्हें भरपूर रोटी और पानी का वरदान दूँगा। मैं तुम्हारी सारी
बीमारियो को दूर कर दूँगा। 26 तुम्हारी सभी स्त्रियाँ बच्चों को जन्म

देने लायक होंगी। जन्म के समय उनका कोई बच्चा नहीं मरेगा और मैं तुम लोगों को भरपूर लम्बा जीवन प्रदान करूँगा।

27 “जब तुम अपने शत्रुओं से लड़ोगे, मैं अपनी प्रबल शक्ति तुमसे
भी पहले वहाँ भेज दूँगा।† मैं तुम्हारे सभी शत्रुओं के हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा। वे लोग जो तुम्हारे विरुद्ध होंगे वे युद्ध में घबरा
कर भाग जाएंगे। 28 मैं तुम्हारे आगे—आगे बर्रे भेजूँगा वह तुम्हारे शत्रुओं को भागने के लिए विवश करेंगे। हिब्बी, कनानी और हित्ती
लोग तुम्हारा प्रदेश छोड़ कर भाग जाएंगे। 29 किन्तु मैं उन लोगों को तुम्हारे प्रदेश से बाहर जाने को शीघ्रतापूर्वक विवश नहीं करूँगा। मैं यह केवल एक वर्ष में नहीं करूँगा। यदि मैं लोगों को अति शीघ्रता से बाहर जाने को विवश करूँ तो प्रदेश ही निर्जन हो जाए। तब सभी प्रकार के जंगली जानवर बढ़ेंगे और वे तुम्हारे लिए बहुत कष्टकर
होंगे। 30 मैं उन्हें धीरे और उस समय तक बाहर खदेड़ता रहूँगा जब तक तुम उस धरती पर फैल न जाओ और उस पर अधिकार न कर लो।

31 “मैं तुम लोगों को लाल सागर से लेकर फरात तक का सारा प्रदेश दूँगा। पश्चिमी सीमा पलिश्ती सागर (भूमध्य सागर) होगा और पूर्वी सीमा अरब मरुभूमि होगी। मैं ऐसा करूँगा कि वहाँ के रहने वालों को तुम हराओ। और तुम इन सभी लोगों को वहाँ से भाग जाने के लिए विवश करोगे।

32 “तुम उनके देवताओं या उन लोगों में से किसी के साथ कोई
समझौता नहीं करोगे। 33 उन्हें अपने देश में मत रहने दो। यदि तुम उन्हें रहने दोगे तो तुम उनके जाल में फँस जाओगे। वे तुमसे मेरे विरुद्ध पाप करवाएंगे और तुम उनके देवताओं की सेवा आरम्भ कर दोगे।”

† **23:27:** मैं … दूँगा या मेरी शक्ति का समाचार तुमसे पहले पहुँच जाएगा और तुम्हारे शत्रु डर जाएंगे।

24

परमेश्वर का इस्राएल से वाचा

1 परमेश्वर ने मूसा से कहा, “तुम हारून, नादाब, अबीहू और
इस्राएल के सत्तर बुज़ुर्ग (नेता) पर्वत पर आओ और कुछ दूर से
मेरी उपासना करो। 2 तब मूसा अकेले यहोवा के समीप आएगा।
अन्य लोग यहोवा के समीप न आएँ, और शेष व्यक्ति पर्वत तक भी
न आएँ।”

3 इस प्रकार मूसा ने यहोवा के सभी नियमों और आदेशों को
लोगों को बताया। तब सभी लोगों ने कहा, “यहोवा ने जिन सभी
आदेशों को दिया उनका हम पालन करेंगे।”

4 इसलिए मूसा ने यहोवा के सभी आदेशों को चर्म पत्र पर लिखा।
अगली सुबह मूसा उठा और पर्वत की तलहटी के समीप उसने एक
वेदी बनाई और उसने बारह शिलाएँ इस्राएल के बारह कबीलों के
लिए स्थापित कीं। 5 तब मूसा ने इस्राएल के युवकों को बलि चढ़ाने
के लिए बुलाया। इन व्यक्तियों ने यहोवा को होमबलि और मेलबलि
के रूप में बैल की बलि चढ़ाई।

6 मूसा ने इन जानवरों के खून को इकट्ठा किया। मूसा ने आधा
खून प्याले में रखा और उसने दूसरा आधा खून वेदी पर छिड़का।*

7 मूसा ने चर्म पत्र पर लिखे विशेष साक्षीपत्र को पढ़ा। मूसा ने
साक्षीपत्र को इसलिए पढ़ा कि सभी लोग उसे सुन सकें और लोगों
ने कहा, “हम लोगों ने उन नियमों को जिन्हें यहोवा ने हमें दिया, सुन
लिया है और हम सब लोग उनके पालन करने का वचन देते हैं।”

8 तब मूसा ने खून को लिया और उसे लोगों पर छिड़का। उसने
कहा, “यह खून बताता है कि यहोवा ने तुम्हारे साथ विशेष साक्षीपत्र
स्थापित किया। ये नियम जो यहोवा ने दिए है वे साक्षीपत्र को स्पष्ट
करते है।”

---

* **24:6:** मूसा … छिड़का खून यहोवा और लोगों के बीच की वाचा की पुष्टि के लिए प्रयोग में आता था। खून वेदी पर यह दिखाने के लिए डाला जाता था कि यहोवा वाचा में साथ है।

9 तब मूसा, हारून, नादाब, अबीहू और इस्राएल के सत्तर बुजुर्ग
(नेता) ऊपर पर्वत पर चढ़े। 10 पर्वत पर इन लोगों ने इस्राएल के
परमेश्वर को देखा। परमेश्वर किसी ऐसे आधार पर खड़ा था। जो
नीलमणि सा दिखता था ऐसा निर्मल जैसा आकाश। 11 इस्राएल के
सभी नेताओं ने परमेश्वर को देखा, किन्तु परमेश्वर ने उन्हें नष्ट नहीं
किया।† तब उन्होंने एक साथ खाया और पिया।

मूसा को पत्थर की पट्टियाँ मिली

12 यहोवा ने मूसा से कहा, "मेरे पास पर्वत पर आओ। मैंने अपने
उपदेशों और आदेशों को दो समतल पत्थरों पर लिखा है। ये उपदेश
लोगों के लिए हैं। मैं इन समतल पत्थरों को तुम्हें दूँगा।"

13 इसलिए मूसा और उसका सहायक यहोशू परमेश्वर के पर्वत
तक गए। 14 मूसा ने चुने हुए बुजुर्गो से कहा, "हम लोगों की यहीं
प्रतीक्षा करो, हम तुम्हारे पास लौटेंगे। जब तक मैं अनुपस्थित रहूँ,
हारून और हूर आप लोगों के अधिकारी होंगे। यदि किसी को कोई
समस्या हो तो वह उनके पास जाए।"

मूसा का परमेश्वर से मिलना

15 तब मूसा पर्वत पर चढ़ा और बादल ने पर्वत को ढक लिया।
16 यहोवा की दिव्यज्योति सीनै पर्वत पर उतरी। बादल ने छः दिन
तक पर्वत को ढके रखा। सातवें दिन यहोवा, बादल में से मूसा से
बोला। 17 इस्राएल के लोग यहोवा की दिव्यज्योति को देख सकते
थे। वह पर्वत की चोटी पर दीप्त प्रकाश की तरह थी।

18 तब मूसा बादलों में और ऊपर पर्वत पर चढ़ा। मूसा पर्वत पर
चालीस दिन और चालीस रात रहा।

---

† **24:11:** परमेश्वर … किया बाइबल कहती है कि यहोवा अदृश्य है। उसे देखा नहीं जा सकता। किन्तु यहोवा चाहता था कि वे प्रमुख उसे किसी विशेष प्रकार से देख सके सो यहोवा ने उन्हें अपना दर्शन करने दिया।

25

पवित्र वस्तुओं के लिए भेंट

1 यहोवा ने मूसा से कहा, 2 “इस्राएल के लोगों से मेरे लिए भेंट
लाने को कहो। हर एक व्यक्ति अपने मन में निश्चय करे कि वह मुझे
इन वस्तुओं में से क्या अर्पित करना चाहता है। इन उपहारों को मेरे
लिए अर्पित करो। 3 इन वस्तुओं की सूची यह है जिन्हें तुम लोगों से
स्वीकार करोगे, सोना, चाँदी, काँसा; 4 नीला, बैंगनी और लाल सूत,
सुन्दर रेशमी कपड़ा; बकरियों के बाल, 5 लाल रंग से रंगा भेड़ का
चमड़ा, सुइसों के चमड़ें, बबूल की लकड़ी, 6 दीपक में जलाने का
तेल, धूप के लिए सुगन्धित द्रव्य, अभिषेक के तेल के लिए भीनी
सुगन्ध देने वाले मसाले। 7 गोमेदक रत्न तथा अन्य मूल्यवान रत्न
भी जो याजकों के पहनने की एफोद और न्याय की थैली पर जड़े
जाएं, अर्पित करो।”

पवित्र तम्बू

8 परमेश्वर ने यह भी कहा, “लोग मेरे लिए एक पवित्र तम्बू
बनाएंगे। तब मैं उनके साथ रह सकूँगा। 9 मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि
पवित्र तम्बू कैसा दिखाई पड़ना चाहिए। मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि
इसमें सभी चीज़ें कैसी दिखाई देनी चाहिए। जैसा मैंने दिखाया है हर
एक चीज़ ठीक वैसे ही बनाओ।

साक्षीपत्र का सन्दूक

10 “बबूल की लकड़ी का उपयोग करके एक विशेष सन्दूक
बनाओ। वह सन्दूक निश्चय ही पैतालिस इंच* लम्बा, सत्ताईस इंच†
चौड़ा और सत्ताईस इंच ऊँचा होना चाहिए। 11 सन्दूक को भीतर
और बाहर से ढकने के लिए शुद्ध सोने का उपयोग करो। सन्दूक के
कोनों को सोने से मढ़ो। 12 सन्दूक को उठाने के लिए सोने के चार

---

* **25:10:** पैतालिस इंच शाब्दिक, “ढाई हाथ।” † **25:10:** सत्ताईच इंच शाब्दिक, “डेढ़ हाथ।”

कड़े बनाओ। सोने के कड़ो को चारों कोनों पर लगाओ। दोनों तरफ
दो—दो कड़े हों। 13 तब सन्दूक ले चलने के लिए बल्लियाँ बनाओ।
ये बल्लियाँ बबूल की लकड़ी की बनी हो और सोने से मढ़ी होनी
चाहिए। 14 सन्दूक के बगलों के कोनों पर लगे कड़ों में इन बल्लियों
को डाल देना। इन बल्लियों का उपयोग सन्दूक को ले जाने के लिए
करो। 15 ये बल्लियाँ सन्दूक के कड़ों में सदा पड़ी रहनी चाहिए।
बल्लियों को बाहर न निकालो।"

16 परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हें साक्षीपत्र दूँगा। इस साक्षीपत्र को
इस सन्दूक में रखो। 17 तब एक ढक्कन बनाओ। इसे शुद्ध सोने का
बनाओ। इसे पैंतालिस इंच लम्बा और सत्ताईस इंच चौड़ा बनाओ।
18 तब दो करूब बनाओ और उन्हें ढक्कन के दोनों सिरों पर लगाओ।
इन करूबों को बनाने के लिए स्वर्ण पत्रों का उपयोग करो। 19 एक
करूब को ढक्कन के एक सिरे पर लगाओ तथा दूसरे को दूसरे सिरे
पर। करूब और ढक्कन को परस्पर जोड़ कर के एक इकाई के रूप
में बनाया जाए। 20 करूब एक दूसरे के आमने—सामने होने चाहिए।
करूबों के मुख ढक्कन की ओर देखते हुए होने चाहिए। करूबों के
पंख ढक्कन पर फैले हों।

21 "मैंने तुमको साक्षीपत्र का जो प्रमाण दिया है उसे साक्षीपत्र के
सन्दूक में रखो और विशेष ढक्कन से सन्दूक को बन्द करो। 22 जब
मैं तुमसे मिलूँगा तब मैं करूबो के बीच से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक
के विशेष ढक्कन पर है, बात करूँगा। मैं अपने सभी आदेश इस्राएल
के लोगों को उसी स्थान से दूँगा।"

विशेष रोटी की मेज

23 "बबूल की लकड़ी का एक मेज़ बनाओ। मेज़ छत्तीस इंच‡
लम्बा अट्ठारह इंच चौड़ा और सत्ताईस इंच ऊँचा होना चाहिए।
24 मेज़ को शुद्ध सोने से मढ़ो और उसके चारों ओर सोने की झालर

‡ **25:23:** छत्तीस इंच शाब्दिक, "दो हाथ।"

लगाओ। 25 तब तीन इंच चौड़ा सोने का चौखरा मेज के ऊपर चारों
ओर जड़ दो और उसके चारों ओर सोने की झालर लगाओ। 26 तब
सोने के चार कड़े बनाओ और मेज़ के चारों कोनों पर पायों के पास
लगाओ। 27 हर एक पाए पर एक कड़ा लगा दो। जो मेज़ के ऊपर
की चारों ओर की सजावट के समीप हो। इन कड़ों में मेज़ को ले
जाने के लिए बनी बल्लियाँ फँसी होंगी। 28 बल्लियाँ को बनाने के लिए
बबूल की लकड़ी का उपयोग करो और उन्हें सोने से मढ़ो। बल्लियाँ
मेज़ को ले जाने के लिए हैं। 29 पात्र, तवे, मर्तबान और अर्ध के लिए
कटोरे इन सबको शुद्ध सोने का बनाना। 30 विशेष रोटी मेज़ पर मेरे
सम्मुख रखो। यह सदैव मेरे सम्मुख वहाँ रहनी चाहिए।”

दीपाधार

31 “तब तुम्हें एक दीपाधार बनाना चाहिए। दीपाधार के हर एक
भाग को बनाने के लिए शुद्ध सोने के पत्तर तैयार करो। सुन्दर
दिखने के लिए दीप पर फूल बनाओ। ये फूल, इनकी कलियाँ और
पंखुडियाँ शुद्ध सोने की बनी होनी चाहिए और वे सभी चीज़ें एक
ही में जुड़ी हुई होनी चाहिए।

32 “दीपाधार की छः शाखाएँ होनी चाहिए। तीन शाखाएँ एक ओर
और तीन शाखाएँ दूसरी ओर होनी चाहिए। 33 हर शाखा पर बादाम
के आकार के तीन प्याले होने चाहिए। हर प्याले के साथ एक कली
और एक फूल होना चाहिए। 34 और स्वयं दीपाधार पर बादाम के
फूल के आकार के चार और प्याले होने चाहिए। इन प्यालों के
साथ भी कली और फूल होने चाहिए। 35 दीपाधार से निकलने वाली
छः शाखाएँ दो दो के तीन भागों में बटीं होनी चाहिए। हर एक दो
शाखाओं के जोड़े के नीचे एक एक कली बनाओ जो दीपाधार से
निकलती हो। 36 ये सभी शाखाएँ और कलियाँ दीपाधार के साथ
एक इकाई बननी चाहिए। और हर एक चीज शुद्ध सोने से तैयार
की जानी चाहिए। 37 तब सात छोटे दीपक दीपाधार पर रखे जाने
के लिए बनाओ। ये दीपक दीपाधार के सामने के स्थान को प्रकाश

देंगे। 38 दीपक की बतियाँ बुझाने के पात्र और तश्तरियाँ शुद्ध सोने
की बनानी चाहिए। 39 पचहत्तर पौंड§ शुद्ध सोने का उपयोग दीपाधार
और इसके साथ की सभी चीज़ों को बनाने में करें। 40 सावधानी के
साथ हर एक चीज़ ठीक—ठीक उसी ढँग से बनायी जाए जैसी मैंने
पर्वत पर तुम्हें दिखाई है।”

26

पवित्र तम्बू

1 यहोवा ने मूसा से कहा, “पवित्र तम्बू दस कनातों से बनाओ।
इन कनातों को अच्छे रेशम तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़ों से
बनाओ। किसी कुशल कारीगर को चाहिए कि वह करूबों को पंख
सहित कनातों पर काढ़े। 2 हर एक कनात को एक बराबर बनाओ।
हर एक कनात चौदह गज़* लम्बी और दो गज† चौड़ी होनी चाहिए।
3 सभी कनातों को दो भागों में सीओ। एक भाग में पाँच कनातों को
एक साथ सीओ और दूसरे भाग में पाँच को एक साथ। 4 आखिरी
कनात के सिरे के नीचे छल्ले बनाओ। इन छल्लों को बनाने के लिए
नीला कपड़ा उपयोग में लाओ। कनातों के दोनों भागों में एक और
नीचे छल्ले होंगे। 5 पहले भाग की आखिरी कनात में पचास छल्ले होंगे
और दूसरे भाग की आखिरी कनात में पचास। 6 तब पचास सोने के
कड़े छल्लों को एक साथ मिलाने के लिए बनाओ। यह कनातों को
इस प्रकार जोड़ेंगे कि पवित्र तम्बू एक ही हो जाएगा।”

7 “तब तुम दूसरा तम्बू बनाओगे जो पवित्र तम्बू को ढकेगा। इस
तम्बू को बनाने के लिए बकरियों के बाल से बनी ग्यारह कनातों का
उपयोग करो। 8 ये सभी कनातें एक बराबर होनी चाहिए। वे पन्द्रह
गज‡ लम्बी और दो गज चौड़ी होनी चाहिए। 9 एक भाग में पाँच
कनातों को एक साथ सीओ तब बाकी छः कनातों को दूसरे भाग

§ **25:39:** पचहत्तर पौंड शाब्दिक, “एक किक्कार।” * **26:2:** चौदह गज शाब्दिक, “अट्ठाइस हाथ।” † **26:2:** दो गज शाब्दिक, “चार हाथ।” ‡ **26:8:** पन्द्रह गज शाब्दिक, “तीस हाथ।”

में एक साथ सीओ। छठी कनात का उपयोग तम्बू के सामने के पर्दे
के लिए करो। इसे इस प्रकार लपेटो कि यह द्वार की तरह खुले।
10 एक भाग की आखिरी कनात के सिरे पर पचास छल्ले बनाओ,
ऐसा ही दूसरे भाग की आखिरी कनात के लिए करो। 11 तब पचास
काँसे के कड़े बनाओ। इन काँसे के कड़ों का उपयोग छल्लों को
एक साथ जोड़ने के लिए करो। ये कनातों को एक साथ तम्बू के
रूप में जोड़ेंगे। 12 ये कनातें पवित्र तम्बू से अधिक लम्बी होंगी। इस
प्रकार अन्त के कनात का आधा हिस्सा तम्बू के पीछे किनारों के
नीचे लटका रहेगा।" 13 "वहाँ अट्ठारह इंच§ कनात तम्बू के बगलों
में निचले किनारों से लटकती रहेगी। यह तम्बू को पूरी तरह ढक
लेगी। 14 बाहरी आवरण को ढकने के लिए दो अन्य पर्दे बनाओ।
एक लाल रंगे मेढ़े के चमड़े से बनाना चाहिए तथा दूसरा पर्दा सुइसों
के चमड़े का बना होना चाहिए।

15 "तम्बू के सहारे के लिए बबूल की लकड़ी के तख़्ते बनाओ।
16 तख्ते पन्द्रह फुट** लम्बे और सत्ताईस इंच चौड़े होने चाहिए।
17 हर तख़्ता एक जैसा होना चाहिए। हर एक तख़्ते के तले में††
उन्हें जोड़ने के लिए साथ—साथ दो खूंटियाँ होनी चाहिए। 18 तम्बू
के दक्षिणी भाग के लिए बीस तख़्ते बनाओ। 19 ढाँचे के ठीक नीचे
चाँदी के दो आधार हर एक तख़्ते के लिए होने चाहिए। इसलिए
तुम्हें तख़्तें के लिए चाँदी के चालीस आधार बनाने चाहिए। 20 तम्बू
के (उत्तरी भाग) के लिए बीस तख़्ते और बनाओ। 21 इन तख़्तों के
लिए भी चाँदी के चालीस आधार बनाओ, अर्थात् एक तख़्ते के लिए
दो आधार। 22 तुम्हें तम्बू के (पश्चिमी छोर) के लिए छः और तख्ते
बनाने चाहिए। 23 दो तख़्ते पिछले कोनों के लिए बनाओ। 24 कोने
के दोनों तख़्ते एक साथ जोड़ देने चाहिए। तले में दोनों तख़्तों की

---

§ **26:13:** अट्ठारह इंच शाब्दिक, "एक हाथ।" ** **26:16:** पन्द्रह फुट शाब्दिक, "दस हाथ।" †† **26:17:** तले में धातु के आधार पर बने छेटों में ये खूंदियाँ बैठाई जाएंगी जिससे तख़्ते कनातों के लिए खड़े ढाँचे बन सकें।

खूँटियाँ चाँदी के एक ही आधार में लगेंगी और ऊपर धातु का एक
छल्ला दोनों तख़्तों को एक साथ रखेगा। 25 इस प्रकार सब मिलाकर
आठ तख्तें तम्बू के सिरे के लिए होंगे और हर तख़्ते के नीचे दो
आधारों के होने से सोलह चाँदी के आधार पश्चिमी छोर के लिए
होंगे।”

26 “बबूल की लकड़ी का उपयोग करो और तम्बू के तख़्तों के
लिए कुण्डियाँ बनाओ। तम्बू के पहले भाग के लिए पाँच कुण्डियाँ
होंगी। 27 और तम्बू के दूसरे भाग के ढाँचे के लिए पाँच कुण्डियाँ
होंगी। और तम्बू के (पश्चिमी भाग) के ढाँचे के लिए पाँच कुण्डियाँ
होंगी अर्थात् तम्बू के पीछे। 28 पाँचों कुण्डियों के बीच की कुण्डी
तख़्तों के मध्य में होनी चाहिए। यह कुण्डी तख़्तों के एक सिरे से
दूसरे सिरे तक पहुँचनी चाहिए।‡‡

29 “तख़्तों को सोने से मढ़ो और तख़्तों की कुण्डियों को फँसाने
के लिए कड़े बनवाओ। ये कड़े भी सोने के ही बनने चाहिए।
कुण्डियों को भी सोने से मढ़ो। 30 पवित्र तम्बू को तुम उसी ढंग
की बनाओ जैसा मैंने तुम्हें पर्वत पर दिखाया था।

पवित्र तम्बू का भीतरी भाग

31 “सन के अच्छे रेशों का उपयोग करो और तम्बू के भीतरी भाग
के लिए एक विशेष पर्दा बनाओ। इस पर्दे को नीले, बैंगनी और
लाल रंग के कपड़े से बनाओ। करूब के प्रतिरूप कपड़े में काढ़ो।
32 बबूल की लकड़ी के चार खम्भे बनाओ। चारों खम्भों पर सोने
की बनी खूँटियाँ लगाओ। खम्भों को सोने से मढ़ दो। खम्भों के नीचे
चाँदी के चार आधार रखो। तब सोने की खूँटियों में पर्दा लटकाओ।
33 खूँटियों पर पर्दे को लटकाने के बाद, साक्षीपत्र के सन्दूक को
पर्दे के पीछे रखो। यह पर्दा पवित्र स्थान को सर्वाधिक पवित्र स्थान

‡‡ **26:28:** यह … चाहिए या मध्यवर्ती कुण्डी तख्तों से होती हुई एक सिरे से दूसरे सिरे तक होनी चाहिए।

से अलग करेगा। 34 सर्वाधिक पवित्र स्थान में साक्षीपत्र के सन्दूक
पर ढक्कन रखो।

35 "पवित्र स्थान में पर्दे के दूसरी ओर विशेष मेज़ को रखो। मेज़
तम्बू के उत्तर में होनी चाहिए। तब दीपाधार को तम्बू के दक्षिण में
रखो। दीपाधार मेज़ के ठीक सामने होगा।

पवित्र तम्बू का मुख्य द्वार

36 "तब तम्बू के मुख्य द्वार के लिए एक पर्दा बनाओ। इस पर्दे
को बनाने के लिए नीले बैंगनी, लाल कपड़े तथा सन के उत्तम रेशों
का उपयोग करो और कपड़े में चित्रों की कढ़ाई करो। 37 द्वार के
इस पर्दे के लिए सोने के छल्ले बनावाओ। सोने से मढ़े बबूल की
लकड़ी के पाँच खम्भे बनाओ और पाँचों खम्भों के लिए काँसे के
पाँच आधार बनाओ।"

27

भेंट जलाने के लिए वेदी

1 यहोवा ने मूसा से कहा, "बबूल की लकड़ी का उपयोग करो
और एक वेदी बनाओ। वेदी वर्गाकार होनी चाहिए। यह साढ़े सात
फूट* लम्बी साढ़े सात फूट चौड़ी और साढ़े चार फुट† ऊँची होनी
चाहिए। 2 वेदी के चारों कोनों पर सींग बनाओ। हर एक सींग को
इसके कोनों से ऐसे जोड़ो कि सभी एक हो जाए तब वेदी को काँसे
से मढ़ो।

3 "वेदी पर काम आने वाले सभी उपकरणों और तश्तरियों को
काँसे का बनाओ। काँसे के बर्तन, पल्टे, कटोरे, काँटे और तसले
बनाओ। ये वेदी से राख को निकालने में काम आएंगे। 4 जाल के
जैसी काँसे की एक बड़ी जाली बनाओ। जाली के चारों कोनों पर
काँसे के कड़े बनाओ। 5 जाली को वेदी की परत के नीचे रखो।
जाली वेदी के भीतर बीच तक रहेगी।

---

* **27:1:** साढ़े सात फुट शाब्दिक, "पाँच हाथ।" † **27:1:** साढ़े चार फुट शाब्दिक, "तीन हाथ।"

6 “वेदी के लिए बबूल की लकड़ी के बल्ले बनाओ और उन्हें काँसे
से मढ़ो। 7 वेदी के दोनों ओर लगे कड़ो में इन बल्लों को डालो। इन
बल्लों को वेदी को ले जाने के लिए काम में लो। 8 वेदी भीतर से
खोखली रहेगी और इसकी अगल—बगल तख्तों की बनी होगी।
वेदी वैसी ही बनाओ जैसी मैंने तुमको पर्वत पर दिखाई थी।

पवित्र तम्बू का आँगन

9 “तम्बू के चारों ओर कनातों की एक दीवार बनाओ। यह तम्बू
के लिए एक आँगन बनाएगी। दक्षिण की ओर कनातों की यह
दीवार पचास गज‡ लम्बी होनी चाहिए। ये कनातें सन के उत्तम
रेशों से बनी होनी चाहिए। 10 बीस खम्भों और उनके नीचे बीस
काँसे के आधारों का उपयोग करो। खम्भों के छल्लें और पर्दे की
छड़े§ चाँदी की बननी चाहिए। 11 उत्तर की ओर लम्बाई उतनी ही
होनी चाहिए जितनी दक्षिण की ओर थी। इसमें पचास गज़ लम्बी
पर्दो की दीवार, बीस खम्भे और बीस काँसे के आधार होने चाहिए।
खम्भे और उनके पर्दो की छड़ों के छल्ले चाँदी के बनने चाहिए।”
12 “आँगन के पश्चिमी सिरे पर कनातों की एक दीवार पच्चीस गज
लम्बी होनी चाहिए। वहाँ उस दीवार के साथ दस खम्भे और दास
आधार होने चाहिए। 13 आँगन का पूर्वी सिरा भी पच्चीस गज लम्बा
होना चाहिए। 14 यह पूर्वी सिरा आँगन का प्रवेश द्वार है। 15 प्रवेश
द्वार की हर एक ओर की कनातें साढ़े सात गज लम्बी होनी चाहिए।
उस ओर तीन खम्भे और तीन आधार होने चाहिए।”
16 “एक कनात दस गज** लम्बी आँगन के प्रवेश द्वार को ढ़कने
के लिए बनाओ। इस कनात को सन के उत्तम रेशों और नीले, लाल
और बैंगनी कपड़े से बनाओ। इन कनातों पर चित्रों को काढ़ो। उस
पर्दे के लिए चार खम्भे और चार आधार होने चाहिए। 17 आँगन के

---

‡ **27:9:** पचास गज़ शाब्दिक, “सौ हाथ।” § **27:10:** छड़े ये या तो खम्भों को एक साथ जोड़ने वाली छड़े थी या पर्दे में सिले कड़े थे। ** **27:16:** दस गज शाब्दिक, “बीस हाथ।”

चारों ओर के सभी खम्भे चाँदी की छड़ों से ही जोड़े जाने चाहिए।††
खम्भों के छल्ले चाँदी के बनाने चाहिए और खम्भों के आधार काँसे
के होने चाहिए। 18 आँगन पचास गज लम्बा और पच्चीस गज‡‡
चौड़ा होना चाहिए। आँगन के चारों ओर की दीवार साढ़े सात फुट
ऊँची होनी चाहिए। पर्दा सन के उत्तम रेशों का बना होना चाहिए।
सभी खम्भों के नीचे के आधार काँसे के होने चाहिए। 19 सभी
उपकरण, तम्बू की खूँटियाँ और तम्बू में लगी हर एक चीज़ काँसे
की ही बननी चाहिए। और आँगन के चारों ओर के पर्दो के लिए
खूँटियाँ काँसे की ही होनी चाहिए।

दीपक के लिए तेल

20 "इस्राएल के लोगों को सर्वोत्तम जैतून का तेल लाने का आदेश
दो। इस तेल का उपयोग हर एक सन्ध्या को जलने वाले दीपक
के लिए करो। 21 हारून और उसके पुत्र प्रकाश का प्रबन्ध करने
का कार्य संभालेंगे। वे मिलापवाले तम्बू के पहले कमरे में जाएंगे।
यह कमरा साक्षीपत्र के सन्दूक वाले कमरे के बाहर उस पर्दे के
सामने है जो दोनों कमरों को अलग करता है। वे इसका ध्यान
रखेंगे कि इस स्थान पर यहोवा के सामने दीपक सन्ध्या से प्रातः
तक लगातार जलते रहेंगे। इस्राएल के लोग और उनके वंशज इस
नियम का पालन सदैव करेंगे।"

28

याजकों के वस्त्र

1 "अपने भाई हारून और उसके पुत्रों नादाब, अबीहू, एलिआजार
और ईतामर को इस्राएल के लोगों में से अपने पास आने को कहो।
ये व्यक्ति मेरी सेव याजक के रूप में करेंगे।" 2 "अपने भाई हारून
के लिए विशेष वस्त्र बनाओ। ये वस्त्र उसे आदर और गौरव देंगे।
3 लोगों में ऐसे कुशल कारीगर है जो ये वस्त्र बना सकते हैं। मैंने

---

†† **27:17:** आँगन … चाहिए ये सम्भवत: पर्दे की छड़ें हैं जिनका वर्णन संख्या दस में हुआ है। ‡‡ **27:18:** पच्चीस गज शाब्दिक, "पचास हाथ।"

इन व्यक्तियों को विशेष बुद्धि दी है। उन लोगों से हारून के लिए
वस्त्र बनाने को कहो। ये वस्त्र बताएंगे कि वह मेरी सेवा विशेष रूप
से करता है। तब वह मेरी सेवा याजक के रूप में कर सकता है।
4 कारीगरों को इन वस्त्रों को बनाना चाहिए न्याय का थैला एपोद
बिना बाँह की विशेष एपोद एक नीले रंग का लबादा, एक सफेद
बुना चोगा, सिर को ढकने के लिए एक साफा और एक पटुका
लोगों को ये विशेष वस्त्र तुम्हारे भाई हारून और उसके पुत्र मेरी
सेवा याजक के रूप में कर सकते हैं। 5 लोगों से कहो कि वे सुनहरे
धागों, सन के उत्तम रेशों तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़े उपयोग
में लाएं।

एपोद और पटुका

6 "एपोद बनाने के लिए सुनहरे धागे, सन के उत्तम रेशों तथा
नीले, लाल और बैंगनी कपड़े का उपयोग करो। इस विशेष एपोद
को कुशल कारीगर बनाएंगे। 7 एपोद के हर एक कंधे पर पट्टी लगी
होगी। कंधे की ये पट्टियाँ एपोद के दोनों कोनों पर बंधी होंगी।

8 "कारीगर बढ़ी सावधानी से एपोद पर बाँधने के लिए एक
पटुका बुनेंगे। (यह पटुका उन्हीं चीज़ों का होगा जिनका एपोद,
सुनहरे धागे, सन के उत्तम रेशों और बैंगनी कपड़े।)

9 "तुम्हें दो गोमेदक रत्न लेने चाहिए। इन नगों पर इस्राएल के
बारह पुत्रों के नाम खोदो। 10 छः नाम एक नग पर और छः नाम
दूसरे नार पर। नामों को सबसे बड़े से सबसे छोटे के क्रम में लिखो।
11 इस्राएल के पुत्रों के नामों को इन नगों पर खुदवाओ। यह उसी
प्रकार करो जिस प्रकार वह व्यक्ति जो मुहरें बनाता है, शब्द और
चित्रों को खोदता है। नग के चारों ओर सोना लगाओ जिससे उन्हें
एपोद के कंधो पर टाँका जा सके। 12 तब एपोद के हर एक कंधे
के पट्टी पर इन दोनों नगों को जड़ो। हारून यहोवा के सम्मुख जब
खड़ा होगा, इस विशेष एपोद को पहनेगा और इस्राएल के पुत्रों के
नाम वाले दोनों नग एपोद पर होंगे। यह इस्राएल के लोगों को याद

रखने में यहोवा की सहायता करेगा। 13 अच्छा सोना ही नगों को
एपोद पर ढाँकने के लिए उपयोग में लाओ। 14 रस्सी की तरह एक
में शुद्ध सोने की जंजीरे बटो। सोने की ऐसी दो जंजीरे बनाओ और
सोने के जड़ाव के साथ इन्हें बांधो।”

सीनाबन्द

15 “महायाजक के लिए सीनाबन्द बनाओ। कुशल कारीगर इस
सीनाबन्द को वैसे ही बनाए जैसे एपोद को बनाया। वे सुनहरे
धागे, सन के उत्तम रेशों तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़े का
उपयोग करें। 16 सीनाबन्द नौ इंच लम्बा और नौ इंच* चौड़ा होना
चाहिए। चौकोर जेब बनाने के लिए इसकी दो तह करनी चाहिए।
17 सीनाबन्द पर सुन्दर रत्नों की चार पक्तियाँ जड़ो। रत्नों की पहली
पंक्ति में एक लाल, एक पुखराज और एक मर्कत मणि होनी चाहिए।
18 दूसरी पंक्ति मे फिरोजा, नीलम तथा पन्ना होना चाहिए। 19 तीसरी
पंक्ति मे धुम्रकान्त, अकीक और याकूत लगना चाहिए। 20 चौथी
पंक्ति में लहसुनिया, गोमेदक रत्न और कपिश मणि लगानी चाहिए।
सीनाबन्द पर इन्हें लगाने के लिए उन्हें सोने मे जड़ो। 21 सीनाबन्द
पर बारह रत्न होंगे जो इस्राएल के बारह पुत्रों का एक प्रतिनिधित्व
करेंगे। हर एक नग पर इस्राएल के पुत्रों† में से एक—एक का नाम
लिखो। मुहर को तरह हर एक नग पर इन नामों को खोदो।

22 “सीनाबन्द के चारो और जाती हुई सोने की जंजीरें बनाओ।
ये जंजीर बटी हुई रस्सी की तरह होंगी। 23 दो सोने के छल्ले बनाओ
और इन्हें सीनाबन्द के दोनों कोनों पर लगाओ। 24 (दोनों सुनहरी
जंजीरों को सीनाबन्द में दोनों में लगे छल्लों में डालो।) 25 सोने की
जंजीरों को दूसरे सिरों को कंधे की पट्टियों पर के जड़ाव में लगाओ।
जिससे वे एपोद के साथ सोने पर कसे रहें। 26 दो अन्य सोने के छल्ले

---

* **28:16:** नौ इंच शाब्दिक, “बालिस्त” अँगूठे के सिरे से छोटी अँगूली के सिरे तक की दूरी। † **28:21:** इस्राएल के पुत्रों अर्थात् बारह वंशों के नाम, ये नाम इस्राएल (याकूब) के बारह पुत्रों के नाम पर ही रखे गए थे।

बनाओ और उन्हें सीनाबन्द के दूसरे दोनों कोनों पर लगाओ। यह
सीनाबन्द का भीतरी भाग एपोद के समीप होगा। 27 दो और सोने
के छल्ले बनाओ और उन्हें कंधे की पट्टी के तले एपोद के सामने
लगाओ। सोने के छल्लों को एपोद की पेटी के समीप ऊपर के स्थान
पर लगाओ। 28 सीनाबन्द के छल्लों को एपोद के छल्लों से जोड़ो।
उन्हें पेटी से एक साथ जोड़ने के लिए नीली पट्टियों का उपयोग
करो। इस प्रकार सीनाबन्द एपोद से अलग नहीं होगा।
29 "हारून जब पवित्र स्थान में प्रवेश करे तो उसे इस सीनाबन्द
को पहने रहना चाहिए। इस प्रकार इस्राएल के बारहों पुत्रों के नाम
उसके मन में रहेंगे और यहोवा को सदा ही उन लोगों की याद
दिलाई जाती रहेगी। 30 ऊरीम और तुम्मीम को सीनाबन्द में रखो।
हारून जब यहोवा के सामने जाएगा तब ये सभी चीज़ें उसे याद
होंगी। इसलिए हारून जब यहोवा के सामने होगा तब वह इस्राएल
के लोगों का न्याय करने का साधन सदा अपने साथ रखेगा।"

याजक के अन्य वस्त्र

31 "एपोद के नीचे पहनने के लिए एक चोगा बनाओ। चोगा
केवल नीले कपड़े का बनाओ। 32 सिर के लिए इस कपड़े के
बीचोबीच एक छेद बनाओ। इस छेद के चारों ओर गोट लगाओ
जिससे यह फटे नहीं। 33 नीले, लाल और बैंगनी कपड़े के फुदने
बनाओ जो अनार के आकार के हों। इन अनारों को चोगे के निचले
सिरे में लटकाओ और उनके बीच सोने की घंटियाँ लटकाओ।
34 इस प्रकार चोगे के निचले सिरे के चारों ओर क्रमशः एक अनार
और एक सोने की घंटी होगी। 35 हारून तब इस चोगे को पहनेगा
जब वह याजक के रूप में सेवा करेगा और यहोवा के सामने पवित्र
स्थान में जाएगा। जब वह पवित्र स्थान में प्रवेश करेगा और वहाँ
से निकलेगा तब ये घंटियाँ बजेंगी। इस प्रकार हारून मरेगा नहीं।‡
36 "शुद्ध सोने का एक पतरा बनाओ। सोने में मुहर की तरह शब्द
लिखो। ये शब्द लिखो: यहोवा के लिए पवित्र 37 सोने के इस पतरे

‡ **28:35:** इस … नहीं इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है। इससे पता चलता रहेगा कि हारून जीवित है।

को उस पगड़ी पर लगाओ जो सिर को ढकने के लिए पहनी गयी है।
उस पगड़ी से सोने के पतरे को बाँधने के लिए नीले कपड़े की पट्टी
का उपयोग करो। 38 हारून यह दर्शाने के लिए इसे अपने ललाट
पर पहनेगा कि इस्राएल के लोगों ने अपने अपराधों के लिए जो
पवित्र भेंटे यहोवा को अर्पित की है उनके अपराधों को प्रतीक रूप
में हारून वहन कर रहा है। हारून जब भी यहोवा के सामने जाएगा
ये सदा पहने रहेगा, ताकि यहोवा उन्हें स्वीकार कर ले।

39 "लबादा बनाने के लिए सन के उत्तम रेशों को उपयोग में लाओ
और उस कपड़े को बनाने के लिए भी सन के उत्तर रेशों को उपयोग
में लाओ जो सिर को ढ़कता है, इसमें कढ़ाई कढ़ी होनी चाहिए।
40 लबादा, पटुका और पगड़ियाँ हारून के पुत्रों के लिए भी बनाओ
ये उन्हें गौरव तथा आदर देंगे। 41 ये पोशाक अपने भाई हारून और
उसके पुत्रों को पहनाओ। उसके बाद जैतून का तेल उनके सिर
पर यह दिखाने के लिए डालो कि वे याजक हैं, यह उन्हें पवित्र
बनायेगा। तब वे मेरी सेवा याजक के रूप में करेंगे।

42 "उन के वस्त्रों को बनाने के लिए सन के उत्तम रेशों का उपयोग
करो जो विशेष याजक के वस्त्रों के नीचे पहनने के लिए होंगे। ये
अधोवस्त्र कमर से जाँघ तक पहने जाएंगे। 43 हारून और उसके
पुत्रों को इन वस्त्रों को ही पहनना चाहिए जब कभी वे मिलापवाले
तम्बू में जाएं। उन्हें इन्हीं वस्त्रों को पहनना चाहिए जब कभी वे
पवित्र स्थान में याजक के रूप में सेवा के लिए वेदी के समीप
आएं। यदि वे इन पोशाकों को नहीं पहनेंगे, तो वे अपराध करेंगे
और उन्हें मरना होगा। यह ऐसा नियम होना चाहिए जो हारून और
उसके बाद उसके वंश के लोगों के लिए सदा के लिए बना रहेगा।"

29

याजकों की नियुक्ति का उत्सव

1 "अब मैं तुम्हें बताऊँगा कि हारून और उसके पुत्र मेरी सेवा
विशेष रूप में करते है, यह दिखाने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए।
एक दोष रहित बछड़ा और दो दोष रहित मेढ़े लाओ। 2 जिसमें

खमीर न मिलाया गया हो ऐसा महीन आटा लो और उससे तीन
तरह की रोटीयाँ बनाओ—पहली बिना खमीर की सादी रोटी। दूसरी
तेल का मोमन डली रोटी और तीसरी वैसे ही आटे की छोटी पतली
रोटी बनाकर उस पर तेल चुपड़ो। 3 इन रोटियों को एक टोकरी में
रखो ओर फिर इस टोकरी को हारून और उसके पुत्रों को दो, साथ
ही वह बछड़ा और दोनों मेढ़े भी दो।

4 "तब हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के द्वार
के सामने लाओ, तब उन्हें पानी से नहलाओ। 5 हारून की विशेष
पोशाक उसे पहनाओ, लबादा, चोगा और एपोद। फिर उस पर
सीनाबन्द, फिर विशेष पटुका बाँधो 6 और फिर पगड़ी उसके सिर
पर बाँधो। सोने की पट्टी को जो एक विशेष मुकुट के जैसी है पगड़ी
के चारों ओर बाँधो 7 और जैतून का तेल डालो जो बताएगा कि
हारून इस काम के लिए चुना गया है।"

8 "तब उसके पुत्रों को उस स्थान पर लाओ और उन्हें चोगे
पहनाओ। 9 तब उनकी कमर के चारों ओर पटुके बाँधो। उन्हें पहनने
को पगड़ी दो। उस समय से वे याजक के रूप में काम करना आरम्भ
करेंगे। वे उस नियम के अनुसार जो सदा रहेगा, याजक होंगे। यही
ढंग है जिससे तुम हारून और उसके पुत्रों को याजक बनाओगे।"

10 "तब मिलापवाले तम्बू के सामने के स्थान पर बछड़े को
लाओ। हारून और उसके पुत्रों को चाहिए कि वे बछड़े के सिर
पर हाथ रखें। 11 तब उस बछड़े को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर
यहोवा के सामने मार डालो। 12 तब बछड़े का कुछ खून लो और
वेदी तक जाओ। अपनी उँगली से वेदी पर लगे सींगों पर कुछ खून
लगाओ। बचा हुआ सारा खून नीचे वेदी पर डालो। 13 तब बछड़े
में से सारी चर्बी निकालो। तब कलेजे के चारों ओर की चर्बी और
दोनों गुर्दे और उसकी चारों ओर की चर्बी लो। इस चर्बी को वेदी
पर जलाओ। 14 तब बछड़े के माँस, उसके चमड़े और उसके दूसरे
अंगों को लो और अपने डेरे से बाहर जाओ। इन चीज़ों को डेरे के

बाहर जलाओ। यह भेंट है जो याजकों के पापों को दूर करने के
लिए चढ़ाई जाती है।

15 “तब हारून और उसके पुत्रों से मेढ़े के सिर पर हाथ रखने
को कहो। 16 तब उस मेढ़े को मार डालो और उसके ख़ून को लो।
ख़ून को वेदी के चारों ओर छिड़को। 17 तब मेढ़े को कई टुकड़ों
में काटो। मेढ़े के भीतर के सभी अंगो और पैरों को धोओ। इन
चीज़ों को सिर तथा मेढ़े के अन्य टुकड़ों के साथ रखो। 18 तब वेदी
पर इन को जलाओ। यह वह विशेष भेंट है जो जलाई जाती है।
यह होमबलि यहोवा के लिए है। इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न
करेगी। यह ऐसी होमबलि है जो यहोवा को आग के द्वारा दी जाती
है।

19 “हारून और उसके पुत्रों को दूसरे मेढ़े पर हाथ रखने को कहो।
20 उस मेढ़े को मारो और उसका कुछ ख़ून लो। उस ख़ून को हारून
और उसके पत्रों के दाएं कान के निचले भाग में लगाओ। उनके
दाएँ हाथ के अंगूठों पर भी कुछ ख़ून लगाओ और कुछ ख़ून उनके
दाएँ पैर के अगूँठों पर लगाओ। बाकी के ख़ून को वेदी के चारों
ओर छिड़को। 21 तब वेदी पर छिड़के ख़ून में से कुछ ख़ून लो।
इसे अभिषेक के तेल में मिलाओ और हारून तथा उसके वस्त्रों पर
छिड़को और उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों पर भी छिड़को। यह
बताएगा कि हारून और उसके पुत्र मेरी सेवा विशेष रूप से करते
हैं। और यह सूचित करेगा कि उनके वस्त्र विशेष अवसर पर ही
काम में आते हैं।

22 “तब उस मेढ़े से चर्बी लो। (यही मेढ़ा है जिसका उपयोग
हारून को महायाजक बनाने में होगा।) पूँछ के चारों ओर की चर्बी
तथा उस चर्बी को लो जो शरीर के भीतर के अंगों को ढकती है,
कलेजे को ढकने वाली चर्बी को लो, दोनो गुर्दो और दाएँ पैर को
लो। 23 तब उस रोटी की टोकरी को लो जिसमें तुमने अख़मीरी
रोटियाँ रखी थीं। यही टोकरी है जिसे तुम्हें यहोवा के सम्मुख रखना

है। इन रोटियों को टोकरी से बाहर निकालो। एक रोटी, सादी, एक
तेल से बनी और एक छोटी पतली चुपड़ी हुई। 24 तब इन को हारून
और उसके पुत्रों को दो: फिर उनसे कहो कि वे यहोवा के सामने
इन्हें अपने हाथों में उठाएँ। यह यहोवा को विशेष भेंट होगी। 25 तब
इन रोटियों को हारून और उसके पुत्रों से लो और उन्हें वेदी पर मेढ़ें
के साथ रखो। यह एक होमबलि है, यह यहोवा को ऐसी भेंट होगी
जो आग के द्वारा दी जाती है। इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न
करेगी।"

26 "तब इस मेढ़े से उसकी छाती को निकालो। (यही मेढ़ा है
जिसका उपयोग हारून को महायाजक बनाने के लिए बलि दिया
जाएगा।) मेढ़े की छाती को विशेष भेंट के रूप में यहोवा के सामने
पकड़ो। जानवर का यह भाग तुम्हारा होगा। 27 तब मेढ़े की उस
छाती और टाँग को लो जो हारून को महायाजक बनाने के लिए
उपयोग में आयी थी। इन्हें पवित्र बनाओ और इन्हें हारून और
उसके पुत्रों को दो। वह भेंट का विशेष अंश होगा। 28 इस्राएल
के लोग इन अंगो को हारून और उसके पुत्रों को सदा देंगे। जब
कभी इस्राएल के लोग यहोवा को मेलबलि चढ़ायेंगे तो ये भाग
सदा याजकों के होंगे। जब वे इन भागों को याजकों को देंगे तो यह
यहोवा को देने जैसा ही होगा।

29 "उन विशेष वस्त्रों को सुरक्षित रखो जो हारून के लिए बने
थे। ये वस्त्र उसके उत्तराधिकारी वंशजों के लिए होंगे। वे उन वस्त्रों
को तब पहनेंगे जब याजक नियुक्त किए जाएँगे। 30 हारून का जो
पुत्र उसके बाद अगला महायाजक होगा, वह सात दिन तक उन
वस्त्रों को पहनेगा, जब वह मिलापवाले तम्बू के पवित्र स्थान में
सेवा करने आएगा।

31 "उस मेढ़े के माँस को पकाओ जो हारून को महायाजक बनाने
के लिए उपयोग में आया था। उस माँस को एक पवित्र स्थान पर
पकाओ। 32 तब हारून और उसके पुत्र मिलापवाले तम्बू के द्वार
पर माँस खाएंगे, और वे उस टोकरी की रोटी भी खाएंगे। 33 इन भेटों

का उपयोग उनके पाप को समाप्त करने के लिए तब हुआ था जब
वे याजक बने थे। ये मेढ़े बस उन्हीं को खाना चाहिए किसी अन्य
को नहीं। क्योंकि ये पवित्र है। 34 यदि उस मेढ़े का कुछ माँस या
कोई रोटी अगले सवेरे के लिए बच जाए तो उसे जला देना चाहिए।
तुम्हें वह रोटी या माँस नहीं खाना चाहिए क्योंकि यह केवल विशेष
ढंग से विशेष समय पर ही खाया जाना चाहिए।

35 "वैसा ही करो जैसा मैंने तुम्हें हारून और उसके पुत्रों के लिए
करने को आदेश दिया है। यह समारोह सात दिन तक चलेगा।
36 सात दिन तक हर रोज़ एक—एक बछड़े को मारो। यह हारून
और उसके पुत्रों के पाप के लिए भेंट होगी। तुम इन दिनों दिए गए
बलिदानों का उपयोग वेदी को शुद्ध करने के लिए करना और वेदी
को पवित्र बनाने के लिए जैतून का तेल इस पर डालना। 37 तुम
सात दिन तक वेदी को शुद्ध और पवित्र करना। उस समय वेदी
अत्याधिक पवित्र होगी। वेदी को छूने वाली कोई भी चीज़ पवित्र
हो जाएगी।

38 "हर एक दिन वेदी पर तुम्हें एक भेंट चढ़ानी चाहिए। तुम्हें
एक—एक वर्ष के दो मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 39 एक मेमने की
भेंट प्रातःकाल चढ़ाओ और दूसरे की संन्ध्या के समय। 40-41 जब
तुम पहले मेमने को मारो, दो पौण्ड* गेहूँ का महीन आटा भी भेंट
चढ़ाओ। गेहूँ के आटे को एक क्वार्ट† भेंट स्वरूप दाखमधु में
मिलाओ। जब तुम दूसरे मेमने को सन्ध्या के समय मारो तब दो
पौण्ड महीन आटा भी भेंट में चढ़ाओ और एक क्वार्ट दाखमधु भी
भेंट करो। यह वैसा ही है जैसा तुमने प्रातः काल किया था। यह
यहोवा को भोजन की भेंट होगी। जब तुम उस भेंट को जलाओगे
तो यहोवा इसकी सुगन्ध लेगा और यह उसे प्रसन्न करेगी।

42 "तुम्हें इन चीज़ों को यहोवा को भेंट में रोज़ जलाना चाहिए।

* **29:40-41:** दो पौण्ड शाब्दिक, "एपा माप का 1/10" † **29:40-41:** एक क्वार्ट शाब्दिक, "1 हिन।"

यह यहोवा के सामने, मिलापवाले तम्बू के द्वार पर करो। यह सदा
करते रहो। जब तुम भेंट चढ़ाओगे तब मैं अर्थात् यहोवा वहाँ तुम
से मिलूँगा और तुमसे बातें करूँगा। 43 मैं इस्राएल के लोगों से उस
स्थान पर मिलूँगा और वह स्थान मेरे तेज़ के कारण पवित्र बन
जाएगा।

44 “इस प्रकार मैं मिलापवाले तम्बू को पवित्र बनाऊँगा और मैं
वेदी को भी पवित्र बनाऊँगा और मैं हारून और उसके पुत्रों को
पवित्र बनाऊँगा जिससे वे मेरी सेवा याजक के रूप में कर सकें।
45 मैं इस्राएल के लोगों के साथ रहूँगा। मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।
46 लोग यह जानेंगे कि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ। वे जानेंगे कि
मैं ही वह हूँ जो उन्हें मिस्र से बाहर लाया ताकि मैं उनके साथ रह
सकूँ। मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ।”

30

धूप जलाने की वेदी

1 परमेश्वर ने मूसा से कहा, “बबूल की लकड़ी की एक वेदी
बनाओ। तुम इस वेदी का उपयोग धूप जलाने के लिए करोगे।
2 तुम्हें वेदी को वर्गाकार अट्ठारह इंच लम्बी और अट्ठारह इंच चौड़ी
बनानी चाहिए। यह छत्तीस इंच ऊँची होनी चाहिए। चारों कोनों पर
सींग लगे होने चाहिए। ये सींग वेदी के साथ एक ही इकाई के रूप
में वेदी के साथ जड़े जाने चाहिए। 3 वेदी के ऊपरी सिरे तथा उसकी
सभी भुजाओं को शुद्ध सोने से मढ़ो। वेदी के चारों ओर सोने की
पट्टी लगाओ। 4 इस पट्टी के नीचे सोने के दो छल्ले होने चाहिए। वेदी
के दूसरी ओर भी सोने के दो छल्ले होने चाहिए। ये छल्ले वेदी को
ले जाने के लिए बल्लियों को फँसाने के लिए होंगे। 5 बल्लियों को भी
बबूल की लकड़ी से ही बनाओ। बल्लियों को सोने से मढ़ो। 6 वेदी
को विशेष पर्दे के सामने रखो। साक्षीपत्र का सन्दूक उस पर्दे के

दूसरी ओर है। उस सन्दूक को ढकने वाले ढक्कन के सामने वेदी
रहेगी। यही वह स्थान है जहाँ मैं तुमसे मिलूँगा।
7 "हारून हर प्रातः सुगन्धित धूप वेदी पर जलाएगा। वह यह तब
करेगा जब वह दीपकों की देखभाल करने आएगा। 8 उसे शाम को
जब वह दीपकों की देखभाल करने आए फिर धूप जलानी चाहिए।
जिससे यहोवा के सामने नित्य प्रति सुबह शाम धूप जलती रहे।
9 इस वेदी का उपयोग किसी अन्य प्रकार की धूप या होमबलि के
लिए मत करना। इस वेदी का उपयोग अन्नबलि या पेय भेंट के लिए
मत करना।
10 "वर्ष में एक बार हारून यहोवा को विशेष बलिदान अवश्य
चढ़ाए। हारून पापबलि के खून का उपयोग लोगों के पापों को धोने
के लिए करेगा, हारून इस वेदी के सींगों पर यह करेगा। यह दिन
प्रायश्चित का दिन कहलाएगा। यह यहोवा के लिए अति पवित्र दिन
होगा।"

मन्दिर के लिए कर

11 यहोवा ने मूसा से कहा, 12 "इस्राएल के लोगों को गिनो जिससे
तुम जानोगे कि वहाँ कितने लोग है। जब कभी यह किया जाएगा हर
एक व्यक्ति अपने जीवन के लिए यहोवा को धन देगा। यदि हर एक
व्यक्ति यह करेगा तो लोगों के साथ कोई भी भयानक घटना घटित
नहीं होगी। 13 हर व्यक्ति जिसे गिना जाए वह (आधा शेकेल चाँदी
अवश्य दे। 14 हर एक पुरुष जिसे गिना जाए और जो बीस वर्ष या
उससे अधिक आयु का हो,) यहोवा को यह भेंट देगा। 15 धनी लोग
आधे शेकेल से अधिक नहीं देंगे और गरीब लोग आधे शेकेल से
कम नहीं देंगे। सभी लोग यहोवा को बराबर ही भेंट देंगे यह तुम्हारे
जीवन का मूल्य होगा। 16 इस्राएल के लोगों से यह धन इकट्ठा करो।
मिलापवाले तम्बू में सेवा के लिए इसका उपयोग करो। यह भुगतान
यहोवा के लिए अपने लोगों को याद करने का एक तरीका होगा।
वे अपने जीवन के लिए भुगतान करते रहेंगे।"

हाथ पैर धोने की चिलमची

17 यहोवा ने मूसा से कहा, 18 "एक काँसे की चिलमची बनाओ
और इसे काँसे के आधार पर रखो। तुम इसका उपयोग हाथ पैर
धोने के लिए करोगे। चिलमची को मिलापवाले तम्बू और वेदी के
बीच रखो। चिलमची को पानी से भरो। 19 हारून और उसके पुत्र
इस चिलमची के पानी से अपने हाथ पैर धोएंगे। 20 हर बार जब वे
मिलापवले तम्बू में आएँ तो पानी से हाथ पैर अवश्य धोएँ, इससे
वे मरेंगे नहीं। जब वे वेदी के समीप यहोवा की सेवा करने या धूप
जलाने आएं, 21 तो वे अपने हाथ पैर अवश्य धोएँ, इससे वे मरेंगे
नहीं। यह ऐसा नियम होगा जो हारून और उसके लोगों के लिए सदा बना रहेगा। यह नियम हारून के उन सभी लोगों के लिए बना रहेगा जो भविष्य में होंगे।"

अभिषेक का तेल

22 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 23 "बहुत अच्छे मसाले लाओ।
बारह पौंड* द्रव लोबान लाओ और इस तोल का आधा अर्थात् छः
पौंड,† सुगन्धित दालचीनी और बारह पौंड सुगन्धित छाल, 24 और
बारह पौंड तेजपात लाओ। इन्हें नापने के लिए प्रामाणिक बाटों का उपयोग करो। एक गैलन‡ जैतून का तेल भी लाओ।

25 "सुगन्धित अभिषेक का तेल बनाने के लिए इन सभी चीज़ों
को मिलाओ। 26 मिलापवाले तम्बू और साक्षीपत्र के सन्दूक पर इस
तेल को डालो। यह इस बात का संकेत करेगा कि इन चीज़ों का
विशेष उद्देश्य है। 27 मेज़ और मेज़ पर की सभी तश्तरियों पर तेल
डालो। इस तेल को दीपक और सभी उपकरणों पर डालो। 28 धूप
वाली वेदी पर तेल डालो। यहोवा के लिए होमबलि वाली वेदी पर भी तेल डालो। उस वेदी की सभी चीज़ों पर यह तेल डालो। कटोरे
और उसके नीचे के आधार पर यह तेल डालो। 29 तुम इन सभी
चीज़ों को समर्पित करोगे। वे अत्यन्त पवित्र होंगी। कोई भी चीज जो इन्हें छूएगी वह भी पवित्र हो जाएगी।

---

* **30:23:** बारह पौंड़ शाब्दिक "पाँच सौ माप।" † **30:23:** छ: पौंड़ शाब्दिक, "ढ़ाई सौ माप।" ‡ **30:24:** एक गैलन शाब्दिक, "एक हिना।"

30 “हारून और उसके पुत्रों पर तेल डालो। यह स्पष्ट करेगा कि
वे मेरी विशेष डंग से सेवा करते हैं। तब ये मेरी सेवा याजक कि
तरह कर सकते हैं। 31 इस्राएल के लोगों से कहो कि अभिषेक का
तेल मेरे लिए सदैव अति विशेष होगा। 32 साधारण सुगन्ध की तरह
कोई भी इस तेल का उपयोग नहीं करेगा। उस प्रकार कोई सुगन्ध
न बनाओ जिस प्रकार तुमने यह विशेष तेल बनाया। यह तेल पवित्र
है और यह तुम्हारे लिए अति विशेष होना चाहिए। 33 यदि कोई इस
पवित्र तेल की तरह सुगन्ध बनाए और उसे किसी विदेशी को दे तो
उस व्यक्ति को अपने लोगों से अवश्य अलग कर दिया जाये।”

धूप

34 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “इन सुगन्धित मसालों को लो:
रसगंधा, कस्तूरी गंधिका, बिरोजा और शुद्ध लोबान। सावधानी
रखो कि तुम्हारे पास मसालों की बराबर मात्रा हो। 35 मसालों
को सुगन्धित धूप बनाने के लिए आपस में मिलाओ। इसे उसी
प्रकार करो जैसा सुगन्ध बनाने वाला व्यक्ति करता है। इस धूप
में नमक भी मिलाओ। यह इसे शुद्ध और पवित्र बनाएगा। 36 कुछ
धूप को तब तक पीसते रहो जब तक उसका बारीक चूर्ण न हो
जाये। मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने इस चूर्ण
को रखो। यही वह स्थान है जहाँ मैं तुमसे मिलूँगा। तुम्हें इस धूप के
चूर्ण का उपयोग इसके अति विशेष अवसर पर ही करना चाहिए।
37 तुम्हें इस चूर्ण का उपयोग केवल विशेष ढँग से यहोवा के लिए ही
करना चाहिए। तुम इस धूप को विशेष ढँग से बनाओगे। इस विशेष
ढँग का उपयोग अन्य कोई धूप बनाने के लिए मत करो। 38 कोई
व्यक्ति अपने लिए कुछ ऐसे धूप बनाना चाह सकता है जिससे वह
सुगन्ध का आनन्द ले सके। किन्तु यदि वह ऐसा करे तो उसे अपने
लोगों से अवश्य अलग कर दिया जाये।”

31

बसलेल और ओहोलीआब

1 तब यहोवा ने मूसा के कहा, 2 “मैंने यहूदा के कबीले से ऊरी के
पुत्र बसलेल को चुना है। ऊरी हूर का पुत्र था। 3 मैंने बसलेल को
परमेश्वर की आत्मा से भर दिया है, अर्थात् मैंने उसे सभी प्रकार की
चीज़ों को करने का ज्ञान और निपुणता दे दी है। 4 बसलेल बहुत
अच्छा शिल्पकार है और वह सोना, चाँदी तथा काँसे की चीज़ें बना
सकता है। 5 बसलेल सुन्दर रत्नों को काट और जड सकता है। वह
लकड़ी का भी काम कर सकता है। बसलेल सब प्रकार के काम
कर सकता है। 6 मैंने ओहोलीआब को भी उसके साथ काम करने
को चुना है। आहोलीआब दान कबीले के अहीसामाक का पुत्र है
और मैंने दूसरे सब श्रमिकों को भी ऐसी निपुणता दी है कि वे उन
सभी चीज़ों को बना सकते हैं जिसे मैंने तुमको बनाने का आदेश
दिया है:

7 मिलापवाला तम्बू,
साक्षीपत्र का सन्दूक,
सन्दूक को ढकने वाला ढक्कन,
मिलापवाले तम्बू का साजोसामान,
8 मेज और उस पर की सभी चीजें,
शुद्ध सोना का दीपाधार,
धूप जलाने की वेदी,
9 भेंट जलाने के लिए वेदी, और वेदी पर उपयोग की चीज़ें,
चिलमची और उसके नीचे का आधार,
10 याजक हारून के लिए सभी विशेष वस्त्र और उसके पुत्रों के
लिए सभी विशेष वस्त्र,
जिन्हें वे याजक के रूप मे सेवा करते समय पहनेंगे,
11 अभिषेक का सुगन्धित तेल,

और पवित्र स्थान के लिए सुगन्धित धूप।

इन सभी चीज़ों को उसी ढंग से बनांएगे जैसा मैंने तुमको आदेश दिया है।”

सब्त

12 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 13 “इस्राएल के लोगों से यह कहो: ‘तुम लोग मेरे विशेष विश्राम के दिन वाले नियमों का पालन करोगे। तुम्हें यह अवश्य करना चाहिए, क्योंकि ये मेरे और तुम्हारे बीच सभी पीढ़ियों के लिए प्रतीक स्वरूप रहेंगें। इससे तुम्हें पता चलेगा कि मैंनें अर्थात् यहोवा ने तुम्हें अपना विशेष जनसमूह बनाया है।

14 “ ‘सब्त के दिन को विशेष दिवस मनाओ। यदि कोई व्यक्ति सब्त के दिन को अन्य दिनों की तरह मानता है तो वह व्यक्ति अवश्य मार दिया जाना चाहिए। कोई व्यक्ति जो सब्त के दिन काम करता है अपने लोगों से अवश्य अलग कर दिया जाना चाहिए।
15 सप्ताह में दूसरे अन्य छः दिन काम करने के लिए हैं, किन्तु सातवाँ दिन विश्राम करने का विशेष दिन है, अर्थात् यहोवा को सम्मान देने का विशेष दिन है, कोई व्यक्ति जो सब्त के दिन काम करेगा अवश्य ही मार दिया जाये। 16 इस्राएल के लोग सब्त के दिन को अवश्य याद रखें और इसे विशेष दिन बनाएं। वे इसे लगातार मनाते रहें। यह मेरे और उनके बीच साक्षीपत्र है जो सदा बना रहेगा। 17 सब्त का दिन मेरे और इस्राएल के लोगों के बीच सदा के लिए प्रतीक रहेगा।’ ” (यहोवा ने छः दिन काम किया तथा आकाश एवं धरती को बनाया। सातवें दिन उसने अपने को विश्राम दिया।)

18 इस प्रकार परमेश्वर ने मूसा से सीनै पर्वत पर बात करना समाप्त किया। तब परमेश्वर ने उसे आदेश लिखे हुए दो समतल पत्थर दिए। परमेश्वर ने अपनी अंगुलियों का उपयोग किया और पत्थर पर उन नियमों को लिखा।

32

सोने का बछड़ा

1 लोगों ने देखा कि लम्बा समय निकल गया और मूसा पर्वत
से नीचे नहीं उतरा। इसलिए लोग हारून के चारों ओर इकट्ठा हुए।
उन्होंने उससे कहा, "देखो, मूसा ने हमें मिस्र देश से बाहर निकाला।
किन्तु हम यह नहीं जानते कि उसके साथ क्या घटित हुआ है।
इसलिए कोई देवता हमारे आगे चलने और हमें आगे ले चलने
वाला बनाओ।"

2 हारून ने लोगों से कहा, "अपनी पत्नियों, पुत्रों और पुत्रियों के
कानों की बालियाँ मेरे पास लाओ।"

3 इसलिए सभी लोगों ने कान की बालियाँ इकट्ठी कीं और वे
उन्हें हारून के पास लाए। 4 हारून ने लोगों से सोना लिया, और
एक बछड़े की मूर्ति बनाने के लिए उसका उपयोग किया। हारून
ने मूर्ति बनाने के लिए मूर्ति को आकार देने वाले एक औज़ार का
उपयोग किया। तब इसे उसने सोने से मढ़ दिया।

तब लोगों ने कहा, "इस्राएल के लोगों, ये तुम्हारे वे देवता हैं जो
तुम्हें मिस्र से बाहार ले आया।"*

5 हारून ने इन चीज़ों को देखा। इसलिए उसने बछड़े के सम्मुख
एक वेदी बनाई। तब हारून ने घोषणा की। उसने कहा, "कल यहोवा
के लिए विशेष दावत होगी।"

6 अगले दिन सुबह लोग शीघ्र उठ गए। उन्होंने जानवरों को मारा
और होमबलि तथा मेलबलि चढ़ाई। लोग खाने और पीने के लिये
बैठे। तब वे खड़े हुए और उनकी एक उन्मत्त दावत हुई।

7 उसी समय यहोवा ने मूसा से कहा, "इस पर्वत से नीचे उतरो।
तुम्हारे लोग अर्थात् उन लोगों ने, जिन्हें तुम मिस्र से लाए हो, भयंकर
पाप किया है। 8 उन्होंने उन चीज़ों को करने से शीघ्रता से इन्कार कर

---

* **32:4:** इस्राएल के … आया यहाँ मूल में पाँच बछड़ो के लिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है। इसका मतलब यह हो सकता है कि सोने का वह बछड़ा बहुत से मिथ्या देवताओं का प्रतीक था।

दिया है जिन्हें करने का आदेश मैंने उन्हें दिया था। उन्होंने पिघले सोने से अपने लिए एक बछड़ा बनाया है। वे उस बछड़े की पूजा कर रहे हैं और उसे बलि भेंट कर रहे हैं। लोगों ने कहा है, 'इस्राएल, ये देवता है जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाए हैं।' "

9 यहोवा ने मूसा से कहा, "मैंने इन लोगों को देखा है। मैं जानता
हूँ कि ये बड़े हठी लोग हैं जो सदा मेरे विरुद्ध जाएंगे। 10 इसलिए
अब मुझे इन्हें क्रोध करके नष्ट करने दो। तब मैं तुझसे एक महान
राष्ट्र बनाऊँगा।"

11 किन्तु मूसा ने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना की। मूसा ने
कहा, "हे यहोवा, तू अपने क्रोध को अपने लोगों को नष्ट न करने
दे। तू अपार शक्ति और अपने बल से इन्हें मिस्र से बाहर ले आया।
12 किन्तु यदि तू अपने लोगों को नष्ट करेगा तब मिस्र के लोग कह
सकते हैं, 'यहोवा ने अपने लोगों के साथ बुरा करने की योजना
बनाई। यही कारण है कि उसने इनको मिस्र से बाहर निकाला। वह
उन्हें पर्वतों में मार डालना चाहता था। वह अपने लोगों को धरती से
मिटाना चाहता था।' इसलिए तू लोगों पर क्रुद्ध न हो। अपना क्रोध
त्याग दे। अपने लोगों को नष्ट न कर। 13 तू अपने सेवक इब्राहीम,
इसहाक और इस्राएत (याकूब) को याद कर। तूने अपने नाम का
उपयोग किया और तूने उन लोगों को वचन दिया। तूने कहा, 'मैं
तुम्हारे लोगों कों उतना अनगिनत बनाऊँगा जितने आकाश में तारे
हैं। मैं तुम्हारे लोगों को वह सारी धरती दूँगा जिसे मैंने उनको देने
का वचन दिया है। यह धरती सदा के लिए उनकी होगी।' "

14 इसलिए यहोवा ने लोगों के लिए अफ़सोस किया। यहोवा ने
वह नहीं किया जो उसने कहा कि वह करेगा अर्थात् लोगों को नष्ट
नहीं किया।

15 तब मूसा पर्वत से नीचे उतरा। मूसा के पास आदेश वाले दो
समतल पत्थर थे। ये आदेश पत्थर के सामने तथा पीछे दोनों तरफ

लिखे हुए थे। 16 परमेश्वर ने स्वयं उन पत्थरों को बनाया था और
परमेश्वर ने स्वयं उन आदेशों को उन पत्थरों पर लिखा था।

17 जब वे पर्वत से उतर रहे थे यहोशू ने लोगों का उन्मत्त शोर
सुना। यहोशू ने मूसा से कहा, "नीचे पड़ाव में युद्ध की तरह का शोर
हैं!"

18 मूसा ने उत्तर दिया, "यह सेना का विजय के लिये शोर नहीं है।
यह हार से चिल्लाने वाली सेना का शोर भी नहीं है। मैं जो आवाज़
सुन रहा हूँ वह संगीत की है।"

19 जब मूसा डेरे के समीप आया तो उसने सोने के बछड़े और
गाते हुए लोगों को देखा। मूसा बहुत क्रोधित हो गया और उसने
उन विशेष पत्थरों को ज़मीन पर फेंक दिया। पर्वत की तलहटी में
पत्थरों के कई टुकडें हो गए। 20 तब मूसा ने लोगों के बनाए बछड़े
को नष्ट कर दिया। उसने इसे आग में गला दिया। उसने सोने को
तब तक पीसा जब तक यह चूर्ण न हो गया और उसने उस चूर्ण को
पानी में फेंक दिया। उसने इस्राएल के लोगों को वह पानी पीने को
विवश किया।

21 मूसा ने हारून से कहा, "इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया?
तुम उन्हें ऐसा बुरा पाप करने की ओर क्यों ले गए?"

22 हारून ने उत्तर दिया, "महाशय, क्रोधित मत हो। आप जानते
हैं कि ये लोग सदा गलत काम करने को तैयार रहते हैं। 23 लोगों ने
मुझ से कहा, 'मूसा हम लोगों को मिस्र से बाहर लाया। किन्तु हम
लोग नहीं जानते कि उसके साथ क्या घटित हुआ।' इसलिए हम
लोगों का मार्ग दिखाने वाला कोई देवता बनाओ, 24 इसलिए मैंने
लोगों से कहा, 'यदि तुम्हारे पास सोने की अंगूठियाँ हों तो उन्हें मुझे
दे दो।' लोगों ने मुझे अपना सोना दिया। मैंने इस सोने को आग में
फेंका और उस आग से यह बछड़ा आया।"

25 मूसा ने देखा कि हारून ने विद्रोह उत्पन्न किया है। लोग मूर्खों
की तरह उग्र व्यवहार इस तरह कर रहे थे कि उनके सभी शत्रु देख
सकें। 26 इसलिए मूसा डेरे के द्वार पर खड़ा हुआ। मूसा ने कहा,

"कोई व्यक्ति जो यहोवा का अनुसरण करना चाहता है मेरे पास
आए" तब लेवी के परिवार के सभी लोग दौड़कर मूसा के पास
आए।
27 तब मूसा ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें बताऊँगा कि इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा क्या कहता है 'हर व्यक्ति अपनी तलवार अवश्य
उठा ले और डेरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाये। तुम लोग इन
लोगों को अवश्य दण्ड दोगे चाहे किसी व्यक्ति को अपने भाई, मित्र
और पड़ोसी को ही क्यों न मारना पड़े।' "
28 लेवी के परिवार के लोगों ने मूसा का आदेश माना। उस दिन
इस्राएल के लगभग तीन हज़ार लोग मरे। 29 तब मूसा ने कहा,
"यहोवा ने आज तुम को ऐसे लोगों के रूप में चुना है जो अपने
पुत्रों और भाईयों को आशीर्वाद देंगे।"
30 अगली सुबह मूसा ने लोगों से कहा, "तुम लोगों ने भयंकर पाप
किया है। किन्तु अब मैं यहोवा के पास ऊपर जाऊँगा और ऐसा कुछ
कर सकूँगा जिससे वह तुम्हारे पापों को क्षमा कर दें।" 31 इसलिए
मूसा वापस यहोवा के पास गया और उसने कहा, "कृपया सुन! इन
लोगों ने बहुत बुरा पाप किया है और सोने का एक देवता बनाया
है। 32 अब उन्हें इस पाप के लिये क्षमा कर। यदि तू क्षमा नहीं करेगा
तो मेरा नाम उस किताब से मिटा दें जिसे तूने लिखा है।"†
33 किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, "जो मेरे विरुद्ध पाप करते हैं
केवल वे ही ऐसे लोग हैं जिनका नाम मैं अपनी पुस्तक से मिटाता
हूँ। 34 इसलिए जाओ और लोगों को वहाँ ले जाओ जहाँ मैं कहता
हूँ। मेरा दूत तुम्हारे आगे आगे चलेगा और तुम्हें रास्ता दिखाएगा।
जब उन लोगों को दण्ड देने का समय आएगा जिन्होंने पाप किया
है तब उन्हें दण्ड दिया जायेगा।" 35 इसलिए यहोवा ने लोगों में एक

† **32:32:** उस किताब … लिखा है संभवत यह "जीवन की पुस्तक" की ओर संकेत है। यह वैसा ही है कि परमेश्वर एक किताब रखता है जिसमें उसके सभी लोगों के नाम लिखे रहते हैं।

भयंकर बीमारी उत्पन्न की। उन्होंने यह इसलिए किया कि उन लोगों ने हारून से सोने का बछड़ा बनाने को कहा था।

33

“मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा”

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तुम और तुम्हारे वे लोग जिन्हें तुम
मिस्र से लाए हो उस जगह को अवश्य छोड़ दो। और उस प्रदेश में
जाओ जिसे मैंने इब्राहीम, इसहाक और याकूब को देने का वचन
दिया था। मैंने उन्हें वचन दिया मैंने कहा, ‘मैं वह प्रदेश तुम्हारे भावी
वंशजों को दूँगा। 2 मैं एक दूत तुम्हारे आगे आगे चलने के लिये
भेजूँगा, और मैं कनानी, एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी
लोगों को हराऊँगा, मैं उन लोगों को तुम्हारा प्रदेश छोड़ने को विवश
करूँगा। 3 इसलिए उस प्रदेश को जाओ जो बहुत ही अच्छी चीज़ों*
से भरा है। किन्तु मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा, तुम लोग बड़े हठी
हो, यदि मैं तुम्हारे साथ गया तो मैं तुम्हें शायद रास्ते में ही नष्ट कर
दूँ।’ ”

4 लोगों ने यह बुरी खबर सुनी और वे वहुत दुःखी हुए। इसके बाद
लोगों ने आभूषण नही पहने। 5 उन्होंने आभूषण नहीं पहने क्योंकि
यहोवा ने मूसा से कहा, “इस्राएल के लोगों से कहो, ‘तुम हठी लोग
हो। यदि मैं तुम लोगों के साथ थोड़े समय के लिए भी यात्रा करूँ
तो मैं तुम लोगों को नष्ट कर दूँगा, इसलिए अपने सभी गहने उतार
लो। तब मैं निश्चय करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या करूँ।’ ” 6 इसलिए
इस्राएल के लोगों ने होरेब (सीनै) पर्वत पर अपने सभी गहने उतार
लिए।

मिलापवाला तम्बू

* **33:3:** अच्छी चीज़ें अर्थात् दूध और शहद से भरपूर।

7 मूसा मिलापवाला तम्बू को डेरे से कुछ दूर ले गया। वहाँ
उसने उसे लगाया और उसका नाम “मिलापवाला तम्बू” रखा। कोई
व्यक्ति जो यहोवा से कुछ जानना चाहता था उसे डेरे के बाहर
मिलापवाले तम्बू तक जाना होता था। 8 जब कभी मूसा बाहर तम्बू
में जाता तो लोग उसको देखते रहते। लोग अपने तम्बूओं के द्वार
पर खड़े रहते और मूसा को तब तक देखते रहते जब तक वह
मिलापवाले तम्बू में चला जाता। 9 जब मूसा तम्बू में जाता तो एक
लम्बा बादल का स्तम्भ सदा नीचे उतरता था। वह बादल तम्बू
के द्वार पर ठहरता। इस प्रकार यहोवा मूसा से बात करता था।
10 जब लोग तम्बू के द्वार पर बादल को देखते तो सामने झुकते
और उपासना करते थे। हर एक व्यक्ति अपने तम्बू के द्वार पर
उपासना करता था।

11 यहोवा मूसा से आमने—सामने बात करता था। यहोवा मूसा
से इस प्रकार बात करता था जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने मित्र
से बात करता है। यहोवा से बात करने के बाद मूसा हमेशा अपने
डेरे मे वापस लौटता था। नून का पुत्र नवयुवक यहोशू मूसा का
सहायक था। यहोशू सदा तम्बू में रहता था जब मूसा उसे छोड़ता
था।

मूसा को यहोवा की महिमा का दर्शन

12 मूसा ने यहोवा से कहा, “तूने मुझे इन लोगों को ले चलने को
कहा। किन्तु तूने यह नहीं बताया कि मेरे साथ किसे भेजेगा। तूने
मुझसे कहा, ‘मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ और मैं तुमसे प्रसन्न हूँ।’
13 यदि तुझे मैंने सचमुच प्रसन्न किया है तो अपने निर्णय मुझे बता।
तुझे मैं सचमुच जानना चाहता हूँ। तब मैं तुझे लगातार प्रसन्न रख
सकता हूँ। याद रख कि ये सभी तेरे लोग हैं।”

14 यहोवा ने कहा, “मैं स्वयं तुम्हारे साथ चलूँगा। मैं तुम्हें रास्ता
दिखाऊँगा।”†

---

† **33:14:** मैं ... दिखाऊँगा या “आराम दूँगा।”

15 तब मूसा ने उससे कहा, "यदि तू हम लोगों के साथ न चले
तो तू इस स्थान से हम लोगों को दूर मत भेज। 16 हम यह भी कैसे
जानेंगे कि तू मुझसे और इन लोगों से प्रसन्न है? यदि तू साथ चलेगा
तो हम लोग निश्चयपूर्वक यह जानेंगे। यदि तू हम लोगों के साथ नहीं
जाता तो मैं और ये लोग धरती के अन्य दूसरे लोगों से भिन्न नहीं
होंगे।"

17 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं वह करूँगा जो तू कहता है। मैं
यह करूँगा क्योंकि मैं तुझसे प्रसन्न हूँ। मैं तुझे अच्छी तरह जानता
हूँ।"

18 तब मूसा ने कहा, "अब कृपया मुझे अपनी महिमा दिखा।"

19 तब यहोवा ने उत्तर दिया, "मैं अपनी सम्पूर्ण भलाई को तुम
तक जाने दूँगा। मैं यहोवा हूँ और मैं अपने नाम की घोषणा करूँगा
जिससे तुम उसे सुन सको। मैं उन लोगों पर कृपा और प्रेम दिखाऊँगा
जिन्हें मैं चूनूँगा। 20 किन्तु तुम मेरा मुख नहीं देख सकते। कोई भी
व्यक्ति मुझे देख नहीं सकता और यदि देख ले तो जीवित नहीं रह
सकता है।

21 "मेरे समीप के स्थान पर एक चट्टान है। तुम उस चट्टान पर
खड़े हो सकते हो। 22 मेरी महिमा उस स्थान से होकर गुज़रेगी। उस
चट्टान की बड़ी दरार में मैं तुम को रखूँगा और गुजरते समय मैं तुम्हें
अपने हाथ से ढकूँगा। 23 तब मैं अपना हाथ हटा लूँगा और तुम मेरी
पीठ मात्र देखोगे। किन्तु तुम मेरा मुख नहीं देख पाओगे।"

34

पत्थर की नयी पटिटयाँ

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "दो और समतल चट्टानें ठीक वैसी
ही बनाओ जैसी पहली दो थीं जो टूट गई। मैं इन पर उन्हीं शब्दों
को लिखूँगा जो पहले दोनों पर लिखे थे। 2 कल प्रातःकाल तैयार
रहना और सीनै पर्वत पर आना। वहाँ मेरे सामने पर्वत की चोटी

पर खड़े रहना। 3 किसी व्यक्ति को तुम्हारे साथ नहीं आने दिया
जाएगा। पर्वत के किसी भी स्थान पर कोई भी व्यक्ति दिखाई तक
नहीं पड़ना चाहिए। यहाँ तक कि तुम्हारे जानवरों के झुण्ड और
भेड़ों की रेवडें भी पर्वत की तलहटी में घास नहीं चर सकेंगी।"
4 इसलिए मूसा ने पहले पत्थरों की तरह पत्थर की दो समतल
पटिट्याँ बनाई। तब अगले सवेरे ही वह सीनै पर्वत पर गया। उसने
हर एक चीज़ यहोवा के आदेश के अनुसार की। मूसा अपने साथ
पत्थर की दोनों समतल पट्टियाँ ले गया। 5 मूसा के पर्वत पर पहुँच
जाने के बाद यहोवा उसके पास बादल में नीचे पर्वत पर आया।
यहोवा वहाँ मूसा के साथ खड़ा रहा, और उसने यहोवा का नाम
लिया।*
6 यहोवा मूसा के सामने से गुज़रा था और उसने कहा, "यहोवा
दयालु और कृपालु परमेश्वर है। यहोवा जल्दी क्रोधित नहीं होता।
यहोवा महान, प्रेम से भरा है। यहोवा विश्वसनीय है। 7 यहोवा हज़ारों
पीढ़ियों पर कृपा करता है। यहोवा लोगों को उन गलतियों के लिए
जो वे करते हैं क्षमा करता है। किन्तु यहोवा अपराधियों को दण्ड
देना नहीं भूलता। यहोवा केवल अपराधी को ही दण्ड नहीं देगा
अपितु उनके बच्चों, उनके पौत्रों और प्रपौत्रों को भी उस बुरी बात
के लिये कष्ट सहना होगा जो वे लोग करते हैं।"
8 तब तत्काल मूसा भूमि पर झुका और उसने यहोवा की उपासना
की। मूसा ने कहा, 9 "यहोवा, यदि तू मुझसे प्रसन्न हैं तो मेरे साथ
चल। मैं जानता हूँ कि ये लोग हठी हैं। किन्तु तू हमें उन पापों और
अपराधों के लिए क्षमा कर जो हमने किए हैं। अपने लोगों के रूप
में हमें स्वीकार कर।"
10 तब यहोवा ने कहा, "मैं तुम्हारे सभी लोगों के साथ यह
साक्षीपत्र बना रहा हूँ। मैं ऐसे अद्भुत काम करूँगा जैसे इस धरती

---

* **34:5:** यहोवा … लिया शाब्दिक, "उसने यहोवा के नाम पर पुकारा" इस का अर्थ "मूसा ने यहोवा की उपासना की" या "यहोवा ने अपना नाम मूसा से कहा।"

पर किसी भी दूसरे राष्ट्र के लिए पहले कभी नहीं किए। तुम्हारे साथ
सभी लोग देखेंगे कि मैं यहोवा अत्यन्त महान हूँ। लोग उन अद्भुत
कामों को देखेंगे जो मैं तुम्हारे लिए करूँगा। 11 आज मैं जो आदेश
देता हूँ उसका पालन करो और मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारा देश
छोड़ने को विवश करूँगा। मैं एमोरी, कनानी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी
और यबूसी को बाहर निकल जाने को विवश करूँगा। 12 सावधान
रहो। उन लोगों के साथ कोई सन्धि न करो जो उस प्रदेश में रहते
हैं जहाँ तुम जा रहे हो। यदि तुम उनके साथ सन्धि करोगे जो उस
प्रदेश में रहते हैं जहाँ तुम जा रहे हो। यदि तुम उनके साथ साक्षीपत्र
बनाओगे तो तुम उस में फँस जाओगे। 13 उनकी वेदियों को नष्ट
कर दो। उन पत्थरों को तोड़ दो जिनकी वे पूजा करते हैं। उनकी
मूर्तियों† को काट गिराओ। 14 किसी दूसरे देवता की पूजा न करो।
मैं यहोवा (कना) जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ। यह मेरा नाम है। मैं
(एलकाना) जल उठने वाला परमेश्वर हूँ।

15 "सावधान रहो उस प्रदेश में जो लोग रहते हैं उनसे कोई सन्धि
न हो। यदि तुम यह करोगे तो जब वे अपने देवताओं की पूजा करेगं
तब तुम उनके साथ हो सकोगे। वे लोग तुम्हें अपने में मिलने के
लिये आमंत्रित करेंगे और तुम उनकी बलियों को खाओगे। 16 तुम
उनकी कुछ लड़कियों को अपने पुत्रों की पत्नियों के रूप में चुन
सकते हो। वे पुत्रियाँ असत्य देवताओं की सेवा करती हैं। वे तुम्हारे
पुत्रों से भी वही करवा सकतीं हैं।

17 "मूर्तियाँ मत बनाना।

18 "अखमीरी रोटियों की दावत का उत्सव मनाओ। मेरे दिए
आदेश के अनुसार सात दिन तक अखमीरी रोटी खाओ। इसे उस

---

† **34:13:** पत्थरों … मूर्तियाँ शाब्दिक, "स्मारक अशेरा स्तम्भ।" ये पत्थर के प्रतीक और लकड़ी के स्तम्भ थे जिन्हें लोग असत्य देवताओं को याद रखने तथा श्रद्धा अर्पित करने के लिये खड़ी करते थे।"

महीने में करो जिसे मैंने चुना हैं—आबीब का महीना। क्यों? क्योंकि
यह वही महीना है जब तुम मिस्र से बाहर आए।
19 “किसी भी स्त्री का पहलौठा बच्चा सदा मेरा है। पहलौठा
जानवर भी जो तुम्हारी गाय, बकरियों या भेड़ों से उत्पन्न होता है,
मेरा है। 20 यदि तुम पहलौठे गधे को रखना चाहते हो तो तुम इसे
एक मेमने के बदले खरीद सकते हो। किन्तु यदि तुम उस गधे को
मेमने के बदले नहीं ख़रीदते तो तुम उस गधे की गर्दन तोड़ दो। तुम्हें
अपने पहलौठे सभी पुत्र मुझसे वापस खरीदने होंगे। कोई व्यक्ति
बिना भेंट के मेरे सामने नहीं आएगा।
21 “तुम छः दिन काम करोगे। किन्तु सातवें दिन अवश्य विश्राम
करोगे। पौधे रोपने और फसल काटने के समय भी तुम्हें विश्राम
करना होगा।
22 “सप्ताह की दावत को मनाओ। गेहूँ की फ़सल के पहले अनाज
का उपयोग इस दावत में करो और वर्ष के अन्त में फ़सल कटने
की दावत मनाओ।
23 “हर वर्ष तुम्हारे सभी पुरुष तीन बार अपने स्वामी, परमेश्वर
इस्राएल के यहोवा के पास जाएंगे।
24 “जब तुम अपने प्रदेश में पहुँचोगे तो मैं तुम्हारे शत्रुओं को उस
प्रदेश से बाहर जाने को विवश करूँगा। मैं तुम्हारी सीमाओं को
बढ़ाऊँगा और तुम अधिकाधिक प्रदेश पाओगे। तुम अपने परमेश्वर
यहोवा के सामने वर्ष में तीन बार जाओगे। और उन दिनों तुम्हारा
देश तुम से लेने का कोई भी प्रयत्न नहीं करेगा।
25 “यदि तुम मुझे बलि से खून भेंट करो तो उसी समय मुझे खमीर
भेंट मत करो

“और फ़सह पर्व का कुछ भी माँस अगली सुबह तक के लिये
नहीं छोड़ा जाना चाहिए।
26 “यहोवा को अपनी पहली काटी हुई फ़सलें दो। उन चीज़ों को
अपने परमेश्वर यहोवा के घर लाओ।

"कभी बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न पकाओ।"

27 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "जो बातें मैंने बताई हैं उन्हें लिख
लो। ये बातें हमारे तुम्हारे और इस्राएल के लोगों के मध्य साक्षीपत्र
हैं।"

28 मूसा वहाँ यहोवा के साथ चालीस दिन और चालीस रात रहा।
उस पूरे समय उसने न भोजन किया न ही पानी पिया। और मूसा ने
साक्षीपत्र के शब्दों के (दस आदेशों) को, पत्थर की दो समतल
पट्टियों पर लिखा।

मूसा का तेजस्वी मुख

29 तब मूसा सीनै पर्वत से नीचे उतरा। वह यहोवा की दोनों पत्थरों
की समतल पट्टियों को साथ लाया जिन पर यहोवा के नियम लिखे
थे। मूसा का मुख चमक रहा था। क्योंकि उसने परमेश्वर से बातें
की थीं। किन्तु मूसा यह नहीं जानता था कि उसके मुख पर तेज
हैं। 30 हारून और इस्राएल के सभी लोगों ने देखा कि मूसा का मुख
चमक रहा था। इसलिए वे उसके पास जाने से डरे। 31 किन्तु मूसा
ने उन्हें बुलाया। इसलिए हारून और लोगों के सभी अगुवा मूसा
के पास गए। मूसा ने उन से बातें कीं। 32 उसके बाद इस्राएल के
सभी लोग मूसा के पास आए। और मूसा ने उन्हें वे आदेश दिए जो
यहोवा ने सीनै पर्वत पर उसे दिए थे।

33 जब मूसा ने बातें करना खत्म किया तब उसने अपने मुख को
एक कपड़े से ढक लिया। 34 जब कभी मूसा यहोवा के सामने बातें
करने जाता तो कपड़े को हटा लेता था। तब मूसा बाहर आता और
इस्राएल के लोगों को वह बताता जो यहोवा का आदेश होता था।
35 इस्राएल के लोग देखते थे कि मूसा का मुख तेज से चमक रहा है।
इसलिए मूसा अपना मुख फिर ढक लेता था। मूसा अपने मुख को
तब तक ढके रखता था जब तक वह यहोवा के साथ बात करने
अगली बार नहीं जाता था।

35

सब्त के नियम

1 मूसा ने इस्राएल के सभी लोगों को एक साथ इकट्ठा किया।
मूसा ने उनसे कहा, "मैं वे बातें बताऊँगा जो यहोवा ने तुम लोगों
को करने के लिए कही हैं:
2 "काम करने के छः दिन हैं। किन्तु सापवाँ दिन तुम लोगों का
विश्राम का विशेष दिन होगा। उस विशेष दिन को विश्राम करके तुम
लोग यहोवा को श्रद्धा अर्पित करोगे। यदि कोई सातवें दिन काम
करेगा तो उसे अवश्य मार दिया जाएगा। 3 सब्त के दिन तुम्हें किसी
स्थान पर आग तक नहीं जलानी चाहिए, जहाँ कहीं तुम रहते हो।"

पवित्र तम्बू के लिए चीज़ें

4 मूसा ने इस्राएल के सभी लोगों से कहा, "यही है जो यहोवा
ने आदेश दिया है। 5 यहोवा के लिए विशेष भेंट इकट्ठी करो। तुम्हें
अपने मन में निश्चय करना चाहिए कि तुम क्या भेंट करोगे। और तब
तुम वह भेंट यहोवा के पास लाओ। सोना, चाँदी ओर काँसा; 6 नीला
बैंगनी और लाल कपड़ा, सन का उत्तम रेशा; बकरी के बाल; 7 भेंड़
की लाल रंगी खाल, सुइसों का चमड़ा; बबूल की लकड़ी; 8 दीपकों
के लिए जैतून का तेल; अभिषेक के तेल के लिए मसाले, सुगन्धित
धूप के लिए मसाले, 9 गोमेदक नग तथा अन्य रत्न भेंट में लाओ।
ये नग और रत्न एपोद और सीनाबन्द पर लगाए जाएंगे।
10 "तुम सभी कुशल कारीगरों को चाहिए कि यहोवा ने जिन
चीज़ों का आदेश दिया है उन्हें बनाए। ये वे चीज़ें हैं जिनके लिए
यहोवा ने आदेश दिया हैं: 11 पवित्र तम्बू, इसका बाहरी तम्बू, और
इसका आच्छादन, छल्ले, तख्ते, पट्टियाँ, स्तम्भ और आधार; 12 पवित्र
सन्दूक, और इसकी बल्लियाँ तथा सन्दूक का ढक्कन, और सन्दूक
रखे जाने की जगह को ढकने के लिए पर्दे; 13 मेज और इसकी
बल्लियाँ, मेज पर रहने वाली सभी चीज़ें, और मेज पर रखी जाने वाली
विशेष रोटी; 14 प्रकाश के लिये उपयोग में आने वाला दीपाधार,

और वे सभी चीज़ें जो दीपाधार के साथ होती हैं अर्थात् दीपक,
और प्रकाश के लिए तेल; 15 धूप जलाने के लिए वेदी और इसकी
बल्लियाँ अभिषेक का तेल और सुगन्धित धूप, मिलापवाले तम्बू के
प्रवेश द्वार को ढकने वाली कनात; 16 होमबलियों के लिए वेदी और
इसकी काँसे की जाली, बल्लियाँ और वेदी पर उपयोग में आने वाली
सभी चीज़ें, काँसे की चिलमची और इसका आधार; 17 आँगन की
चारों ओर की कनातें, और उनके खंभे और आधार, और आँगन के
प्रवेशद्वार को ढकने वाला कनात; 18 आँगन और तम्बू के सहारे के
लिए उपयोग में आने वाली खूँटियाँ, और खूँटियों से बँधने वाली
रस्सियाँ; 19 और विशेष बुने वस्त्र जिन्हें याजक पवित्र स्थानों में
पहनेंगे। ये विशेष वस्त्र याजक हारून और उसके पुत्रों के पहनने
के लिए हैं वे इन वस्त्रों को तब पहनेंगे जब वे याजक के रूप में
सेवा—कार्य करेंगे।"

लोगों की महान भेंट

20 तब इस्राएल के सभी लोग मूसा के पास से चले गए। 21 सभी
लोग जो भेंट चढ़ाना चाहते थे आए और यहोवा के लिए भेंट लाए।
ये भेंटे मिलापवाले तम्बू को बनाने, तम्बू की सभी चीज़ों, और विशेष
वस्त्र बनाने के काम में लाई गई। 22 सभी स्त्री और पुरुष, जो चढ़ाना
चाहते थे, हर प्रकार के अपने सोने के गहने लाए। वे चिमटी कान
की बालियाँ, अगूंठियाँ, अन्य गहने लेकर आए। उन्होंने अपने सभी
सोने के गहने यहोवा को अर्पित किए। यह यहोवा को विशेष भेंट
थी।

23 हर व्यक्ति जिसके पास सन के उत्तम रेशे, नीला, बैंगनी और
लाल कपड़ा था वह इन्हें यहोवा के पास लाया। वह व्यक्ति जिसके
पास बकरी के बाल, लाल रंग से रंगी भेड़ की खाल, सुइसों का
खाल था उसे वह यहोवा के पास लाया। 24 हर एक व्यक्ति जो
चाँदी, काँसा, चढ़ाना चाहता था यहोवा को भेंट के रूप में उसे
लाया। हर एक व्यक्ति जिसके पास बबूल की लकड़ी थी, आया
और उसे यहोवा को अर्पित किया। 25 हर एक कुशल स्त्री ने सन

के उत्तम रेशों और नीला, बैंगनी तथा लाल कपड़ा बनाया। 26 उन
सभी स्त्रियों ने जो कुशल थीं और हाथ बँटाना चाहती थीं उन्होंने
बकरी के बालों से कपड़ा बनाया।
27 अगुवा लोग गोमेदक नग तथा अन्य रत्न ले आए। ये नग और
रत्न याजक के एपोद तथा सीनाबन्द में लगाए गए। 28 लोग मसाले
और जैतून का तेल भी लाए। ये चीज़ें सुगन्धित धूप, अभिषेक का
तेल और दीपकों के तेल के लिए उपयोग में आई।
29 इस्राएल के वे सभी लोग जिनके मन में प्रेरणा हुई यहोवा के
लिए भेंट लाए। ये भेटें मुक्त भाव से दी गई थीं, लोगों ने इन्हें दिया
क्योंकि वे देना चाहते थे। ये भेंट उन सभी चीज़ों के बनाने के लिए
उपयोग में आई जिन्हें यहोवा ने मूसा और लोगों को बनाने का
आदेश दिया था।

बसलेल और ओहोलीआब

30 तब मूसा ने इस्राएल के लोगों से कहा, "देखो! यहोवा ने
बसलेल को चुना है जो ऊरी का पुत्र और यहूदा के परिवार समूह
का है। (ऊरी हूर का पुत्र था।) 31 यहोवा ने बसलेल को परमेश्वर की
शक्ति से भर दिया अर्थात् बसलेल को हर प्रकार का काम करने की
विशेष निपुणता और जानकारी दी। 32 वह सोने, चाँदी और काँसे की
चीज़ों का आलेखन करके उन्हें बना सकता है। 33 वह नग और रत्न
को काट और जड़ सकता है। बसलेल लकड़ी का काम कर सकता
है और सभी प्रकार की चीज़े बना सकता है। 34 यहोवा ने बसलेल
और ओहोलीआब को अन्य लोगों के सिखाने की विशेष निपुणता
दे रखी है। (ओहोलीआब दान के परिवार समूह से अहीसामाक का
पुत्र था।) 35 यहोवा ने इन दोनों व्यक्तियों को सभी प्रकार का काम
करने की विशेष निपुणता दे रखी है। वे बढ़ई और ठठेरे का काम
करने की निपुणता रखते हैं, वे नीले, बैंगनी, और लाल कपड़े और
सन के उत्तम रेशों मे चित्रों को काढ़ कर उन्हें सी सकते हैं और वे
ऊन से भी चीजों को बुन सकते हैं।"

36

1 “इसलिए, बसलेल, ओहोलीआब और सभी निपुण व्यक्ति उन
कामों को करेंगे जिनका आदेश यहोवा ने दिया है। यहोवा ने इन
व्यक्तियों को उन सभी निपुण काम करने की बुद्धि और समझ दे
रखी है जिनकी आवश्यकता इस पवित्र स्थान को बनाने के लिए
है।”

2 तब मूसा ने बसलेल, ओहोलीआब और सभी अन्य निपुण लोगों
को बुलाया जिन्हें यहोवा ने विशेष निपुणता दी थी और ये लोग आए
क्योंकि ये काम में सहायता करना चाहते थे। 3 मूसा ने इस्राएल के
इन लोगों को उन सभी चीज़ों को दे दिया जिन्हें इस्राएल के लोग भेंट
के रूप में लाए थे। और उन्होंने उन चीज़ों का उपयोग पवित्र स्थान
बनाने में किया। लोग प्रत्येक सुबह भेंट लाते रहे। 4 अन्त में प्रत्येक
निपुण कारीगरों ने उस काम को छोड़ दिया जिसे वे पवित्र स्थान
पर कर रहे थे और वे मूसा से बातें करने गए। 5 उन्होंने कहा, “लोग
बहुत कुछ लाए हैं। हम लोगों के पास उससे अधिक है जितना तम्बू
को पूरा करने के लिए यहोवा ने कहा है।”

6 तब मूसा ने पूरे डेरे में यह खबर भेजी: “कोई पुरुष या स्त्री अब
कोई अन्य भेंट तम्बू के लिए नहीं चढ़ाएगा।” इस प्रकार लोग और
अधिक न देने के लिए विवश किए गए। 7 लोगों ने पर्याप्त से अधिक
चीज़ें पवित्र स्थान को बनाने के लिए दीं।

पवित्र तम्बू

8 तब निपुण कारीगरों ने पवित्र तम्बू बनाना आरम्भ किया।
उन्होंने नीले, बैंगनी और लाल कपड़े और सन के उत्तम रेशों की
दस कनातें बनाई। और उन्होंने करूब के पंख सहित चित्रों को
कपड़े पर काढ़ दिया। 9 हर एक कनात बराबर नात की थी। यह
चौदह गज़* लम्बी तथा, दो गज़ चौड़ी थी। 10 पाँच कनातें एक साथ
आपस में जोड़ी गई जिससे वे एक ही बन गई। दूसरी को बनाने के

---

* **36:9:** चौदह गज़ शाब्दिक, “अट्ठाइस हाथ।”

लिए अन्य पाँच कनातें आपस में जोड़ी गई। 11 पाँच से बनी पहली
कनात को अन्तिम कनात के सिरे के साथ लुप्पी बनाने के लिए
उन्होंने नीले कपड़े का उपयोग किया। उन्होंने वही काम दूसरी पाँच
से कबनी अन्य कनातों के साथ भी किया। 12 एक में पचास छेद थे
और दूसरी में भी पचास छेद थे। छेद एक दूसरे के आमने—सामने
थे। 13 तब उन्होंने पचास सोने के छल्ले बनाए। उन्होंने इन छल्लों का
उपयोग दोनों कनातों को जोड़ने के लिए किया। इस प्रकार पूरा
तम्बू एक ही कपड़े में जुड़कर एक हो गया।

14 तब कारीगरों ने बकरी के बालों का उपयोग तम्बू को ढकने
वाली ग्यारह कनातों को बनाने के लिए किया। 15 सभी ग्यारह
कनातें एक ही माप की थी। वे पन्द्रह गज लम्बी और दो गज
चौड़ी थीं। 16 कारीगरों ने पाँच कनातों को एक में सीआ, और तब
छः को एक दूसरे में एक साथ सीआ। 17 उन्होंने पहले समूह की
अन्तिम कनात के सिरे में पचास लुप्पियाँ बनाई। और दूसरे समूह
की अन्तिम कनात के सिरे में पचास। 18 कारीगरों ने दोनों को एक
में मीलाने के लिए पचास काँसे के छल्ले बनाए। 19 तब उन्होंने तम्बू
के दो और आच्छादन बनाए। एक आच्छादन लाल रंगे हुए मेढ़े की
खाल से बनाया गया। दूसरा आच्छादन सुइसों के चमड़ें का बनाया
गया।

20 तब बसलेल ने बबूल की लकड़ी के तख़्ते बनाए। 21 हर एक
तख्ता पन्द्रह फीट लम्बा और सत्ताइस इंच चौड़ा बनाया। 22 हर एक
तख्ते के तल में अगल—बगल दो चूले थी। इनका उपयोग तख्तों
को जोड़ने के लिए किया जाता था। पवित्र तम्बू के लिए हर एक
तख़्ता इसी प्रकार का था। 23 बसलेल ने तम्बू के दक्षिण भाग के
लिए बीस तख्ते बनाए। 24 तब उसने चालीस चाँदी के आधार बनाए
जो बीस तख़्तों के नीचे लगे। हर एक तख़्ते के दो आधार थे अर्थात्
हर तख़्ते की हर “चूल” के लिए एक। 25 उसने बीस तख़्ते तम्बू की
दूसरी ओर (उत्तर) की तरफ़ के भी बनाए। 26 उसने हर एक तख़्ते के

नीचे दो लगने वाले चाँदी के चालीस आधार बनाए। 27 उसने तम्बू
के पिछले भाग (पश्चिमी ओर) के लिए छः तख़्ते बनाए। 28 उसने
तम्बू के पिछले भाग के कोनों के लिये दो तख़्ते बनाए। 29 ये तख़्ते
तले में एक दूसरे से जोड़े गए थे, और ऐसे छल्लों में लगे थे जो उन्हें
जोड़ते थे। उसने प्रत्येक सिरे के लिये ऐसा किया। 30 इस प्रकार वहाँ
आठ तख़्ते थे, और हर एक तख़्ते के लिए दो आधार के हिसाब से
सोलह चाँदी के आधार थे।

31 तब उसने तम्बू के पहली बाजू के लिये पाँच, 32 और तम्बू की
दूसरी बाजू के लिये पाँच तथा तम्बू के पिछली (पश्चिमी) ओर के
लिये पाँच कीकर की कड़ियाँ बनाईं। 33 उसमें बीच की कड़ियाँ
ऐसी बनाई जो तख्तों में से एक दूसरे से होकर एक दूसरे तक जाती
थीं। 34 उसने इन तख़्तों को सोने से मढ़ा। उसने कड़ीयों को भी सोने
से मढ़ा और उसने कड़ीयों को पकड़े रखने के लिये सोने के छल्ले
बनाएं।

35 तब उसने सर्वाधिक पवित्र स्थान के द्वार के लिये पर्दे बनाए।
उसने सन के उत्तम रेशों और नीले लाल तथा बैगनी कपड़े का
उपयोग किया। उसने सन के उत्तम रेशों में करूबों का चित्र काढ़ा।
36 उसने बबूल की लकड़ी के चार खम्भे बनाए और उन्हें सोने से
मढ़ा। तब उसने खम्भों के लिये सोने के छल्ले बनाए और उसने खम्भों
के लिये चार चाँदी के आधार बनाए। 37 तब उसने तम्बू के द्वार के
लिये पर्दा बनाया। उसने नीले, बैंगनी और लाल कपड़े तथा सन के
उत्तम रेशों का उपयोग किया। उसने कपड़े में चित्र काढ़े। 38 तब
उसने इस पर्दे के लिये पाँच खम्भे और उनके लिये छल्ले बनाए। उसने
खम्भों के सिरों और पर्दे की छड़ों को सोने से मढ़ा, और उसने काँसे
के पाँच आधार खम्भों के लिए बनाए।

37

साक्षीपत्र का सन्दूक

1 बसलेल ने बबूल की लकड़ी का पवित्र सन्दूक बनाया। सन्दूक
पैतालिस इंच लम्बा, सत्ताईस इंच चौड़ा और सत्ताईस इंच ऊँचा
था। 2 उसने सन्दूक के भीतरी और बाहर भाग को शुद्ध सोने से मढ़
दिया। तब उसने सोने की पट्टी सन्दूक के चारों ओर लगाई। 3 फिर
उसने सोने के चार कड़े बनाए और उन्हें नीचे के चारों कोनों पर
लगाया। ये कड़े सन्दूक को ले जाने के लिए उपयोग में आते थे।
दोनों तरफ दो—दो कड़े थे। 4 तब उसने सन्दूक ले चलने के लिये
बल्लियों को बनाया। बल्लियों के लिये उसने बबूल की लकड़ी का
उपयोग किया और बल्लियों को शुद्ध सोने से मढ़ा। 5 उसने सन्दूक
के हर एक सिरे पर बने कड़ों में बल्लियों को डाला। 6 तब उसने
शुद्ध सोने से ढक्कन को बनाया। ये ढाई हाथ लम्बा तथा डेढ़ हाथ
चौड़ा था। 7 तब बसलेल ने सोने को पीट कर दो करूब बनाए।
उसने ढक्कन के दोनों छोरो पर करूब लगाये। 8 उसने एक करूब
को एक ओर तथा दूसरे को दूसरी ओर लगाया। करूब को ढक्कन
से एक बनाने के लिये जोड़ दिया गया। 9 करूबों के पंख आकाश
की ओर उठा दिए गए। करूबों ने सन्दूक को अपने पंखों से ढक
लिया। करूबों एक दूसरे के सामने ढक्कन को देख रहे थे।

विशेष मेज

10 तब बसलेल ने बबूल की लकड़ी की मेज बनाई। मेज़ छत्तीस
इंच लम्बी, अट्ठारह इंच चौड़ी और सत्ताईस इंच ऊँची थी। 11 उसने
मेज को शुद्ध सोने से मढ़ा। उसने सोने की सजावट मेज के चारों
ओर की। 12 तब उसने मेज के चारों ओर एक किनारे बनायी। यह
किनारे लगभग तीन इंच* चौड़ी थी। उसने किनारे पर सोने की
झालर लगाई। 13 तब उसने मेज के लिये चार सोने के कड़े बनाए।
उसने नीचे के चारों कोनों पर सोने के चार कड़े लगाए। ये वहीं—
वहीं थे जहाँ चार पैर थे। 14 कड़े किनारी के समीप थे। कड़ों में वे
बल्लियाँ थीं जो मेज को ले जाने में काम आती थीं। 15 तब उसने मेज

* **37:12:** तीन इंच शाब्दिक, “एक हथेली” एक व्यक्ति के हाथ की चौड़ाई।

को ले जाने के लिये बल्लियाँ बनाईं। बल्लियों के लिये उसने बबूल
की लकड़ी का उपयोग किया और उन को शुद्ध सोने से मढ़ा।
16 तब उसने उन चीज़ों को बनाया जो मेज पर काम आती थीं।
उसने तश्तरी, चम्मच, परात और पेय भेंटों के लिये उपयोग में आने
वाले घड़े बनाए। ये सभी चीज़ें शुद्ध सोने से बनाई गईं थीं।

दीपाधार

17 तब उसने दीपाधार बनाया। इसके लिये उसने शुद्ध सोने का
उपयोग किया और उसे पीट कर आधार तथा उसके डंडे को
बनाया। तब उसने फूलों के समान दिखने वाले प्याले बनाए। प्यालों
के साथ कलियाँ और खिले हुए पुष्प थे। हर एक चीज़ शुद्ध सोने
की बनी थी। ये सभी चीजें एक ही इकाई बनाने के रूप में परस्पर
जुड़ी थी। 18 दीपाधार के दोनों ओर छः शाखाएं थी। एक ओर तीन
शाखाएं थी तथा तीन शाखाएं दूसरी ओर। 19 हर एक शाखा पर
सोने के तीन फूल थे। ये फूल बादाम के फूल के आकार के बने
थे। उनमें कलियाँ और पंखुडियाँ थीं। 20 दीपाधार की डंडी पर सोने
के चार फूल थे। वे भी कली और पंखुडियों सहित बादाम के फूल
के आकार के बने थे। 21 छः शाखाएं दो—दो करके तीन भागों में
थीं। हर एक भाग की शाखाओं के नीचे एक कली थी। 22 ये सभी
कलियां, शाखाएं और दीपाधार शुद्ध सोने के बने थे। इस सारे सोने
को पीट कर एक ही में मिला दिया गया था। 23 उसने इस दीपाधार
के लिये सात दीपक बनाए तब उसने तश्तरियाँ और चिमटे बनाए।
हर एक वस्तु को शुद्ध सोने से बनाया। 24 उसने लगभग पचहत्तर
पौंड शुद्ध सोना दीपाधार और उसके उपकरणों को बनाने में लगाया।

धूप जलाने की वेदी

25 तब उसने धूप जलाने की एक वेदी बनाई। उसने इसे बबूल
की लकड़ी का बनाया। वेदी वर्गाकार थी। यह अट्ठारह इंच लम्बी,
अट्ठारह इंच चौड़ी और छत्तीस इंच ऊँची थी। वेदी पर चार सींग
बनाए गए थे। हर एक कोने पर एक सींग बना था। ये सींगे वेदी

के साथ एक इकाई बनाने के लिये जोड़ दिए गए थे। 26 उसने सिरे,
सभी बाजुओं और सींगो को शुद्ध सोने के पतरे से मढ़ा। तब उसने
वेदी के चारों ओर सोने की झालर लगाई। 27 उसने सोने के दो कड़े
वेदी के लिये बनाए। उसने सोने के कड़ों को वेदी के हर ओर की
झालर से नीचे रखा। इन कड़ों में वेदी के हर ओर की झालर से नीचे
रखा। इन कड़ों में वेदी को ले जाने के लिये बल्लियाँ डाली जाती थीं।
28 तब उसने बबूल की लकड़ी की बल्लियाँ बनाईं और उन्हें सोने से
मढ़ा।

29 तब उसने अभिषेक का पवित्र तेल बनाया। उसने शुद्ध
सुगन्धित धूप भी बनाई। ये चीज़ें उसी प्रकार बनाई गई जिस प्रकार
कोई निपुण बनाता हैं।

38

होमबलि की वेदी

1 तब उसने होमबलि की वेदी बनाई। यह वेदी होमबलि के लिये
उपयोग में आने वाली थी। उसने बबूल की लकड़ी से इसे बनाया।
वेदी वर्गाकार थी। यह साढ़े सात फुट लम्बी, साढ़े सात फुट चौड़ी
और साढ़े सात फुट ऊँची थी। 2 उसने हर एक कोने पर एक सींग
बनाये। उसने सींगों को वेदी के साथे जोड़ दिया। तब उसने हर चीज़
को काँसे से ढक लिया। 3 तब उसने वेदी पर उपयोग में आने वाले
सभी उपकरणों को बनाया। उसने इन चीज़ों को काँसे से ही बनाया।
उसने पात्र, बेलचे, कटोरे, माँस के लिए काँटे, और कढ़ाहियाँ बनाईं।
4 तब उसने वेदी के लिये एक जाली बनायी। यह जाली काँसे की
जाली की तरह थी। जाली को वेदी के पायदान से लगाया। यह वेदी
के भीतर लगभग मध्य में था। 5 तब उसने काँसे के कड़े बनाए। ये
कड़े वेदी को ले जाने के लिये बल्लियों को फँसाने के काम आते थे।
उसने पर्दे के चारों कोनों पर कड़ों को लगाया। 6 तब उसने बबूल की
लकड़ी की बल्लियाँ बनाईं और उन्हें काँसे से मढ़ा। 7 उसने बल्लियाँ
को कड़ों में डाला। बल्लियाँ वेदी की बगल में थीं। वे वेदी को ले

जाने के काम आती थीं। उसने वेदी को बनाने के लिये बबूल के तख़्तों का उपयोग किया। वेदी भीतर खाली थी, एक खाली सन्दूक की तरह।

8 उसने हाथ धोने के बड़े पात्र तथा उसके आधार को उस काँसे से बनाया जिसे पवित्र तम्बू के प्रवेश द्वार पर सेवा करने वाली स्त्रियों द्वारा दर्पण के रूप में काम में लाया जाता था।

पवित्र तम्बू के चारों ओर का आँगन

9 तब उसने आँगन के चारों ओर पर्दे की दीवार बनाई। दक्षिण की
ओर के पर्दे की दीवार पचास गज लम्बी थी। ये पर्दे सन के उत्तम
रेशों के बने थे। 10 दक्षिणी ओर के पर्दों को बीस खम्भों पर सहारा
दिया गया था। ये खम्भे काँसे के बीस आधारों पर थे। खम्भों और
बल्लियों के लिये छल्ले चाँदी के बने थे। 11 उत्तरी तरफ़ का आँगन भी
पचास गज लम्बा था और उसमें बीस खम्भे बीस काँसे के आधारों
के साथ थे। खम्भों और बल्लियों के लिये छल्ले चाँदी के बने थे।

12 आँगन के पश्चिमी तरफ़ के पर्दे पच्चीस गज लम्बे थे। वहाँ दस खम्भे और दस आधार थे। खम्भों के लिये छल्ले तथा कुँड़े चाँदी के बनाए गए थे।

13 आँगन की पूर्वी दीवार पच्चीस गज चौड़ी थी। आँगन का प्रवेश
द्वार इसी ओर था। 14 प्रवेश द्वार के एक तरफ़ पर्दे की दीवार साढ़े
सात गज लम्बी थी। इस तरफ़ तीन खम्भे और तीन आधार थे।
15 प्रवेश द्वार के दूसरी तरफ़ पर्दे की दीवार की लम्बाई भी साढ़े
सात गज़ थीं। वहाँ भी तीन खम्भे और तीन आधार थे। 16 आँगन
के चारों ओर की कनाते सन के उत्तम रेशों की बनी थीं। 17 खम्भों
के आधार काँसे के बने थे। छल्लों और कनातों की छड़े चाँदी की
बनी थीं। खम्भों के सिरे भी चाँदी से मढ़े थे। आँगन के सभी खम्भे
कनात की चाँदी की छड़ों से जुड़े थे।

18 आँगन के प्रवेश द्वार की कनात सन के उत्तम रेशों और नीले,
लाल तथा बैंगनी कपड़े की बनी थी। इस पर कढ़ाई कढ़ी हुई थी।

कनात दस गज लम्बी और ढाई गज* ऊँची थी। ये उसी ऊँचाई की
थी जिस ऊँचाई की आँगन की चारों ओर की कनातें थीं। 19 कनात
चार खम्भों और चार काँसे के आधारों पर खड़ी थी। खम्भों के छल्ले
चाँदी के बने थे। खम्भों के सिरे चाँदी से मढ़े थे और पर्दे की छड़े
भी चाँदी की बनी थी। 20 पवित्र तम्बू और आँगन के चारों ओर की
कनातों की खूँटियाँ काँसे की बनी थी।

21 मूसा ने सभी लेवी लोगों को आदेश दिया कि वे तम्बू अर्थात्
साक्षीपत्र का तम्बू बनाने में काम आई हुई चीज़ों को लिख ले।
हारून का पुत्र ईतामार इस सूची को रखने का अधिकारी था।

22 यहूदा के परिवार समूह से हूर के पुत्र ऊरी के पुत्र बसलेल ने भी
सभी चीज़ें बनाईं जिनके लिये यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।
23 दान के परिवार समूह से अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब ने भी
उसे सहायता दी। ओहोलीआब एक निपुण कारीगर और शिल्पकार
था। वह सन के उत्तम रेशों और नीला, बैंगनी और लाल कपड़े बुनने
में निपुण था।

24 दो टन† से अधिक सोना पवित्र तम्बू के लिये यहोवा को भेंट
किया गया था। (यह मन्दिर के प्रामाणिक बाटों से तोला गया था।)

25 लोगों ने पौने चार टन‡ से अधिक चाँदी दी। (यह अधिकारिक
मन्दिर के बाट से तोली गयी थी।) 26 यह चाँदी उनके द्वारा कर वसूल
करने से आई। लेवी पुरुषों ने बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के
लोगों की गणना की। छः लाख तीन हज़ार पाँच सौ पचास लोग थे
और हर एक पुरुष को एक बेका§ चाँदी कर के रूप में देनी थी।
(मन्दिर के अधिकारिक बाट के अनुसार एक बेका आधा शेकेल
होता था।) 27 पौने चार टन चाँदी का उपयोग पवित्र तम्बू के सौ
आधारों और कनातों को बनाने में हुआ था। उन्होंने पचहत्तर पौंड

---

* **38:18:** ढ़ाई गज शाब्दिक, "पाँच हाथ।" † **38:24:** दो टन शाब्दिक, "उनतीस किक्कार और सात सौ शेकेल।" ‡ **38:25:** पौने चार टन शाब्दिक, "सौ किक्कर और 1,775 शेकेल।" § **38:26:** एक बेका या "1/5 औंस।"

चाँदी हर एक आधार में लगायी। 28 अन्य पचास पौंड़** चाँदी का
उपयोग खूँटियों कनातों की छड़ों और खम्भों के सिरों को बनाने में
हुआ था।

29 साढ़े छब्बीस टन†† से अधिक काँसा यहोवा को भेंट चढ़ाया
गया। 30 उस काँसे का उपयोग मिलापवाले तम्बू के प्रवेश द्वार के
आधारों को बनाने में हुआ। उन्होंने काँसे का उपयोग वेदी और
काँसे की जाली बनाने में भी किया और वह काँसा, सभी उपकरण
और वेदी की तश्तरियों को बनाने के काम में आया। 31 इसका
उपयोग आँगन के चारों ओर की कनातों के आधारों और प्रवेश द्वार
की कनातों के आधारों के लिए भी हुआ। और काँसे का उपयोग
तम्बू के लिये खूँटियों को बनाने और आँगन के चारों ओर की
कनातों के लिए हुआ।

39

मिस्र तर्फ पलायन

1 कारीगरों ने नीले, लाल और बैंगनी कपड़ों के विशेष वस्त्र
याजकों के लिए बनाए जिन्हें वे पवित्र स्थान में सेवा के समय
पहनेंगे। उन्होंने हारून के लिए भी वैसे ही विशेष वस्त्र बनाये जैसा
यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

एपोद

2 उन्होंने एपोद सन के उत्तम रेशों और नीले, लाल और बैंगनी
कपड़े से बनाया। 3 (उन्होंने सोने को बारीक पट्टियों के रूप में पीटा
और तब उन्होंने उसे लम्बे धागो के रूप में काटा। उन्होंने सोने
को नीले, बैंगनी, लाल कपड़ों और सन के उत्तम रेशों में बुना। इसे
निपुणता के साथ किया गया।) 4 उन्होंने एपोद के कंधों की पट्टियाँ
बनाई। और कंधे की इन पट्टियों को एपोद के कंधे पर टाँका।
5 पटुका उसी प्रकार बनाया गया था। यह एपोद से एक ही इकाई

** **38:28:** पचास पौंड शाब्दिक, "1,775 शेकेल।" †† **38:29:** साढ़े छब्बीस टन शाब्दिक, "सत्तर किक्कर और दो हजार चार सौ शेकेल।"

के रूप मे जोड़ दिया गया। यह सोने के तार, सन के उत्तम रेशों,
नीला, लाल और बैंगनी कपड़े से वैसा ही बना जैसा यहोवा ने मूसा
को आदेश दिया था।
6 कारीगरों ने रत्नों को सोने को पट्टी में जड़ा। उन्होंने इस्राएल
के पुत्रों के नाम रत्नों पर लिखे। 7 तब उन्होंने रत्नों को एपोद के
कंधें के पेबन्द पर लगाया। हर एक रत्न इस्राएल के बारह पुत्रों में
से एक—एक का प्रतिनिधित्व करता था। यह वैसा ही किया गया
जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

सीनाबन्द

8 तब उन्होंने सीनाबन्द बनाया। यह वही निपुणता के साथ बनाया
गया था। सीनाबन्द एपोद की तरह बनाया गया था। यह सोने के
तार, सन के उत्तम रेशों, नीला, लाल और बैंगनी कपड़े का बनाया
गया था। 9 सीनाबन्द वर्गाकार दोहरा तह किया हुआ था। यह नौ
इंच लम्बा और नौ इंच चौड़ा था। 10 तब कारीगर ने इस पर सुन्दर
रत्नों की पक्तियाँ जड़ीं। पहली पंक्ति में एक लाल, एक पुखराज और
एक मर्कतमणि थी। 11 दूसरी पंक्ति में एक फिरोज़ा, एक नीलम तथा
एक पन्ना था। 12 तीसरी पंक्ति में एक धूम्रकान्त, अकीक और एक
याकूत था। 13 चौथी पंक्ति में एक लहसुनिया, एक गोमेदक मणि,
और एक कपिश मणि थी। ये सभी रत्न सोने में जड़े थे। 14 इन बारह
रत्नों पर इस्राएल के पुत्रों के नाम उसी प्रकार लिखे गये थे जिस
प्रराक एक कारीगर मुहर पर खोदता है। हर एक रत्न पर इस्राएल
के बारह पुत्रों में से एक—एक का नाम था।
15 सीनाबन्द के लिए शुद्ध सोने की एक जंजीर बनाई गई। ये
रस्सी की तरह बटी थी। 16 कारीगरों ने सोने की दो पट्टियों और
दो सोने के छल्ले बनाए। उन्होंने दोनों छल्लों को सीनाबन्द के ऊपरी
कोनों पर लगाया। 17 तब उन्होंने दोनों सोने की जंजीरों को दोनों
छल्लों में बाँधा। 18 उन्होंने सोने की जंजीरों के दूसरी सिरों को दोनों
पट्टियों से बाँधा। तब उन्होंने एपोद के दोनों कंधों से सामने की

ओर उन्हें फँसाया। 19 तब उन्होंने दो और सोने के छल्ले बनाए और
सीनाबन्द के निचले कोनों पर उन्हें लगाया। उन्होंने छल्लों को चोगे
के समीप अन्दर लगाया। 20 उन्होंने सामने की ओर कंधे की पट्टी के
तले में सोने के दो छल्ले लगाए। ये छल्ले बटनों के समीप ठीक पटुके
के ऊपर थे। 21 तब उन्होंने एक नीली पट्टी का उपयोग किया और
सीनाबन्द के छल्लों को एपोद छल्लों से बाँधा। इस प्रकार सीनाबन्द
पेटी के समीप लगा रहा। यह गिर नहीं सकता था। उन्होंने यह सब
चीज़ें यहोवा के आदेश के अनुसार कीं।

याजक के अन्य वस्त्र

22 तब उन्होंने एपोद के नीचे का चोगा बनाया। उन्होंने इसे नीले
कपड़े से बनाया। यह एक निपुण व्यक्ति का काम था। 23 चोग़े के
बीचोंबीच एक छेद था। इस छेद के चारों ओर कपड़े की गोट लगी
थी। यह गोट छेद को फटने से बचाती थी। 24 तब उन्होंने सन के
उत्तम रेशों, नीले, लाल और बैंगनी कपड़े से फूँदने बनाए जे अनार
के आकार के नीचे लटके थे। उन्होंने इन अनारों को चोग़े के नीचे
के सिरे पर चारों ओर बाँधा। 25 तब उन्होंने शुद्ध सोने की घंटियाँ
बनाई। उन्होंने अनारों के बीच में चोगे के नीचे के सिरे के चारों
ओर इन्हें बाँधा। 26 लबादे के नीचे के सिरे के चारो ओर अनार
और घंटियाँ थी। हर एक अनारों के मध्य घंटी थी। याजक उस
चोगे को तब पहनता था जब वह यहोवा की सेवा करता था, जैसा
यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

27 कारीगरों ने हारून ओर उसके पुत्रों के लिये लबादे बनाए। ये
लबादे सन के उत्तम रेशों के थे। 28 और कारीगरों के सन के उत्तम
रेशों के साफ़े बनाए। उन्होंने सिर की पगड़ियाँ और अधोवस्त्र भी
बनाए। उन्होंने इन चीज़ों को सन के उत्तम रेशों का बनाया। 29 तब
उन्होंने पटुके को सन के उत्तम रेशों, नीले, बैंगनी और लाल कपड़े
से बनाया। कपड़े में काढ़ने काढ़े गये। ये चीज़ें वैसी ही बनाई गई
जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

30 तब उन्होंने सिर पर बाँधने के लिये सोने का पतरा बनाया।
उन्होंने सोने पर ये शब्द लिखे: यहोवा के लिए पवित्र। 31 तब उन्होंने
पतरे से एक नीली पट्टी बाँधी और उसे पगड़ी पर इस प्रकार बाँधा
जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

याजक के अन्य वस्त्र

32 इस प्रकार मिलापवाले तम्बू का सारा काम पूरा हो गया।
इस्राएल के लोगों ने हर चीज़ ठीक वैसी ही बनाई जैसा यहोवा ने
मूसा को आदेश दिया था। 33 तब उन्होंने मिलापवाला तम्बू मूसा
को दिखाया। उन्होंने उसे तम्बू और उसमें की सभी चीज़ें दिखाईं।
उन्होंने उसे छल्ले, तख्ते, छड़ें खम्भे तथा आधार दिखाए। 34 उन्होंने
उसे तम्बू का आच्छादन दिखाया जो लाल रंगी हुई भेड़ की खाल
का बना था और उन्होंने वह आच्छादन दिखाया जो सुइसों के
चमड़े का बना था और उन्होंने वह कनात दिखाई जो प्रवेश द्वार से
सब से अधिक पवित्र स्थान को ढकती थी।
35 उन्होंने मूसा को साक्षीपत्र का सन्दूक दिखाया। उन्होंने सन्दूक
को ले जाने वाली बल्लियाँ तथा सन्दूक को ढकने वाले ढक्कन को
दिखाया। 36 उन्होंने विशेष रोटी की मेज़ तथा उस पर रहने वाली
सभी चीज़े और साथ में विशेष रोटी मूसा को दिखायी। 37 उन्होंने
मूसा को शुद्ध सोने का दीपाधार और उस पर रखे हुए दीपकों
को दिखाया। उन्होंने तेल और अन्य सभी चीज़ें मूसा को दिखाई,
जिनका उपयोग दीपकों के साथ होता था। 38 उन्होंने उसे सोने की
वेदी, अभिषेक का तेल, सुगन्धित धूप और तम्बू के प्रवेश द्वार को
ढकने वाली कनात को दिखाया। 39 उन्होंने काँसे की वेदी और
काँसे की जाली को दिखाया। उन्होंने वेदी को ले जाने के लिये
बनी बल्लियों को भी मूसा को दिखाया। और उन्होंने उन सभी चीज़ों
को दिखाया जो वेदी पर काम मे आती थी। उन्होंने चिलमची और
उसके नीचे का आधार दिखाया।
40 उन्होंने आँगन के चारों ओर की कनातों को, खम्भों और
आधारों के साथ मूसा को दिखाया। उन्होंने उसको उस कनात को

दिखाया जो आँगन के प्रवेशद्वार को ढके थी। उन्होंने उसे रस्सियाँ और काँसे की तम्बू वाली खूँटियाँ दिखाईं। उन्होंने मिलापवाले तम्बू में उसे सभी चीज़ें दिखाईं।

41 तब उन्होंने मूसा को पवित्र स्थान में सेवा करने वाले याजकों के लिये बने वस्त्रों को दिखाया। वे उन वस्त्रों को तब पहनते थे जब वे याजक के रूप में सेवा करते थे।

42 यहोवा ने मूसा को जैसा आदेश दिया था इस्राएल के लोगों ने
ठीक सभी काम उसी तरह किया। 43 मूसा ने सभी कामों को ध्यान
से देखा। मूसा ने देखा कि सब काम ठीक उसी प्रकार हुआ जैसा यहोवा ने आदेश दिया था। इसलिए मूसा ने उनको आशीर्वाद दिया।

40

मूसा द्वारा पवित्र तम्बू की स्थापना

1 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 2 “पहले महीने के पहले दिन पवित्र
तम्बू जो मिलाप वाला तम्बू है खड़ा करो। 3 साक्षीपत्र के सन्दूक को
मिलापवाले तम्बू में रखो। सन्दूक को पर्दे से ढक दो। 4 तब विशेष
रोटी की मेज को अन्दर लाओ। जो सामान मेज पर होने चाहिए उन्हें उस पर रखो। तब दीपाधार को तम्बू में रखो। दीपाधार पर दीपकों
को ठीक स्थानों पर रखो। 5 सोने की वेदी को, धूप की भेंट के लिये
तम्बू में रखो। वेदी को साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने रखो। तब कनात को पवित्र तम्बू के प्रवेश द्वार पर लगाओ।

6 “होमबलि की वेदी को मिलापवाले तम्बू की पवित्र तम्बू के
प्रवेशद्वार पर रखो। 7 चिलमची को वेदी और मिलापवाले तम्बू के
बीच मे रखो। चिलमची में पानी भरो। 8 आँगन के चारों ओर कनाते
लगाओ। तब आँगन के प्रवेशद्वार पर कनात लगाओ।

9 “अभिषेक के तेल को डालकर पवित्र तम्बू और इसमें की हर एक चीज़ का अभिषेक करो। जब तुम इन चीज़ों पर तेल डालोगे

तो तुम इन्हें पवित्र बनाओगे।* 10 होमबलि की वेदी का अभिषेक
करो। वेदी की हर एक चीज़ का अभिषेक करो। तुम वेदी को पवित्र
करोगे। यह अत्यधिक पवित्र होगी। 11 तब चिलमची और उसके
नीचे के आधार का अभिषेक करो। ऐसा उन चीज़ों के पवित्र करने
के लिये करो।

12 "हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के प्रवेशद्वार
पर लाओ। उन्हें पानी से नहलाओ। 13 तब हारून को विशेष वस्त्र
पहनाओ। तेल से उसका अभिषेक करो और उसे पवित्र करो। तब
वह याजक के रूप में मेरी सेवा कर सकता है। 14 तब उसके पुत्रों
को वस्त्र पहनाओ। 15 पुत्रों का अभिषेक वैसे ही करो जैसे उनके
पिता का अभिषेक किया। तब वे भी मेरी सेवा याजक के रूप में
कर सकते हैं। जब तुम अभिषेक करोगे, वे याजक हो जाएंगे। वह
परिवार भविष्य में भी सदा के लिये याजक बना रहेगा।" 16 मूसा
ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने वह सब किया जिसका यहोवा ने
आदेश दिया था।

17 इस प्रकार ठीक समय पर पवित्र तम्बू खड़ा किया गया।
यह मिस्र छोड़ने के बाद के दूसरे वर्ष में पहले महीने का पहला
दिन था। 18 मूसा ने पवित्र तम्बू को यहोवा के कथानानुसार खड़ा
किया। पहले उसने आधारों को रखा। तब उसने आधारों पर तख़्तों
को रखा। फिर उसने बल्लियाँ लगाईं और खम्भों को खड़ा किया।
19 उसके बाद मूसा ने पवित्र तम्बू के ऊपर आच्छादन रखा। इसके
बाद उसने तम्बू के आच्छादन पर दूसरा आच्छादन रखा। उसने
यह यहोवा के आदेश के अनुसार किया।

20 मूसा ने साक्षीपत्र के उन पत्थरों को जिन पर यहोवा के आदेश
लिखे थे, सन्दूक में रखा। मूसा ने बल्लियों को सन्दूक के छल्लों में
लगाया। तब उसने ढक्कन को सन्दूक के ऊपर रखा। 21 तब मूसा
सन्दूक को पवित्र तम्बू के भीतर लाया। और उसने पर्दे को ठीक
स्थान पर लटकाया। उसने पवित्र तम्बू में साक्षीपत्र के सन्दूक को

* **40:9:** पवित्र बनाओगे या "दिखाओ कि वे विशेष उद्देश्य के लिए दूसरों से अलग हैं।"

ढक दिया। मूसा ने ये चीज़ें यहोवा के आदेश के अनुसार कीं। 22 तब
मूसा ने विशेष रोटी की मेज को मिलापवाले तम्बू में रखा। उसने
इसे पवित्र तम्बू के उत्तर की ओर रखा। उसने इसे पर्दे के सामने
रखा। 23 तब उसने यहोवा के सामने मेज पर रोटी रखी। उसने यह
यहोवा ने जैसा आदेश दिया था, वैसा ही किया। 24 तब मूसा ने
दीपाधार को मिलापवाले तम्बू में रखा। उसने दीपाधार को पवित्र
तम्बू के दक्षिण ओर मेज के पार रखा। 25 तब यहोवा के सामने
मूसा ने दीपाधार पर दीपक रखे। उसने यह यहोवा के आदेश के
अनुसार किया।

26 तब मूसा ने सोने की वेदी को मिलापवाले तम्बू में रखा। उसने
सोने की वेदी को पर्दे के सामने रखा। 27 तब उसने सोने की वेदी
पर सुगन्धित धूप जलाई। उसने यह यहोवा के आदेशानुसार किया।
28 तब मूसा ने पवित्र तम्बू के प्रवेश द्वार पर कनात लगाई।

29 मूसा ने होमबलि वाली वेदी को, मिलापवाले तम्बू के
प्रवेशद्वार पर रखा। तब मूसा ने एक होमबलि उस वेदी पर चढ़ाई।
उसने अन्नबलि भी यहोवा को चढ़ाई। उसने ये चीज़ें यहोवा के
आदेशानुसार कीं।

30 तब मूसा ने मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच चिलमची
को रखा। और उसमे धोने के लिये पानी भरा। 31 मूसा, हारून और
हारून के पुत्रों ने अपने हाथ और पैर धोने के लिए इस चिलमची
का उपयोग किया। 32 वे हर बार जब मिलापवाले तम्बू में जाते तो
अपने हाथ और पैर धोते थे। जब वे वेदी के निकट जाते थे तब भी
वे हाथ और पैर धोते थे। वे इसे वैसे ही करते थे जैसा यहोवा ने
मूसा को आदेश दिया था।

33 तब मूसा ने पवित्र तम्बू के आँगन के चारों ओर कनातें खड़ी
कीं। मूसा ने वेदी को आँगन में रखा। तब उसने आँगन के प्रवेश
द्वार पर कनात लगाई। इस प्रकार मूसा ने वे सभी काम पूरे कर लिए
जिन्हें करने का आदेश यहोवा ने दिया था।

यहोवा की महिमा

34 जब सभी चीज़ें पूरी हो गई, बादल ने मिलापवाले तम्बू को
ढक लिया। और यहोवा के तेज़ से पवित्र तम्बू भर गया। 35 बादल
मिलापवाले तम्बू पर उतर आया। और यहोवा के तेज ने पवित्र तम्बू
को भर दिया। इसलिए मूसा मिलापवाले तम्बू में नहीं घुस सका।
36 इस बादल ने लोगों को संकेत दिया कि उन्हें कब चलना है।
जब बादल तम्बू से उठता तो इस्राएल के लोग चलना आरम्भ कर
देते थे। 37 किन्तु जब बादल तम्बू पर ठहर जाता तो लोग चलने की
कोशिश नहीं करते थे। वे उसी स्थान पर ठहरे रहते थे, जब तक
बादल तम्बू से नहीं उठता था। 38 इसलिए दिन में यहोवा का बादल
तम्बू पर रहता था, और रात को बादल में आग होती थी। इसलिए
इस्राएल के सबी लोग यात्रा करते समय बादल को देख सकते थे।

पवित्र बाइबल
The Holy Bible, Easy Reading Version, in Hindi

copyright © 1992-2010 World Bible Translation Center

Language: हिंदी (Hindi)

Translation by: World Bible Translation Center

License Agreement for Bible Texts World Bible Translation Center Last Updated: September 21, 2006 Copyright © 2006 by World Bible Translation Center All rights reserved. These Scriptures: • Are copyrighted by World Bible Translation Center. • Are not public domain. • May not be altered or modified in any form. • May not be sold or offered for sale in any form. • May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space). • May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included. • May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read VersionTM in English) must appear at the end of each quotation. Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com. World Bible Translation Center P.O. Box 820648 Fort Worth, Texas 76182, USA Telephone: 1-817-595-1664 Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE E-mail: info@wbtc.com WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

2019-11-15

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 8 Sep 2021 from source files dated 18 Aug 2021

7f0fcd5b-bc85-55f6-933a-0de82e7ef275